विद्यापतिकृत-

# चिकित्साञ्जनम्


-अनुवादक तथा व्याख्याकार-
विद्यावाचस्पति-
डॉ० श्री उमारमण झा,एम०ए०,
पीएच०डी०,डी० लिट्
न्यायाचार्य, राष्ट्रपति सम्मानित
पूर्व प्राचार्य-राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
गोमती नगर, लखनऊ



प्रकाशन वर्ष-2010

प्रकाशक-सरस्वती शोध संस्थान
3,प्रीतिविहार,
सुरेन्द्र नगर,
चिनहट, लखनऊ-227105

मूल्यः 250.00

विद्यापतिकृत–

# चिकित्साञ्जनम् ।

अनुवादक तथा व्याख्याकार
विद्यावाचस्पति–
डा0 श्री उमारमण झा, एम0ए0, पीएच0डी0, डी0लिट्
न्यायाचार्य, राष्ट्रपति सम्मानित
पूर्व प्राचार्य–राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
गोमती नगर, लखनऊ।

प्रकाशक–सरस्वती शोध संस्थान
3, प्रीतिविहार,
सुरेन्द्रनगर,
चिनहट, लखनऊ–227105

डॉ0 भीमनाथ झा
पूर्व प्राचार्य वि0वि0 मैथिली विभाग
ल0ना0 मिथिला, विश्वविद्यालय

फोन : 0671–158146
मोबाइल :– 9430817936
निवासः छपकी पङरी
दरभंगा (पंचायतभवन सँ दक्षिण)
लक्ष्मी सागर दरभंगा–846009
दिनांक :– 10.01.2008

# सोनमे सुगन्धि

विद्यापति मिथिलाक संस्कृतिक प्रतीक बनि चुकल छथि। एहन महापुरूषक व्यक्तित्वमे सम्पूर्ण समाज समटा जाइत छैक। ने जानि कतेक कवि अपन गीतस्वरकेँ कविकोकिलक काकलीमे समाहित कऽ देलनि, अनेको कविक गीत **"भनहि विद्यापति"** क अभिधान पाबि अमर भऽ गेलनि। विद्यापति चतुरस्र विद्वान् रहथि, संगहि व्यवहारज्ञान–निष्णात् रहथि–ई प्रमाणित भऽ चुकल अछि। जे व्यक्ति भू–परिक्रमा करा सकैत छथि, ज्ञानवर्धनार्थ नाना प्रकारक सरस खिस्सा सुना सकैत छथि, आचार–विचार बुझा सकैत छथि, पत्र लिखबाक लूरि सिखा सकैत छथि, कोन आश्चर्य जे ओ व्यक्ति समाजक स्वास्थ्यरक्षालेल घरैया नुस्खा आ जड़ीबूटीक उपयोगो सुझा गेल होथि! तेँ डाक्टर उमारमणझाजीकेँ जखन, जम्मूस्थित श्री रणवीर–अनुसन्धान पुस्तकालयमे विद्यापतिक नामसँ **"चिकित्साञ्जनम्"** क प्राचीन पाण्डुलिपि उपलब्ध भेलनि तेँ ई उचिते अति आह्लादित होइत तकरा हस्तगत कयलनि आ मैथिली–रूपान्तर कऽ देलनि। आब, जखन ई समाजक सोझाँ आबि गेल अछि, विद्वान्लोकनिक बीच बहसक एक बिन्दु भऽ सकैछ–ई विद्यापति के? मानि लेल जाय, ई आने ठामक होथि, तथापि एहन लोकोपयोगी ग्रन्थ लिखलनि, सहज रीतिएँ जड़ीबूटीसँ रोगक निदान सुझौलनि, से

कम महत्त्वक नहि थिक। मिथिलामे वैद्यक प्रथा बड्ड पुरान। प्रस्तुत पोथी मे जड़ीबूटीक नाम आ निदानविधि सभ जे आयल अछि, से अपना ओहिठाम बहुप्रचलित अछि। तेँ, सहज संभाव्य थिक जे ओ मिथिलेक छल होथि। जँ से तँ सोन। आ जँ ओ कविकोकिल छथि, ओ से किएक नहि भऽ सकैत छथि, तँ सोनमे सुगन्धि। तहिना, विद्वान् अनुवादक एहन सुन्दर ग्रन्थकेँ ताकि मैथिलीमे अनूदित कयलनि अछि, ताहि लेल धन्यवादार्ह थिकाह। मैथिल विद्यापतिक ग्रन्थक मैथिली अनुवाद भेल अछि तँ सोन। आ, जँ कविकोकिलक एक आर ग्रन्थक शोध भेल अछि आ तकरा मैथिलीक पाठकेँ सुलभ कराओल गेल अछि तँ एकरा सोनमे सुगन्धि कोना नहि कहब?

सामान्य जनकेँ जोगबऽबला आ विद्वज्जनक केँ जगबऽवला एहि सुन्दर कृतिक अन्वेषण एवं सरल मैथिली रूपान्तरणक हेतुएँ आदरणीय बन्धुवर डॉ0 श्री उमारमण झाजीक हार्दिक अभिनन्दन।

**डॉ0 भीमनाथ झा**

# विषय–सूची



## प्रथम अध्याय(96–115)

चिकित्साञ्जन मे वर्णित किछु प्रमुख रोग –

# द्वितीय अध्याय(116–146)

## चिकित्साञ्जन में प्रयुक्त किछु विशेष जड़ी–बूटी

| | | |
|---|---|---|
| (16) व्यवायी, | (17) विकासी, | (18) शुक्रल, |
| (19) रसायन, | (20) मदकारी, | (21) अभिष्यन्दी, |
| (22) विदाही, | (23) योगवाही, | (24) दारण, |
| (25) पीडन, | (26) लंघन, | (27) वयस्थापन, |
| (28) विम्लापन, | (29) पाचन, | (30) तर्पण, |
| (31) बृंहण, | (32)पुंस्त्वोपघाति, | (33) कफविलयन, |
| (34) श्लेष्मप्रसेकि, | (35) स्तन्यजनन, | (36) स्तन्यशोधन, |
| (37) बल्या, | (38) आर्तक्जनन, | (39) आविजनन, |
| (40) उत्तेजक | (41) प्रशमन, | (42) रक्षोध्न, |
| (43) छिक्काजनन, | (44) जीवनीय, | (45) दीपन, |
| (46) पाचन, | (47) हृद्य, | (48) वेदनास्थापन। |

## किछु द्रव्य गुण मूलक शब्द :–

| | |
|---|---|
| (क) द्रव्य–गुण | (ख) रस |
| (ग) अम्ल | (घ) लवण |
| (ङ) कटु | (च) तिक्त |
| (छ) कषाय | (ज) विपाक |
| (झ)दोष, धातु, मल, | (ञ) पञ्चमूल |
| (ट) अष्टवर्ग | (ठ) पञ्चवल्कल |
| (ड) चतुर्बीज.। | |

## मूलपाठ तथा अनुवाद :–

## चतुर्थ अध्याय

# आमुख

**अनन्तं परमानन्दं गुरुं सर्वार्थसाधकम्।**
**नत्वेदं लिख्यते सूक्ष्मं चिकित्साशास्त्रमुत्तमम्।।**
**विद्यापतेः ग्रन्थरत्नं चिकित्साञ्जनमद्भुतम्।**
**विविच्यते मया लब्ध्वा उमारमणशर्मणा।।**

विद्यापतिक लिखल आयुर्वेदशास्त्रक अप्रकाशित चिकित्साञ्जन क हस्तलिखित ग्रन्थ जम्मू नगरक **श्रीरणवीर अनुसन्धान पुस्तकालय** मे प्राप्त भेल। एहि सँ पूर्व एक अति खण्डित जीर्ण प्रति **उजान ग्राम** (दरभंगा) क **पं0 श्री पदुमदत्त झा** क घर में भेटल छल। अतएव दूनू क पाठ मिलाय संशोधित कए ओकर सम्पादन, अनुवाद तथा आयुर्वेदशास्त्रक अन्यान्य विवेचन एहि ग्रन्थ मे कएल गेल अछि।

प्राचीन कथाक अनुसार परब्रह्म परमेश्वर विभिन्न शास्त्रक निर्माण कएलन्हि। अथर्ववेदक सार कँ लए प्राणीक कष्ट हरबाक लेल, तथा प्राणी कँ दीर्घायु बनेबाक हेतु ओ आयुर्वेदशास्त्र रचलन्हि। सर्वप्रथम ओ दक्षप्रजापति कँ आयुर्वेदक उपदेश देल। दक्ष अश्विनीकुमार कँ आयुर्वेदक सविस्तर ज्ञान कराओल। अश्विनीकुमार 33 कोटि देवताक वैद्य छलाह ब्रह्माक मस्तक अश्विनीकुमारे जोड़ने छलाह। इन्द्रक भुजा क कष्टो वैह दूर कएने छलाह। चन्द्रमा कँ दुःख दूरकए सुखी कएने छलाह। अश्विनीकुमार सँ इन्द्र कँ एकर शिक्षा भेटल। पुनः अग्निवेश, भेल, जातुकर्ण्य, पराशर, क्षीरपाणि तथा हारीत आदि एकर शिक्षा ग्रहण कएल।

वस्तुतः आयु कँ ठीक राखब एहि शास्त्र क कार्य अछि। रोग सँ मनुष्य क शरीर दुर्बल, बलक क्षय, देहक चेष्टा क नाश, इन्द्रिय शक्तिक ह्रास, सर्वाङ्ग के पीडा, धर्म अर्थ, काम, मोक्ष मे बाधा तथा प्राण क नाश होइत अछि। यदि रोग रहत तँ सुख कथमपि संभव नहि[1]।

आयुर्वेद मे चरक, सुश्रुत तथा वाग्भट्ट विशेषरूप सँ प्रसिद्ध भेलाह –

**सुश्रुतो न श्रुतो येन वाग्भट्टो नैव वाग्भटः।**
**नाधीतश्चरको येन स वैद्यो यमकिङ्करः।।**

---

[1] रोगाः कार्श्यकराः बलक्षयकराः देहस्य चेष्टाहराः, दृष्ट्यादीन्द्रियशक्तिसंक्षयकरा सर्वाङ्गपीडाकराः। धर्मार्थाखिलकाममुक्तिषुमहाविध्नस्वरूपा बलात्, प्राणानाशु हरन्ति सन्ति यदि ते सौख्यं कुतः प्राणिनाम्।। वैद्य रत्नसमुच्चय श्लोक. 6

अर्थात् जे सुश्रुत नहि सुनलन्हि, वाग्भट्टी कैं नहि कंठस्थ कएलन्हि तथा चरक कैं नहि पढ़लन्हि ओ वैद्य नहि यमक दूत थिकाह। एतय संक्षिप्त रूप मे आयुर्वेदशास्त्रक परिचय दए रहल छी।

## आयुर्वेदक महत्त्व एवं प्राचीनता

अपन शरीर कैं स्वस्थ राखब मनुष्यक प्रथम कर्त्तव्य थिक।'' सर्वधर्मान् परित्यज्य शरीरमनुपालयेत्'' अर्थात् सब किछु त्यागि शरीरक रक्षाकरक चाही। चाणक्य सेहो लिखैत छथि –

**''आत्मानं सततं रक्षेद्दारैरपि धनैरपि।''** अर्थात् धन एवं स्त्री सँ शरीर क रक्षा करक चाही। चार्वाक दर्शन तँ **''शरीरमेव आत्मा''** मानैत अछि। विद्वान्क कहब ई एकदम ठीक अछि–

**धर्मार्थकाममोक्षाणां मूलयुक्तं कलेवरम्।**
**तच्चं सर्वार्थसंसिद्धयै भवेद्यदि निरामयम्।।**

अर्थात् शरीर यदि रोगरहित रहत तँ धर्म अर्थ काम मोक्ष सब कार्य सिद्धि भए सकैत अछि। अतएव ई शरीर चारू पुरूषार्थक मूलवस्तु थिक। **''शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्''** सेहो महाकवि क उक्ति ठीके अछि। शरीरकेँ ठीक रखबाक हेतु आयुर्वेदक ज्ञान आवश्यक अछि। आयुर्वेद सँ आयुक लेल हिताहित द्रव्यक ज्ञान, रोगक निदान तथा रोग कें दूर करबाक ज्ञान प्राप्त होइत अछि। कहलो गेल अछि–

**आयुर्हिताहितं व्याधेर्निदानं शमनं तथा।**
**विद्यते यत्र विद्वद्भिः स आयुर्वेद उच्यते।।**

पुनः कहल गेल अछि –

**अनेन पुरुषो यस्मादायुर्विन्दति वेत्ति च।**
**तस्मान्मुनिवरैरेष आयुर्वेद इति स्मृतः।।**

(भावप्रकाश)

अर्थात् एहि शास्त्र सँ मनुष्य के आयुक ज्ञान एवं प्राप्ति होइत अछि। एहि हेतु मुनि लोकनि एकर नाम आयुर्वेद रखलन्हि।

आयुर्वेद अनादि एवं अपौरुषेय अछि। चरक लिखैत छथि–

''सोऽयमायुर्वेदः शाश्वतो निर्दिश्यते,
अनादित्वात् स्वभाव–संसिद्ध–लक्षणत्वात्।''

सुश्रुत मे कहल गेल अछि जे आयुर्वेद शास्त्र कें ब्रह्मा विश्वसृजन सॅं पूर्वहि बनौने छलाह।

अनुत्पाद्यैव प्रजा आयुर्वेदमेवाऽग्रेसृजत्। काश्यप संहिता मे कहल गेल अछि जाहि प्रकार सॅं शिशुक उत्पत्ति सॅं पूर्वहि स्तन्यक उत्पत्ति होइत अछि तहिना सृष्टि सॅं पूर्वहि आयुर्वेदक रचना संभव अछि–

**बालस्योत्पत्तेः पूर्वं स्तन्योद्गमनमिव सृष्टेः**
**प्रथमतः आयुर्विज्ञानं स्वरतोऽपि संभवति।**

आयुर्वेद क उत्पत्तिक पश्चात् ब्रह्मा पार्थिवसृष्टि कए प्राणी सबकें विविध रोग सँ बचयबाक हेतु दक्ष प्रजापति कें सर्वप्रथम आयुर्वेदक उपदेश देलन्हि। फेर दक्ष प्रजापति अश्विनीकुमार कें आयुर्वेदक साङ्गोपांग ज्ञान एहि प्रकार सॅं कराओल कि अश्विनी कुमार अपन नाम पर एक संहिता क निर्माण कएल। ओहि संहिता कें देखि देवराज इन्द्र मुग्ध भए गेलाह एवं ओ स्वयं अश्विनीकुमार सँ आयुर्वेदक अध्ययन कएलन्हि। इन्द्र सॅं महर्षि आत्रेय, आत्रेय सॅं अग्निवेश, भेल, जातुकर्ण, पराशर, क्षीरपाणि तथा हारीत आयुर्वेदक शिक्षा ग्रहण कएल। ओ लोकनि आयुर्वेदशास्त्र मे पारंगत भए अपन–अपन नाम पर आयुर्वेदक रचना सेहो कएलन्हि। ओकर वाद चरक, सुश्रुत आदिक नाम अबैत अछि। पुनः वाग्भट्टक नाम अबैत अछि। पुनः अनेकानेक आयुर्वेदक मूर्द्धन्य एवं मर्मज्ञ विद्वान् भेलाह। मूर्च्छित लक्ष्मण के जीवनदान करैवला इएह शास्त्र थिक। समुद्र सॅं धन्वन्तरि निकलल छलाह से कथा तॅं प्राचीन कथा थिक। कालिदास क समय मे नवरत्न मे एक धन्वन्तरि सेहो छलाह –

**धन्वन्तरिः क्षपणक–अमरसिंह–शङ्कु–**
**वैतालभट्ट–घटकर्पर–कालिदासाः।**
**ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां**
**रत्नानि वै वररूचि र्नव विक्रमस्य।।**

अर्थात् राजा विक्रमादित्य क सभा मे नवरत्न मे धन्वन्तरि सेहो छलाह। ओना ऋग्वेद मे कहल गेल अछि जे वैद्य ब्राह्मण कें नाना प्रकारक औषधिक संग्रह करबाक चाही –

**यत्रौषधीनां समग्मत राजानः समिताविव।**
**विप्रः स उच्यते भिषग्रक्षोहामीवचातनः।।**

(ऋग्वेद 10.17.6)

यजुर्वेद, सामवेद, तथा अथर्ववेद मे सर्वत्र औषधि एवं चिकित्साक चर्चा अबैत अछि।

आयुर्वेद ऋग्वेदक उपवेद थिक। किछु विद्वान् क मत मे आयुर्वेद अथर्ववेद क उपवेद थिक। पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र, षडङ्ग, 4 वेद, एवं आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, एवं अर्थवेद ई 18 विद्या मानल गेल अछि।

## आयुर्वेद शास्त्रक प्रमुख आचार्य

### चरक –

आयुर्वेदक सबसँ प्रथम वैद्य यद्यपि धन्वन्तरि भेल छलाह, तथापि धन्वन्तरिक कोनो ग्रन्थ उपलब्ध नहि होइत अछि। प्रथमशताब्दी सँ पूर्वहि चरक भेल छलाह जनिक नाम पर '**चरकसंहिता**' ग्रन्थक आयुर्वेद मे पूर्ण प्रचार अछि। चरक संहिता में ज्ञान एवं नीतिक सेहो बात सब अछि।

चरक संहिता मे अग्निवेशक प्रश्न एवं पुनर्वसु आत्रेय क उत्तर बहुत ठाम भेटैत अछि। चरकसंहिता मे "**अग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृते**" ई बात प्रत्येक अध्यायक अन्त मे भेटैत अछि। अतएव किछु व्यक्तिक अनुसार अग्निवेश चरक क नाम थिक। कापिलबलि दृढ़बल लिखने छथि –

**अस्मिन् सप्तदशाध्यायाः कल्पाः सिद्धय एव च।**
**नासाद्यन्तेऽग्निवेशस्य तन्त्रे चरकसंस्कृते।।**
**तानेतान् कापिलबलिः शेषान् दृढ़बलोऽकरोत्।**
**तन्त्रस्यास्य महार्थस्य पूरणार्थं यथातथम्।।**

(चरक0 चि0 स्था0 अ0 30)

एकर अनुसार पुनर्वसु आत्रेयक उपदेश ग्रहण कए अग्निवेश ग्रन्थक रचना कएल एवं चरक ओहि मे प्रति संस्कार कए संहिताक रचना कएल। एहि ग्रन्थ मे चिकित्सा स्थान क 17 अध्याय, कल्पस्थान क 12 अध्याय, एवं

सिद्धिस्थानक 12 अध्याय अछि। पुनर्वसु आत्रेय, कृष्ण आत्रेय एवं भिक्षु आत्रेय ई तीन वैद्य प्राचीन काल मे भेल छलाह। अग्निवेश, जातुकर्ण, भेल, हारीत, पराशर एवं क्षीरपाणि नामक 6 शिष्यक गुरु पुनर्वसु आत्रेय छलाह। महाभारत मे कृष्णात्रेय क चिकित्साक उल्लेख शान्तिपर्व मे भेटैत अछि। दृढ़बल कैक ठाम चरक क लेल **''कृष्णात्रेय पुनर्वसु''** लिखने छथि। तक्षशिला विश्वविद्यालय मे भिक्षु आत्रेय छलाह जनिका सँ भगवान् बुद्धक चिकित्सक जीवक कुमार मृत्यु चिकित्साशास्त्रक अध्ययन कएने छलाह। चरकक प्रथम सूत्रक अनुसार ई स्पष्ट अछि जे अग्निवेशतन्त्र पूर्व मे छल। अग्निवेशतन्त्रक प्रतिसंस्कृत रूप **''चरकसंहिता''** थिक। **अंजननिदान''** नामक सेहो एक ग्रन्थ अग्निवेशक लिखल भेटैत अछि।

चरक शब्दक उल्लेख पाणिनि व्याकरण मे भेटैत अछि। मुदा किछु व्यक्तिक अनुसार महाभाष्यकार पतञ्जलि एवं चरक एक व्यक्ति छलाह। एक श्लोक एहि प्रकारक अछि –

**योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।**
**योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि।।**

अर्थात् पतञ्जलि योगसूत्र लिखि चित्तक शुद्धि, महाभाष्य लिखि पदक शुद्धि, वैद्यक ग्रन्थ लिखि शरीरक शुद्धि कएने छलाह।

चरक संहिताक काल लगभग प्रथम शतक मानल जाइत अछि।

## सुश्रुत

आयुर्वेदक दोसर प्रमुख ग्रन्थ सुश्रुतसंहिता अछि। एहि ग्रन्थक प्रतिसंस्कर्ता नागार्जुन मानल जाइत छथि। सुश्रुत विश्वामित्रक पुत्र छलाह। कात्ययन वार्तिक मे सुश्रुत क नाम आएल अछि अतएव किछु व्यक्ति कम सँ कम 5 शताब्दी ई0 पू0 सुश्रुत क समय मानैत छथि। प्रसिद्ध बौद्धाचार्य नागार्जुन सुश्रुत क प्रतिसंस्कर्ता छलाह सेहो किछु व्यक्ति मानैत छथि। नागार्जुन शातवाहन राजाक समकालीन, महाविद्वान्, तान्त्रिक, रसायनशास्त्र प्रवीण एवं वैद्यविद्यापारंगत छलाह।

पुनर्वसु आत्रेय सेहो विश्वामित्रक पुत्र सुश्रुतक समकालीन मानल जाइत छथि। दृढ़ बल नामक चिकित्सक तृतीय शतक में भेल छलाह जे चरकचिकित्सा लिखने छथि।

वृद्ध वाग्भट्ट पंचम शतक में भेल छलाह। दोसर वाग्भट्ट सेहो ओहि सँ किछु दिनक वाद भेल रहथि। नवम शताब्दी मे वृन्द नामक आयुर्वेदशास्त्रमर्मज्ञ भेल छलाह। 11म शताब्दी में चक्रपाणि नामक वैद्य भेलाह। 11म शताब्दी मे डल्हण नामक विद्वान् सेहो नीक आयुर्वेद चिकित्सक भेलाह। 13म शताब्दी में विजय रक्षित एवं श्रीकण्ठ भेलाह। 14म शतक मे वैद्यराट् शाङ्र्गधर भेल छलाह। 15म शतक में चरक संहिताक प्रसिद्ध टीकाकार शिवदास भेलाह। 16म शतक में भाव मिश्र भेलाह जनिक भाव प्रकाश आयुर्वेदशास्त्रक अद्वितीय ग्रन्थ अछि। लगभग 16म शतक में बंगसेन भेल छलाह। गुजरात में लगभग 13म शतक में शोढल नामक महान् चिकित्सक भेल छलाह जनिक **''गदनिग्रह''** ग्रन्थ प्रसिद्ध अछि। वैद्य कालिदासक ग्रन्थ वैद्य मनोरमा अछि। ई प्रायः 18म शतक मे भेल छलाह। मालवाक राजा भोज **''राज मार्तण्ड''** नामक ग्रन्थ लिखने छथि। 17म शतक में कतोभट्ट नामक विद्वान् **''निघण्ट संग्रह''** लिखलन्हि।

एकर अतिरिक्त आर कतेको वैद्यक ग्रन्थ सब पुस्तकालय सब में सुरक्षित अछि। हेमाद्रि नामक प्रसिद्ध आचार्य कामकौतूहल वैद्यकग्रन्थ लिखने छलाह। विद्यापति 17म शतक में **''चिकित्साञ्ज़न''** लिखलन्हि।

धन्वन्तरि निघण्टु सेहो आयुर्वेद शास्त्रक नीक ग्रन्थ अछि। धन्वन्तरिक विषय में एहि प्रकारक श्लोक भेटैत अछि –

**नमामि धन्वन्तरिमादिदेवं सुरासुरै वन्दितपादपद्मम्।**
**लोके जरारूग्भयमृत्युनाशं धातारमीशं विविधौषधीनाम्।।**

मदनपाल नामक राजा मदनविनोद नामक आयुर्वेद ग्रन्थ लिखने छलाह। ई हरिश्चन्द्रक पौत्र एवं सहजपालक पुत्र छलाह।

नरहरि पण्डित राजनिघण्टु लिखने छलाह। राजनिघण्टुक दोसर नाम अभिधान चूडामणि अछि। ई प्रायः काश्मीरी छलाह। चक्रपाणि द्रव्यगुण संग्रह लिखने छलाह। ई गौडदेशक राजवैद्य छलाह। एहि ग्रन्थ पर शिवदास टीका सेहो लिखने छथि –

कृतिर्मभैषाऽखिलतन्त्रतत्त्वविच्चिकित्साकान्नोपकरोति यद्यपि। तथापि नव्यान् भिषजोऽल्पदृश्वनः परान् राहस्रान् अनुकूलयिष्यति।

राज बल्लभ सेहो द्रव्यगुण संग्रह लिखने छथि। ई ग्रन्थ पाँच अध्याय मे विभक्त अछि। आयुर्वेदक किछु प्रमुख निघण्टु वेत्ता तथा द्रव्यगुणवेत्ता एहि प्रकारक छथि –

हलायुध, चन्द्रनन्द, भोजराज, वोपदेव, मुद्गल, शेषराज, कैयदेव, केशव, विश्वनाथ, त्रिमल्लभट्ट, रत्नावली, माधव, शालिग्राम, रघुनाथ तथा अन्यान्य चिकित्सक भेल छथि।

सुश्रुत संहिता, चरकसंहिता, गदनिग्रह, अष्टांगहृदय, सिद्धयोग, चिकित्सासार संग्रह, भाव प्रकाश, धन्वन्तरि निघण्टु, राजनिघण्टु, राजमार्तण्ड, वैद्यमनोरमा, वनौषधिदर्पण, हारीत संहिता, क्षेम कुतूहल, आयुर्वेदविज्ञान, सिद्धभेषजमणिमाला, कैयदेव निघण्टु, सिद्धमन्त्र, योगरत्नाकर, काश्यप संहिता, निघण्टु शेष, भैषज्य रत्नावली, आयुर्वेद प्रकाश, क्षेमकुतूहल, कामकुतूहल आदि आयुर्वेदक नीक एवं प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि।

रणवीर अनुसन्धान पुस्तकालय जम्मू मे निम्नलिखित प्रमुख आयुर्वेदक हस्तलिखित ग्रन्थ सुरक्षित अछि –

अञ्जननिदान, अमृतमञ्जरी, अर्कप्रकाश, अश्वचिकित्सा, अष्टांग हृदयसंहिता, कल्पसागर, कालज्ञानम् क्रियाकालगुणोत्तर, क्षेमकुतूहल, गुणयोगप्रकाश, गुणरत्नमाला, चक्रदत्तसंग्रह, चरकसंहिता, चिकित्साकलिका, चिकित्साञ्जन, चिकित्सादर्पण, चिकित्सार्णवसंहिता, चिकित्सासार, चिकित्सासारसंग्रह, जगत्प्रकाश, ज्वरतिमिरभास्कर, टोडरानन्द आयुर्वेद सौख्यम्, द्रव्यगुण, द्रव्यगुणशतश्लोकी, धातुरत्नमाला, नामावली, निघण्टुसारसंग्रह, पथ्यापथ्यम्, पथ्यापथ्यविनिश्चय, पाण्डुरोगचिकित्सा, प्रयोगामृत, बालचिकित्सा, बृहज्जातकादिमोदक, बृहद्वैद्यप्रसारक, भावप्रकाश तत्त्वप्रकाश टीका, भोजनकुतूहल, मदनपालविनोद, मूत्रकृच्छ्रचिकित्सा, यशश्चन्द्रिका, योगचन्द्रिका, योग–चिन्तामणि, योगतरङ्गिणी, योगसार, योगसुधानिधि, रसचिन्तामणि, रसपद्धतिटीका, रसप्रकाश सुधाकर, रसप्रदीप, रसमञ्जरी, रसमानसार, रसरत्नाकर, रसराजलक्ष्मी, रससार, रसार्णव, रसेन्द्रचिन्तामणि, रामविनोद,

रुग्नविनिश्चय, रोगान्तकसार, वाजिरहस्य शतकम्, वातरक्त चिकित्सा, विषहरतन्त्र, वीरवैद्यरत्नहार, वीरसिंहासिनी, वैद्यकल्पतरु, वैद्यचन्द्रोदय, वैद्यजीवनटीका, वैद्य भास्करोदय, वैद्यविनोद, वैद्यसर्वश्व, वैद्यसारसंग्रह, वैद्यावतंस, शतश्लोकी टीका, शॉर्ड्गधरसंहिता, सारावली, सिद्धमन्त्रटीका, सुश्रुत, सौभाग्यशुंठी, स्त्रीरोग चिकित्सा, हृदयदीपक इत्यादि।

एकर अतिरिक्त सहस्राधिक आयुर्वेदक ग्रन्थक अप्रकाशित पाण्डुलिपि बनारस, प्रयाग, मद्रास, कलकत्ता, मिथिला, राजस्थान तथा अन्य स्थानक पुस्तकालय सब मे सुरक्षित अछि।

एहि ग्रन्थ कें शुद्ध करबा में तथा अनुवाद करबा मे आयुर्वेदशास्त्रक किछु विशेष अनुभवनी व्यक्तिक सहयोग प्राप्त भेल अछि। आयुर्वेद शास्त्रक परम निपुण पण्डित प्रो० श्री द्वारका नाथ शास्त्री, आयुर्वेदक कॉलेज जम्मूक, सहायता सॅ, आयुर्वेद कॉलेजक प्राचार्य डा० श्री सांख्यधर जीक सहायता सॅ तथा डा० श्रीमुरलीधर पाण्डेयजीक सहायता सॅ एहि ग्रन्थक पाठ संशोधन कए सकलहुँ। एतदर्थ हिनका लोकनिक विशेष आभारी छी।

आयुर्वेदाचार्य डा० श्री सीताराम झा वनौषधि सर्वेक्षण विभाग, केन्द्रीय आयुर्वेद शाखा, जम्मूक पूर्ण सहयोग सॅ रोग तथा जडी बूटीक विशेष परिचय दए सकलहुं अछि। एतदर्थ ओ विशेष धन्यवादक पात्र छथि।

एहि ग्रन्थक प्रकाशन सॅ मिथिलाक जड़ी बूटीक उपर विशेष प्रकाश पड़त से आशा करैत छी।

ग्रन्थ मे अज्ञानवश जॅ त्रुटि हो तॅ सुधारि अनुगृहीत कएल जाय।

इति शम्।

**डा० उमा रमण झा**

# ग्रन्थकार परिचय

चिकित्साञ्जन मैथिल विद्यापतिक लिखल ग्रन्थ थिक। ग्रन्थक प्रारम्भ में विद्यापति कार्तवीर्य अर्जुन कें नमस्कार कएने छथि जे प्रायः मिथिला मे वेशी प्रसिद्ध अछि।[1] अखिल भारतीय प्राच्य–सम्मेलन (कुरूक्षेत्र) में **डा0 श्रीविधातामिश्र** एक निबन्ध विद्यापतिकृत चिकित्साञ्जन पर पढ़ने छलाह। ओ ओतय स्पष्ट लिखने छथि जे चिकित्साञ्जनक कर्ता विद्यापति मैथिली–हिन्दी–संस्कृत में प्रसिद्ध विद्यापति सॅ भिन्न व्यक्ति नहि थिकाह। अर्थात् राजा शिवसिंहक समसामयिक मैथिल कविकोकिल विद्यापति एहि ग्रन्थक रचयिता थिकाह। चिकित्साञ्जन क एक प्रति मिथिला क सिलौट ग्राम मे सेहो सुरक्षित अछि से ओ लिखने छथि[2]।

मुदा पूर्ण अनुसन्धान क बाद ई निष्कर्ष भेल अछि जे ई विद्यापति 17म 18म शताब्दीक बंशीधर उपाध्याय क पुत्र छलाह। अतएव ई प्रसिद्ध विद्यापति सॅ भिन्न मैथिल छलाह।

चिकित्साञ्जन क अन्त में "इति उपाध्यायविद्यापतिकृत चिकित्साञ्जनं समाप्तम्" लिखल अछि। अतएव ई विद्यापति उपाध्याय प्रसिद्ध विद्यापति ठाकुर सॅ भिन्न व्यक्ति छलाह।

विद्यापति ठाकुर क पिताक नाम गणपतिठाकुर छल मुदा चिकित्साञ्जनक विद्यापति उपाध्यायक पिता वंशीधरउपाध्याय छलाह। चिकित्साञ्जनकार विद्यापति 17म 18म शतक में भेल छलाह।

कैटलोगस कैटलोगोरम क अनुसार वैद्यरहस्य पद्धतिकार वंशीधर उपाध्यायक पुत्र विद्यापति उपाध्याय छलाह तथा विद्यापतिए अपन पिताक ग्रन्थ वैद्यरहस्यपद्धति कें 1682 सम्वत् में पूर्ण कएने छलाह[3]।

---

[1]. Chikitsanjana is a work on Ayurveda written in Sanskrit by vidyapati a great poet of Mithila in the $14^{th}$ century A.D.

2-This rare manuscript is preserved in the personal library of my late grand father, Pt. Nawati Lal Mishra of Village Silaut, 3 miles north west fsrom the district head quarter of Samastipur in the state of Bihar. The manuscript is written entirely in Devanagari script.

All India oriental conference Kurukshetra- 1974, Page-333.

Dr. Vidhata Mishra.

[3].Vidyapati son of Vanshidhar wrote Vaidya Rahasya paddhati in 1682 Cat- I P. 574

See also Benares-63, L.1480

विद्यापतिक नाम आयुर्वेदशास्त्रमे अद्यावधि प्रसिद्धि नहि प्राप्त कएलक अछि। एहि चिकित्साञ्जनक प्रकाशन सँ हुनक आयुर्वेदशास्त्रीय पाण्डित्य सेहो विख्यात भए जाएत। ओना विद्यापति लिखनावलीक प्रारंभे में अपन पाण्डित्य द्रव्यगुण नामक आयुर्वेदक प्रसिद्ध ग्रन्थक उल्लेखक संग कएने छथि[4]।

विद्यापति नामक विद्वान् मिथिला मे एक सँ अधिक भेल छथि।

1. दरभंगा जिलाक विसफी ग्राम मे उत्पन्न गणपतिठाकुरक पुत्र प्रसिद्ध विद्यापति भेलाह जे पुरूष परीक्षा, वर्षकृत्य, कीर्तिलता, कीर्तिपताका, भूपरिक्रमा प्रभृति ग्रन्थ लिखने छलाह।

डॉ० जयदेव गाङ्गुली Dharmasastra in Mithila नामक ग्रन्थ में विद्यापतिठाकुर क स्थान पर विद्यापति उपाध्याय क उल्लेख कएने छथि– Kirtilata, purusa Pariksa etc. of Vidyapati Upadhyaya are valuable records in this respect (P.203)

2. गोविन्दठाकुर क पुत्र विद्यापति ठाकुर 16म 17म शताब्दी मे भेल छलाह। इहो नीक विद्वान् रहथि।
3. वंशीधर उपाध्यायक पुत्र विद्यापति उपाध्याय 17म 18म शताब्दी मे भेल छलाह। ई वंशीधर वैद्यरहस्य लिखने छलाह।

18म शतक मे एक वंशीधर उपाध्याय दरिहरे राजनपुर मूलक गोकुलनाथ उपाध्याय क घर क भागिन छलाह। ई नैयायिक छलाह।

**(मि.त.वि.पृ.173)**

एक वंशीधर उपाध्याय दरभंगा क तमोरिया लग 18म शताब्दी में भेल छलाह। 18म शताब्दी मे पडुए महेन्द्र परिवार सँ सम्बन्धित छलाह। ई ज्योतिष तथा तान्त्रिक रहथि। हिनका मनीरूद्दीला (नवाव अजीमावाद पटना) नौ टा ग्राम सम्मान मे देने रहन्हि। ई पटना लग बैकाठपुर मे बसि गेल रहथि।

---

See also- Chikitsanjana by Vidyapati 17th -18th Century Son of Vanshidhar.
See अत्रिदेवविद्यालङ्कार का आयुर्वेदशास्त्र का इतिहास पृ. 321.
Alwar-1627, Bori-918 of 1884-87, Called also yoganjana Stein-182.
Cat. Cat डॉ० कुंजनीराजा Vol-7 P-27.

4 ....श्री मच्चरणसकाशादधीतव्याकरणोऽहं अनध्यायमधिगत्य दिनकतिपयं गृहमागतोऽस्मि। सम्प्रति प्रत्यासन्ने स्वाध्याये तत्रागत्य शास्त्रमध्येतुमिच्छामि। तेन "द्रव्यगुण" लीलावती–कुसुमाञ्जलिपुस्तकानि आदर्शत्वेन मयि सन्देष्टुमादेष्टव्यानि।
पुरुषपरीक्षा परिशिष्ट पृ० 252

ईएह वंशीधर उपाध्याय प्रस्तुत ग्रन्थकार विद्यापतिक पिता छलाह। विद्यापति चिकित्साञ्जन में सेहो तन्त्रक प्रयोग रोग निवारण हेतु प्रयोग कएने छथि। कोनो नवावेक आदेश पर वंशीधर उपाध्याय वैद्यक रच्ना लिखने छलाह। अतएव ई विद्यापति 18 शताब्दी क छलाह।

**(मिथिला की पाण्डित्य परम्परा पृ.179)**

## चिकित्साञ्जनक संक्षिप्त परिचय

चिकित्साञ्जन विद्यापति उपाध्यायक लिखल 254 श्लोक क एक लघु ग्रन्थ अछि। एकर मंगलाचरण मे कार्तवीर्य अर्जुनक वन्दना एहि प्रकार सँ कएल गेल अछि –

**सहस्रकरसंशोभि, धनुर्बाणमभीष्टदम्।**
**कार्त्तवीर्यार्जुनं वन्दे रक्ताम्बर विभूषणम्।।**

एकरवाद ग्रन्थक प्रयोजन कें स्पष्ट करैत छथि जे चिकित्साक ज्ञान जनिका नहि छन्हि हुनका लेल ई ग्रन्थ लिखि रहल छी।

2. **चिकित्साज्ञानतिमिरच्छन्ननेत्रप्रसादनम्।**
**भिषजां प्रीतये सूक्ष्मं संयोगाज्जनमुच्यते।।**

एकर वाद विद्यापति ग्रन्थक वैशिष्ट्य तथा अपन नामक उल्लेख करैत छथि –

**ये प्राकृतैर्वैद्यवचोभिरुक्ताः प्राचां निबध्नाति वेचोभिरेव।**
**योगाःसतां ये न भवन्ति मान्याःविद्यापतिस्तान् बहुशोऽनुभूतान्।।**

ग्रन्थक विषय नाड़ीक परीक्षण सँ प्रारम्भ होइत अछि –

**अंगुष्ठमूले सा ज्ञेया धमनी जीवसाक्षिणी।**
**तच्चेष्टया सुखं दुःखं ज्ञात्वा कुर्याच्चिकित्सितम्।।**
**स्त्रीणां भिषग्वामहस्ते दक्षिणे पुरुषस्य हि।**
**परीक्षेत् यत्नतश्चैवमित्युक्तं सुचिकित्सकैः।।**

वात–पित्त तथा कफ मे नाड़ी कोना चलैत अछि ताहि विषय मे विद्यापति लिखैत छथि –

**अग्रे वातवहा नाडी मध्ये वहति पित्तला।**
**कफलान्ते विशेषेण केचिदेवं प्रचक्षते।।**

नाड़ी वायुक दोष सँ साँप तथा जोंक जकाँ चलैत अछि, पित्तरोग मे कौआ तथा बटेर जकाँ, तथा कफरोग मे राजहंस, मयूर, कवूतर, एवं मुर्गी क गति सँ चलैत अछि।[5]

मिथिला मे बटेर प्रसिद्ध अछि।

एकरवाद कोन रोगक नाड़ी केहेन रहैत अछि ताहि विषय मे विद्यापति लिखैत छथि –**संसर्गे सन्निपाते च तद्वद्विगतिगामिनी।**
**ज्वरवेगेन धमनी सोष्मा वेगवती भवेत्।।**
**कामक्रोधाद्वेगवहा क्षीणा चिन्ता भयालुता।**
**मन्दाग्नेः क्षीणधातोश्च नाड़ी मन्दतरा भवेत्।।**
**असृक्पूर्णा भवेत्कोष्णा गुर्वी सामा गरीयसी।**
**लघ्वी भवति दीप्ताग्नेस्तथा वेगमती मता।।**

**चपला क्षुधितस्य स्यात् तृप्तस्य वहति स्थिरा।**
**स्थित्वा स्थित्वा वहति या सा ज्ञे या प्राणनाशिनी।।**
**स्पन्दने चैकमानेन त्रिंशद्वारं यदा धमा।**
**सा स्थाने जीवनं मृत्युं वदेन्मध्ये यदा तथा।।**

चि. श्लो. 7–13

तदनन्तर रोगीक मूत्र परीक्षा कएल गेल अछि –

**मूत्रे तैलं विकाशि स्यात्तूर्णं साध्यो विकाशयेत्।**
**कृच्छ्रसाध्योऽथ तलगं तत्रासाध्यो रूजान्वितः।।**
**रूक्षं नीलं वातकोपात् पित्तात्पीतं कुणं कफे।**

---

5 सर्पजलौकादिगतिं वदन्ति विबुधाः प्रभञ्जने।
नाड़ी पित्तेन काकलावकमण्डुकादेस्तथा चपला।।
राजहंस मयूराणां पारावतकपोतयोः।
कुक्कुटस्य गतिं धत्ते धमनी कफसंगिनी।।

श्वेतं स्निग्धं पललाभं सदृशं रक्तकोपतः।।
स्निग्धोष्णं रक्तसंसर्गे सन्निपाते यथेरितम्।

आब रोगक असाध्य क विवेचन एहि प्रकार सँ कएल गेल अछि –

**निद्रानाशो निशायां प्रभवति तथा कंठकूपे वलासो,
देहे दाहोऽतिसूक्ष्मा लघुरथ धमनी प्रस्खलन्नीचजिह्वा।
हीयन्ते यस्य शीघ्रं बलदहनमनः शक्तयश्चेन्द्रियागा –
स्तद्भैषज्यं वदन्ति स्मरणमिह बुधा केवलं रामनामाः।**

एकर बाद कफ–पित्त–वायु रोगक प्रशमनार्थ सामान्य उपाय कहल गेल अछि।[6]

विद्यापति अग्निवेश नामक प्राचीन आयुर्वेदशास्त्रमर्मज्ञक मतानुसार एहि ग्रन्थ मे निदान मात्र कहलन्हि अछि –

**अग्निवेशेन भिषजा निदानाञ्जनमद्भुतम्।
युक्तं तेन मयाप्यत्र चिकित्सामात्रमुच्यते।।**

विद्यापति लिखैत छथि जे ज्वर मे सर्वप्रथम लंघन (भूखलरहब) जरूरी अछि। पुनः शरीर स्थित दूषितवस्तुक प्रशमनार्थ उपाय करक चाही। विद्यापति पथ्यादि पर विशेष ध्यान ग्रन्थक प्रारम्भे मे आकृष्ट करैत छथि –

---

6 तत्र तावदनिलस्य प्रशमने स्नेहवस्तिपरिषेक नियुक्तः।
निर्भुक्तमात्रलंघनेन नराणां ओदनेन मृदुमांसरसेन।।
द्राक्षया त्रिफलया त्रिवृता च संस्रितेन। रुधिरसृतिभिश्च सर्पिषा च पयसा।।
दध्ना सितया च ओदनं स्यात् अधुना भवति हि पित्तनिवृत्तिः।।
लंघनेन वमनेन यवान्न प्राशनेन शिरसश्च विचकैः।
कटुफलादिकवलैर हिमाहमिश्चाद्भिरत्र शगमेति कफश्च।।

ज्वरे लंघनमेवादौ कार्यमादोषपाकतः।
ततः कषायैर्मतिमान् पाचनैश्मिनैर्हरेत्।।

सात दिन तक ज्वर तरूण रहैत अछि। वारह दिन तक ज्वर मध्यम थिक ओकर बाद ज्वर पुराण भए जाइत अछि।[7]
सब प्रकारक ज्वर मे सामान्यतः एहि प्रकारक उपचार करक चाही –

**ज्वराणामेव सर्वेषां प्रथमं वातवर्जनम्।**
**लंघनं चोष्मपानीयमिति धन्वन्तरेर्मतम्।।**
**ज्वरादौ वमनं दद्याज्ज्वरमध्ये तु पाचनम्।**
**ज्वरान्ते रेचनं दद्याज्ज्वरमुक्ते तु भोजनम्।।**

आब वातज्वर मे कोन वस्तु पथ्य होइत अछि ओहि पर विचार कएल गेल अछि।[8]

एकरवाद लघुसुदर्शनचूर्ण, महाज्वरांकुश रस, भूतभैरवरस, षट्तक्रतैल विधान, आनन्द भैरवरस, चिन्तामणि रस, कनकसुन्दरी रस, अष्टादशांगक्वाथ आदि औषधि बनेबाक उपाय कहल गेल अछि।

चिकित्साञ्जन क ज्वराधिकार मे अपस्मार, विषमज्वर, कफज्वर, शिरोऽर्ति, वातज्वर, सन्निपात तथा अन्य रोगक प्रशमनोपाय कहल गेल

---

[7] आसप्तरात्रं तरुणं ज्वरमाहुर्मनीषिणः।
मध्यं द्वादशरात्रिं च पुराणमथ चोत्तरम्।। चिकि. श्लो. 23

[8] गुडूची पिप्पलीमूलनगरैः पाचनं स्मृतम्।
दद्याद्वातज्वरे पूर्ण लिङ्गे सप्तमवासरे।।
द्राक्षा हरीतकी मुस्ता कटुकी कृतमालकः।
पर्पटश्च कृतः क्वाथः एषां पित्तज्वरापहः।।
आरग्वधकणामूलं मुस्तातिक्ताभयाकृतः।
क्वाथः क्षेपयति शीघ्रं ज्वरं वातकफोद्भवम्।।
वासा क्षुद्रामृताक्वाथः सक्षौद्रः कफजेज्वरे।
क्षुद्रा किरात तिक्ता च शुंठी छिन्ना च पौष्करम्।।

अछि। ओकर वाद बहुत प्रकारक अतिसारक निवारणार्थ गङ्गाधर चूर्ण, अतिसारलेप, क्वाथ पान आदिक व्यवस्था कहल गेल अछि।

अर्शप्रतिकार, भगन्दर प्रतिकार, उदरगुल्म प्रतिकार, शोथ प्रतिकार, आमवातोदर प्रतिकार, उदर कृमि प्रतिकार, शूलप्रतिकार, पाण्डुकमलाप्रतिकार, क्षयरोगप्रतिकार, हिक्का प्रतिकार, छर्दि प्रतिकार, कासश्वास प्रतिकार, अग्निमान्द्य प्रतिकार, विशूचिका प्रतिकार, अण्डशोथ प्रतिकार, प्रमेह प्रतिकार, मूत्रकृच्छ प्रतिकार, अश्मरी प्रतिकार, अपस्मार प्रतिकार, कुष्ठव्याधि प्रतिकार, कण्डू–पामा–विचर्चिका–लूता–सिध्मा, स्नायुरोग –शस्त्रक्षत प्रतिकार, वातव्याधि प्रतिकार, पित्तव्याधि प्रतिकार, कफव्याधि प्रतिकार, गण्डमालाअपचीप्रतिकार, मुख–नासिका–कर्ण–अक्षि–शिरोरोगप्रतिकार, स्त्रीरोगाधिकार, वाजीकरणोपाय, लिङ्गकाठिन्योपाय, स्वेदादिदौर्गन्ध्यनिवारण तथा अन्य रोगक निवारणक उपाय एहि ग्रन्थ मे कहल गेल अछि।

एहि ग्रन्थ मे दुर्लभवस्तुक प्रयोग नहि कहल गेल अछि। रोग सभक लक्षण तथा भेदक चर्चा नहि कएल गेल अछि। ग्रन्थ मे एकठाम तान्त्रिक पद्धति सेहो कहल गेल अछि –

**यन्त्रं षड्त्रिंशकं प्रातर्लिखित्वा भूर्जपत्रके।**
**नीलसूत्रैः शिरोवद्धां शिरोऽर्ति सकलां जयेत्।।**

चिकि. श्लो. 216

एहि ग्रन्थ मे अग्निवेश–धन्वन्तरि चिकित्सक, प्राकृतवैद्य, आदिक उल्लेख अछि। ग्रन्थक अन्त एहि प्रकार सँ अछि–

**नयनमुखमनोमहोत्सवस्य प्रभवति**
**मूलमिदं मुनिप्रणीतम्।**
**अतिसुगमं सुसिद्धयोगवाक्यैः**
**रचितमितोऽर्जनमस्तु सर्वतुष्टयै।।**

इति श्री उपाध्याय विद्यापतिकृतं चिकित्साञ्जनं समाप्तम्।।

।। इति शम्।।

# चिकित्साञ्जनम्

# विद्यापति कृत–

# चिकित्साञ्जनम् ।

| ऊँ श्री गणेशाय नमः ।

**सहस्रकरसंशोभिधनुर्बाणमभीष्टदम् ।**
**कार्तवीर्यार्जुनं वन्दे रक्ताम्बरविभूषणम् ।।1 ।।**
**चिकित्साज्ञानतिमिरच्छन्ननेत्रप्रसादनम् ।**
**भीषजां प्रीतये सूक्ष्मं सयोगाञ्जनमुच्यते ।।2 ।।**

## (चिकित्साञ्जन का हिन्दी अनुवाद)

**श्री गणेशाय नमः ।**

**हिन्दीः–**

सहस्रहाथों से सुशोभित, अभीष्ट दायक धनुष–बाण से युक्त, रक्तवस्त्र से विभूषित कार्तवीर्य अर्जुन को मैं प्रणाम करता हूँ।।1 ।।

चिकित्साशास्त्र के अज्ञान रूप अन्धकार से (तिमिर रोगी के समान) अन्धे व्यक्ति को नेत्र देने के लिए तथा वैद्य लोगों को प्रसन्न करने के लिए मैं सूक्ष्म योगाञ्जन लिख रहा हूँ। अर्थात् जिस प्रकार अंजन से आँख का रोग दूर हो जाता है उसी प्रकार इस ग्रंथ से लोगों को चिकित्सा के ज्ञान के लिए अंधकार दूर हो जायेगा।।2 ।।

## (चिकित्साञ्जनक मैथिली अनुवाद)

**श्री गणेशाय नमः ।**

**मैथिलीः–**

(ग्रन्थारम्भ मे विद्यापति कार्तवीर्य अर्जुन कें नमस्कार करैत छथि। मिथिला मे कार्तवीर्यक स्तोत्र एखनो बहुतो व्यक्ति पढ़ैत छथि।)

सहस्र हाथ सँ सुशोभित, अभीष्ट दायक धनुर्वाण सँ युक्त, रक्तवस्त्र सँ विभूषित कार्तवीर्य अर्जुन कें प्रणाम करैत छी।।1 ।।

चिकित्सा क अज्ञानरूप अन्धकार सँ (तिमिर रोगी के समान) आहनर के नेत्रक प्रसादनार्थ एवं वैद्यलोकनिक प्रीतिक लेल सूक्ष्म योगा०जन लिखि रहल छी। अर्थात् जहिना अ०जन सँ ऑखिक रोग दूर भए जाइत छैक तथा ऑखि खूजि जाइत छैक तहिना एहि ग्रन्थ सँ लोक कें चिकित्साक हेतु ऑखि खूजि सकैत अछि।।2 ।।

**ये प्राकृतैर्वैद्यवचोभिरूक्ताः योगाः सतां यन्न भवन्ति मान्याः।**
**प्राचां निबध्नाति वचोभिरेव विद्यापतिस्तान् बहुशोऽनुभूतान्।।3।।**
**(अथ नाड़ी परीक्षा)**
**अंगुष्ठमूले सा ज्ञेया धमनी जीवसाक्षिणी।**
**अंगुष्ठमूले सुखं दुःखं ज्ञात्वा कुर्याच्चिकित्सितम्[1]।।4।।**

**हिन्दीः—**

अब विद्यापति अपने नाम के साथ ग्रन्थ का उल्लेख करते हैं—

प्राकृत (अर्थात् पहले के प्राचीन) वैद्यो के वचन तथा जो योग चिकित्सा में सर्वमान्य नहीं है उन विषयों में प्राचीन आचार्यो के वचन के साथ तथा अपने अनुभव के आधार पर मैं विद्यापति लिख रहा हूँ।।3।।

**अथ नाड़ी परीक्षाः—**

जीवन को व्यक्त करने वाली धमनी (नाड़ी) है। जो हाथ में अगूंठा के नीचे रहती है। इसी धमनी (नाड़ी) की चेष्टा से रोगी के सुख—दुख को जानकर चिकित्सा करनी चाहिए अर्थात् नाड़ी देखकर चिकित्सा करना उचित है।।4।।

**मैथिलीः—**

**(एकर बाद विद्यापति अपन नाम क संग ग्रन्थ क उल्लेख करैत छथि)—**

प्राकृत (पूर्वक) वैद्यक जे वचन अछि तथा जे योग सब सर्वमान्य नहि अछि ओहि विषय मे प्राचीन आचार्य लोकनिक वचनक संग तथा अपन अनुभव क संग विद्यापति लिखि रहल छथि।।3।।

**(अथ नाड़ी परीक्षा)**

आब रोगीक परीक्षण क विषय मे विद्यापति लिखैत छथि—

जीवन क साक्षिणी धमनी थिक जे हाथ मे अंगुठाक नीचा रहैत अछि। ओही धमनी (नाड़ी) क चेष्टा सँ सुख दुःख कें जानि चिकित्सा करबाक चाही। अर्थात् नाड़ी देखि चिकित्सा करबाक चाही।।4।।

---

१ करस्याङ्गुष्ठमूले या धमनी जीवसाक्षिणी।
तच्चेष्टया सुखं दुःखं ज्ञेयं कायस्य पण्डितैः।
(शाङ्र्गधरसंहिता प्रथमखण्डः 2 अध्याय पृ. 22)

स्त्रीणां भिषग्वामहस्ते दक्षिणे पुरूषस्य हि।
परीक्षेद्यत्नतश्चैवमित्युक्तं सुचिकित्सकैः।।5।।
अग्रे वातवहा नाड़ी मध्ये वहति पित्तला।
कफलान्ते विशेषेण केचिदेवं प्रचक्षते।।6।।
सर्पजलौकादिगतिं वदन्ति विबुधाः प्रभ०जने।
नाड़ी पित्तेन काकलावकमण्डूकादेस्तथा चपला।।7।।
राजहंसमयूराणां पारावतकपोतयोः।
कुकुटस्य गतिं धत्ते धमनी कफसंगिनी।।8।।

**हिन्दीः—**

स्त्रियों के बांये हाथ की नाड़ी तथा पुरूषों के दाहिने हाथ की नाड़ी को देखना चाहिए। अच्छे वैद्यों का वचन है कि ठीक से यत्नपूर्वक नाड़ी का परीक्षण करना चाहिए।।5।।

वात रोग से पीड़ित रोगी की नाड़ी आगे भाग में चलती है। पित्त रोगी के रोगी की नाड़ी मध्य में चलती है और कफ से पीड़ित नाड़ी अन्त में चलती है। ऐसा कुछ वैद्यों का मत है।।6।।

वायु रोग से पीड़ित रोगी की नाड़ी साँप तथा जोंक के समान ससर कर चलती है। पित्त रोगी की नाड़ी कौंवा, बटेर और मेंढक जैसे चंचलतापूर्वक तथा कूदकर चलती है। कफ रोग से पीड़ित रोगी की नाड़ी राजहंस, मयूर तथा कबूतर एवं मुर्गे के समान चलती है।।7—8।।

**मैथिलीः—**

स्त्रीक वाम हाथक नाड़ी तथा पुरूषक दक्षिण हाथ क नाड़ी देखक चाही। ठीक सँ यत्नपूर्वक नाड़ी देखक चाही से नीक वैद्यक उक्ति थिक।।5।।

वातरोग सँ पीड़ित रोगी कँ नाड़ी अग्रभाग मे चलैत छैक, पित्तरोगीक नाड़ी मध्य में चलैत छैक तथा कफ सँ पीड़ित क नाड़ी अन्त मे चलैत छैक से किछु वैद्यकं मत अछि।।6।।

वायुरोग सँ पीड़ित व्यक्ति क नाड़ी सॉप तथा जोंक जकॉ ससरि के चलैत छैक।

पित्तरोगीक नाड़ी कौआ, वटेर, मण्डूक (बेङ) आदि जकॉ चपल तथा कुदि के चलैत छैक। कफरोग सँ पीड़ित क नाड़ी राजहंस, मयूर, परबा एवं मुर्गी जकॉ चलैत छैक।।7—8।।

संसर्गे सन्निपाते च तद्वद्विगतिगामिनी।
ज्वरवेगेन धमनी सोष्मा वेगवती भवेत्।।9।।
कामक्रोधाद्वेगवहा क्षीणा चिन्ता भयालुता।
मन्दाग्नेः क्षीणधातोश्च नाड़ी मन्दतरा भवेत्।।10।।
असृक्पूर्णा भवेत्कोष्णा गुर्वी सा[1] च गरीयसी।
लघ्वी भवति दीप्ताग्नेस्तथा वेगवती मता।।11।।

**हिन्दीः—**

सांसर्गिक रोग में तथा सन्निपात में नाड़ी विकृत रूप से चलती है। अधिक ज्वर रहने पर नाड़ी गर्म तथा वेगवती रहती है।।9।।

काम–क्रोध के कारण नाड़ी तीव्र गति से चलती है और चिन्ता एवं भय के कारण नाड़ी मन्दगति से चलती है।।10।।

रक्त से पूर्ण नाड़ी कुछ गर्म तथा कुछ ठंडी होती है। यह नाड़ी गुर्वी (भारी) होती है। दीप्ताग्निवालों की नाड़ी वेगवती तथा (हल्की) होती है।।11।।

**मैथिलीः—**

**(अर्थात् नाड़ीक चालि सँ पहिने अनुमान कए ली जे कोन प्रकारक दोष सँ रोग भेल छैक।)**

सांसर्गिक रोग मे तथा सन्निपात मे ओही प्रकार सँ विकृतरूपे नाड़ी चलैत अछि जाहि प्रकारक रोग रहैत छैक। अधिकज्वर रहला सँ नाड़ी गर्म तथा वेगवती होइत छैक।।9।।

कामक्रोध क कारण नाड़ी तीव्रगति सँ चलैत अछि। चिन्ता एवं भय क कारण नाड़ी क्षीण चलैत अछि। मन्दाग्नि भेला सँ (पचनाई कम भेला सँ) तथा धातु क क्षीणता सँ नाड़ी मन्द मन्द चलैत अछि।।10।।

असृक् (रक्त) सँ पूर्ण नाड़ी कनेक गर्म तथा कनेक ठंडा होइत अछि। ई नाड़ी किछु गुर्वी (भारी) कहल गेल अछि। (दीप्ताग्नि वलाक नाड़ी बेगवती तथा लघ्वी (हल्लुक) मानल गेल अछि।।11।।

---

१ सामा. पाठान्तर. ख।

चपला क्षुधितस्य स्यात् तृप्तस्य वहति स्थिरा।
स्थित्वा–स्थित्वा वहति[1] या सा ज्ञेया[2] प्राणनाशिनी।।12।।
स्पन्दने चैकमानेन त्रिंशद्वारं यदाधमा।
सा स्थाने जीवनं मृत्युं वदेन्मध्ये यदा तथा।।13।।

(अथ मूत्र परीक्षा)

मूत्रे तैलं विकाशि स्यात्तूर्ण साध्यो विकाशयेत्।
कृच्छ्रासाध्योऽथ तलगं तत्रासाध्यो रूजान्वितः।।14।।

**हिन्दीः–**

भूखे व्यक्तियों की नाड़ी चपला (तेज) होती है। तृप्त व्यक्तियों की नाड़ी स्थिर रूप से चलती है। जो नाड़ी रह–रहकर चले उसे प्राणनाशिनी नाड़ी समझना चाहिए।।12।।

अगर एक ही प्रकार से तीस वार नाड़ी रह–रहकर स्पन्दन करे तो समझना चाहिए कि जीवन मृत्यु की ओर जा रहा है अर्थात् यह अधम नाड़ी का स्वरूप है। इस हालत में मृत्यु संभव है।।13।।

अगर मूत्र (पेशाब) में तैल छींटने पर तैल फैल जाये तो उस रोग को भशीघ्र ठीक होने वाला समझा जाये। अगर तैल मूत्र में डूब जाये तो रोग को कठिनता से दूर करना पड़ेगा। अगर तैल डूब जाये तथा रोगी को ज्वर भी रहे तो रोग असाध्य समझना चाहिए।।14।।

**मैथिलीः–**

भूखल व्यक्तिक नाड़ी चपला (तेज) कहल गेल अछि। तृप्त व्यक्ति क नाड़ी स्थिर चलैत अछि। जे नाड़ी रहि रहि के चलय ओकरा प्राणनाशिनी नाड़ी बुझ क चाही।।12।।

जॅ एक ढंग सँ तीस वेर नाड़ीक रहि–रहि कँ स्पन्दन हुए तँ बूझक चाही जे जीवन मृत्यु मे बदलि रहल छैक।। अर्थात् ई अधम नाड़ीक रूप थिक। एहि स्थिति में रोगी क मृत्यु बूझक चाही।।13।।

**(एकर बाद दू श्लोक मे मूत्रक परीक्षाक विचार अछि।)**

यदि मूत्र (लघ्घी) मे तैल कँ छिटला सँ तैल फैलि जायतँ ओहि रोग कँ शीघ्र ठीक होएबा क योग्य (साध्य) बुझक चाही। यदि तैल मूत्र मे डूबिजाय तँ रोग कँ कठिनता सँ साध्य बुझक चाही। यदि तैल डूबिजाय तथा ज्वर से हो रोगी कँ रहैक तँ असाध्य रोग बुझक चाही।।14।।

---

चलति–पाठा. ख. २. स्मृता पाठा. ख

रूक्षं नीलं वातकोपात् पित्तात्पीतं कुणं कफे।
श्वेतं स्निग्धं पललाभं[3] सदृशं रक्तकोपतः।।15।।
स्निग्धोष्णं रक्तसंसर्गे सन्निपाते यथेरितम्।।
(रोगस्य असाध्यावलोकनम्)
निद्रा नाशो निशायां प्रभवति तथा कंठकूपे बलासो
देहे दाहोऽति सूक्ष्मा लघुरथ धमनी प्रस्खलन्नीच जिह्वा।
हीयन्ते यस्य शीघ्रं बलदहनमनश्शक्तयश्चेनद्रियाङ्गा–
स्तद्भैषज्यं वदन्ति स्मरणमिह बुधाः केवलं रामनाम।।16।।

**हिन्दीः–**

वायु के प्रकोप के कारण मूत्र रूक्ष तथा नील वर्ण का होता है। पित्तवालों का मूत्र पीला होता है तथा कफ के कारण मूत्र दुर्गन्धपूर्ण होता है । रक्त के प्रकोप से मूत्र उजला स्निग्ध तथा मांस के सदृश होता है।।15।।

**(असाध्य रोग का अवलोकन)**

अगर रात में रोगी को नीन्द न हो, कण्ठकूप (गले) में कफ जम जायें, देह में खूब ताप रहे नाड़ी सूक्ष्म तथा लघुरूप धारण कर ले जीभ नीचे लटक जाये, जिसका बल,मन तथा शक्ति क्षीण हो जाये उसके लिए मात्र रामनाम उपाय है। अर्थात् उस प्राकर के रोगी के लिए दवा नहीं है। केवल भगवान ही बचा सकते है।।16।।

**मैथिलीः–**

वात (वायु) क प्रकोप क कारण मूत्र रूक्ष तथा नील वर्णक, पित्त सँ पिअर, तथा कफ जन्य रोग मे दुर्गन्धि पूर्ण मूत्र होइत अछि। रक्त क प्रकोप सँ मूत्र उज्जर, स्निग्ध तथा मांस क सदृश होइत छैक।।15।।

**(अथ असाध्य अवलोकन)**

एक श्लोक मे विद्यापति रोगीक असाध्य लक्षण लिखैत छथि–

यदि राति मे रोगी कें निद्रा नहि होइक, कंठकूप मे कफ जमि जाइक, देह मे खूब दाह रहैक, नाड़ी सूक्ष्म तथा लघु भए जाइक, जीभ नमड़ि कें नीचॉ लटकि जाय तथा जकर बल, मन, शक्ति तथा इन्द्रिय क्षीण भए जाइक ओकरा हेतु मात्र रामनाम उपाय अछि। अर्थात् एहि प्रकारक रोगी क औषधि नहि अछि। भगवाने बचा सकैत छथिन्ह।।16।।

---

३ पल्वल–पा.क।

**(इत्यसाध्यावलोकः)**
**(कफस्य प्रशमनम्)**
**वातपित्तकफा दोषाः सामान्योक्ताः शरीरिणाम्।**
**रसासृङ्मांसमेदोऽस्थि मज्जा शुक्राणि धातवः[2] ।।17।।**
**दोषधातुमलमूलमिदं त्वक्‌युक्तमुक्तमृषिभिर्नृशरीरम्।**
**तद्विकारमुपलभ्य भिषग्भिःभैषजैरुपशमः करणीयः ।।18अ।।**

**हिन्दीः—**

वात, पित्त तथा कफ ये तीन प्रकार के दोष सामान्य रूप से शरीर में होता है रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा तथा शुक्र ये सात प्रकार धातु के होते है। मनुष्यों को यह शरीर दोष धातु एवं मल इन तीनों के योग से बनता है। अतएव उसके विकारों के देखकर वैद्य समुचित चिकित्सा करें।।17।।

**(वात के कारण रोग का उपाय)**

वायु रोग को रोकने के लिए स्नेह, वस्ति, परिषेक, लंघन आदि क्रियाओं का प्रयोग करना चाहिए। रोगी को भूखा रखकर ज्वरमुक्त हो जाने पर भात तथा कोमल मांस का रस देना चाहिए।।18अ।।

**मैथिलीः—**

**(इति असाध्य अवलोकन)**

वात—पित्त एवं कफ ई तीन प्रकारक दोष सामान्यतया शरीर मे होइत अछि। रस, असृक्, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, तथा शुक ई सात प्रकारक धातु थिक।।17।।

मनुष्यक ई चमड़ा सँ युक्त शरीर दोष धातु तथा मल एहि तीनूक योग सँ बनैत अछि। अतएव ओकरे विकार कँ देखि वैद्यकँ यथोचित चिकित्सा करबाक चाही।।18अ।।

---

२ रसासृङ्मांसमेदाऽस्थि मज्जा शुक्राणि धातवः।
जायन्तेऽन्योन्यतः सर्वे पाचिताः पित्ततेजसा।। पाठा. ख.।

**(वातजन्यरोगस्य प्रशमनम्)**
**तत्र तावदनिलस्य प्रशमने स्नेहवस्तिपरिषेकनियुक्तः।**
**निर्मुक्तमात्रलंघनेन नराणामोदनेन मृदुमांसरसेन[1] ।।18ब।।**
**(पित्तशमनस्य उपायः)**
**द्राक्षया त्रिफलया त्रिवृता च संश्रितेन।**
**दधिरञ्जिभिश्च[2] सर्पिषा च पयसा**
**सितया च स्यादधुना भवति पित्तनिवृत्तिः ।।19।।**

**हिन्दीः–**

मनुष्य का यह जमडे. से युक्त शरीर दोष धातु तथा मल इन तीनो के योग से बनता है। अतएवं उनके विकार को देखकर वैद्य को यथोचित चिकित्सा करनी चाहिए।।18ब।।

**(पित्त प्रशमन–उपाय)**

पित्त रोग की निवृत्ति दाख,त्रिफला, त्रिवृता (निशोथ)के साथ दही, दूध तथा मिसरी से होता है।।19।।

**मैथिलीः–**

**वातक कारण रोग क उपाय**

वायु रोग क प्रशमनार्थ स्नेह, वस्ति, परिषेक, लंघन आदि क्रिया क प्रयोग करक चाही। भूखल राखि ज्वर सँ मुक्त रोगी कँ भात तथा कोमलमांसक रस (झोर) देबाक चाही।।18ब।।

**(पित्तप्रशमन क उपाय)**

पित्तनिवृत्ति द्राक्षा (दाख), त्रिफला, त्रिवृता (निशोथ) सँ युक्त दधि, धृत, दूध, मिसरी सँ होइत अछि ।।19।।

---

१ अयं श्लोक उभयत्र खण्डितः।

२ रुधिरश्रृतिभिश्च–पाठा. क। व्याकरणदृष्टया अशुद्धिः।।

८

लंघनेन वमनेन यवान्नप्राशनेन शिरशश्च विरेकैः।
कटुफलादिकवलैरहिमाभिश्चाद्भिरत्रशममेति
कफश्च।।20।।
अग्निवेशेन भिषजा निदाना०जनमद्भुतम्।
युक्तं तेन मयाप्यत्र चिकित्सामात्रमुच्यते।।21।।
ज्वरे लंघनमेवादौ कार्यमादोषपाकतः।
ततः कषायैर्मतिमान् पाचनैर्शमनै र्हरेत्।।22।।

**हिन्दीः—**

### कफ की निवृत्ति

लंघन (उपवास) वमन, यवान्न प्राशन (वार्ली) तथा शिरोविरेचन नस्य से कफ की निवृत्ति होती है। पुनः सोंठ पीप्पली एवं मरीच को गर्म पानी में मिलाकर पीने से कफ की निवृत्ति होती है।।20।।

अग्निवेश नामक वैद्य राज ने रोगों के लिए अद्भुत निदानाञ्जन लिखा है। उनकी युक्तियों के अनुसार ही मैं (विद्यापति) चिकित्सा के विषय में कुछ लिखता हूँ।।21।।

ज्वर के प्रारम्भ में लंघन (भूखा रखना) सबसे पहला कार्य होता है। जब तक पेट में दोषयुक्त वस्तुओं का पाचन न हो तब तक रोगी भूखा ही रहें। इसके बाद कषाय द्रव्य से पाचन एवं शमन द्रव्य से रोगों को शान्त करें।।22।।

**मैथिलीः—**

### कफ की निवृत्ति

लंघन, (उपवास) वमन, यवान्नप्राशन (वार्ली) एवं शिरोविरेचन नस्य सँ होइत अछि। पुनश्च सोंठि पीपरि एवं मरीच कें गर्मपानि मे मिलाय पीला सँ कफ क निवृत्ति होइत छैक।।20।।

अग्निवेश नामक वैद्यराट् रोग क अद्भुत निदाना०जन लिखने छथि। हुनके युक्ति क अनुसार हम (विद्यापति) चिकित्सा मात्रक विषय मे लिखैत छी।।21।।

(विद्यापति ज्वरक लक्षण, भेद, कारण आदिक विषय मे किछु नहि लिखलन्हि अछि, मात्र चिकित्सा क विषय मे लिखने छथि)।

ज्वरक प्रारंभ मे लंघन (भूखल राखब) सर्वप्रथमकार्य थिक। यावत् पचय वहि तावत् भूखल रहक चाही। ओकर वाद कषाय द्रव्य सँ पाचन एवं शमन द्रव्य सँ रोग कें शान्त करी।।22।।

आसप्तरात्रात्तरूणं ज्वरमाहुर्मनीषिणः।
मध्यं द्वादशरात्रिं स्यात्पुराणमथ चोत्तरम्[1]।।23।।
ज्वराणामेव सर्वेषां प्रथमं वात वर्जनम्।
लंघनं चोष्णपानीयमिति धन्वन्तरेर्मतम्।।24।।
ज्वरादौ वमनं दद्याज्ज्वरमध्ये तु पाचनम्।
ज्वरान्ते रेचनं दद्याज्ज्वरमुक्ते तु भोजनम्।।25।।

**हिन्दीः—**

विद्वानों के अनुसार सात दिनों तक ज्वर तरूण रहता है। बारहवें दिन की रात तक मध्य ज्वर रहता है और उसके बाद ज्वर पुराना हो जाता है।।23।।

सभी प्रकार के ज्वरों में रोगी को सबसे पहले हवा से बचाना चाहिए। फिर रोगी को भूखा रखना चाहिए। उसे गर्म पानी पीने के लिए देना चाहिए। यह धन्वन्तरि का मत है।।24।।

ज्वर के प्रारम्भ में वमन (उल्टी) करवाना चाहिए, ज्वर के मध्य में पाचन करवाना चाहिए, ज्वर के अन्त में रेचन करवाना चाहिए, ज्वर से छुटकारा मिलने पर भोजन देना चाहिए ।।25।।

**मैथिलीः—**

मनीषी लोकनिक अनुसार सात दिन तक ज्वर तरूण रहैत अछि, द्वादश रात्रि पर्यन्त मध्य ज्वर कहवैत अछि एवं ओकर वाद ज्वर पुराण भए जाइत अछि।।23।।

सब प्रकार क ज्वर मे रोगी कें सर्वप्रथम हवा सँ वचेबाक चाही। पुनः भूखल राखक चाही एवं गर्म पानि पीबाक हेतु देबाक चाही। ई धन्वन्तरिक मत थिक।।24।।

ज्वरक आदि मे वमन करेबाक चाही, ज्वरक मध्य मे पाचन करेबाक चाही, ज्वरक अन्त मे रेचन करक चाही एवं ज्वरक मुक्ति भेला सँ भोजन देबाक चाही।।25।।

किन्तु भावप्रकाश मे एहि प्रकारक पाठ अछि—

**ज्वरादौ लंघनं प्रोक्तं ज्वरमध्येतु पाचनम्। ज्वरान्ते भेषजं दद्यात् ज्वरमुक्ते विरेचनम्।।कषाय एषां शमयेत्पीतश्चाष्टविधं ज्वरम्।**

भा. प्र. पृ. 471.

---

१ भैषज्यत्नावली मे ई श्लोक अछि। द्रष्टव्य पृ. ४८। चक्रदत्त मे से हो अछि पृ ५ भाव प्रकाश मे—"द्वादशाहमभिव्याप्य मध्यं जीर्णं ततः परम्।। भा. प्र. ४८२

(वातज्वरे प्रतिकारः)

गूडूचीपिप्पलीमूलनागरैः पाचनं स्मृतम्।
दद्याद्वातज्वरे पूर्ण लिङ्गे सप्तमवासरे।।26।।

(पितज्वरे प्रतिकारः)

द्राक्षा हरीतकी मुस्ता कटुकी कृतमालकः।
पर्पटश्च कृतः क्वाथः एषां पित्तज्वरापहः।।27।।

**हिन्दीः—**

## (वातज्वर प्रतिकार)

गुडूची, पिप्पलीमूल तथा नागर (सोंठ) पाचन द्रव्य हैं वायु रोग में सात दिनों तक ये सब मिलाकर देना चाहिए।।26।।

द्राक्षा (दाख) हरीतकी (हर्रे) मुस्ता (मोथा) कुटकी (जंगी हर्रे) कृतामलक (अमलतास) तथा पर्पट (पित्तपापरा) का क्वाथ पित्तज्वर को दूर करता है।।27।।

**मैथिलीः—**

गुडूची, पिप्पलीमूल तथा नागर (सोंठि) ई पाचन द्रव्य थिक। वायु रोग मे सातम दिन ई सब मिला कए देबाक चाही।।26।।

## (पित्तज्वरप्रतिकार)

द्राक्षा (दाख), हरीतकी (हर्रे), मुस्ता (मोथा), कटुकी (जंगी हर्रे), कृतमालक (अमलतास) तथा पर्पट (पित्तपापरा) क क्वाथ पित्तज्वर कें दूर करैत अछि।।27।।

(कफज्वरे प्रतिकारः)

आरग्वधः कणामूलं मुस्ता तिक्ताभयाकृतः।
क्वाथः क्षेपयति क्षिप्रं ज्वरं वातकफोद्भवम्।।28।।
वासाक्षुद्रामृताक्वाथः सक्षौद्रः कफजे ज्वरे।
क्षुद्राकिराततिक्ता च शुंठीच्छिन्ना च पौष्करम्।।29।।
त्रिकटु त्रिफला मूर्वा कण्टकारी निशामृता।
श्रृङ्गीकचूरमधुकं पौष्करं सदुरालभम्।।30।।

**हिन्दी:–**

### (कफज्वर प्रतिकार)

आरग्वध (अमलतास) कणामूल (पिप्पली मूल) मुस्ता (मोंथा) तिक्ता (चिरैता) एवं अभया (हर्रे) इन सबों का क्वाथ वायुरोग एवं कफरोग में देना चाहिए। अर्थात् वायुरोग एवं कफरोग में इन औषधियों का क्वाथ लाभदायक होता है।।28।।

वासा (वाकस) क्षुद्रा (कंटकारी) अमृता (हर्रे) का क्वाथ मधु के साथ सेवन करने से कफज्वर दूर हो जाता है।।29।।

क्षुद्रा (कटंकारी), किरात (चिरैता), कुटकी (तिक्ता), सोंठ गुडीच तथा पौष्कर (पुष्करमूल) के क्वाथ से आठ प्राकर के ज्वर का नाश होता है।।30।।

**मैथिली:–**

### (कफज्वर प्रतिकार)

आरग्वध (अमलतास), कणामूल (पिप्पलीमूल), मुस्ता (मोथा) तिक्ता (चिरैता), एवं अभया (हर्रे) एहि सभक क्वाथ बना कए वात एवं कफ सँ पीड़ित रोगी कें देबाक चाही। अर्थात् वातजन्यरोग वा कफजन्य रोग मे एहि सभक क्वाथ लाभप्रद होइत अछि।।28।।

वासा(वाकस), क्षुद्रा(कंटकारी), अमृता(हर्रे) क क्वाथ मधुक संग कफज ज्वर मे देबाक चाही।।29।।

क्षुद्रा (कंटकारी), किरात (चिरैता) तथा कुटकी (तिक्ता), सोंठि, गुडीच (छिन्ना) एवं पौष्कर (पुष्करमूल) क क्वाथ सँ आठ प्रकार क ज्वर दूर होइत अछि।।30।।

(योग रत्नाकरक अनुसार गुडीच, पीप्पलीमूल, पीपल, कुटकी, हर्रे, सोंठि, लवंग, नीमक छाल एवं सफेद चन्दन तथा चिरायता मिला कए सुदर्शन चूर्ण बनैत अछि। (विशेष द्रष्टव्य–भैषज्य रत्नावली पृ. 79)। (विद्यापति लिखैत छथि)–

(वातज्वर प्रतिकार)
कालाजाजी त्रायमाणा पर्पटागुरूपत्रकम्।
बालकं कटुकी मुस्ता देवदारू यवानिका।।31।।
पटोलातिविषा कृष्णामूलत्वक् चित्रकं समम्।
कैरातं सर्वतोऽर्द्धं स्यात् चूर्णं लघु सुदर्शनम्।।32।।
जीर्णज्वरं मोहतन्द्रादाहश्वाससमन्वितम्।।33।।
कासक्लेशौ कामलाश्च पाण्डुतां च तृषं रूजम्।
सन्निपात समुत्थांश्च विकारानाशु नाशयेत्।।34।।

**हिन्दीः—**

त्रिकटु (पीपल्ली, सोंठ तथा मरीच) त्रिफला (हर्रे, बहेडा एवं आंवला), मूर्वा मधुरसा कंटकारी (बड़ी कटेरी) निशा (हल्दी), अमृता (गुडीच), श्रृङ्गी (काकरा श्रृङ्गी) कचूर (शटी) मधुक (महुआ) पौष्कर, दुरालभ, कालायाजी त्रायमाण, पर्पट अगरूपत्र, बलाक, कटुकी, मुस्ता देवदार तथा यवानिक (अजवाइन) पटोल (परवल) अतिविषा, कृष्णामूल, दालिचीनी एवं चित्रक को समान मात्रा में मिलाकर उन सबों के आधा भाग चिरायता मिला दें इन सब पदार्थो का चूर्ण लघु सुदर्शन चूर्ण होता है। इससे जीर्ण ज्वर मोह तन्द्रा दाह श्वास का फूलना खांसी, कामला, पाण्डु, तृष्णा तथा सन्निपात के कारण होने वाला विकार दूर हो जाता।। 31—32—33—34।।

**मैथिलीः—**

त्रिकटु (पीपरि, सोंठि, मरीच), त्रिफला (हर्रे, बहेड़ा एवं धात्री), मूर्वा (मधुरसा), कंटकारी (बड़ीकटेरी), निशा (हरैद), अमृता (गुडीच), श्रृङ्गी (काकराश्रृङ्गी), कचूर (शटी), मधुक (महुआ), पौष्कर, दुरालभ, कालाजाजी, त्रायमाण, पर्पट, अगुरूपत्र बलाक, कटुकी, मुस्ता, देवदारू तथा यवानिका (अजमाइन=जमाइन), पटोल (परोर), अतिविषा, कृष्णामूल, दालिचीनी एवं चित्रक कें समान मात्रा में मिला कए ओकर सब केर आधा भाग चिरायता मिलाय दिऔक। एहि सब वस्तुक चूर्ण लघुसुदर्शन चूर्ण थिक। एहि सँ जीर्णज्वर, मोह, तन्द्रा, दाह, श्वासफुलनाई, ओकासी, कामला, पाण्डु, तृष्णा तथा सन्निपात क कारण अन्यविकार दूर भए जाइत अछि।। (श्लोक 31—34)

(लघुसुदर्शन कैक प्रकारक होइत अछि ई बनाओल सेहो भेटेत अछि।)

(अथ महाज्वरांकुशः)

शुद्धं[1] सूतं विषं गन्धं धूर्तबीजं त्रिभिः समम्।
चतुर्णां द्विगुणं व्योषं चूर्णं गुंजाद्वयोन्मितम्।।35।।
आर्द्रकस्य रसैः किं वा जंवीरस्य रसैर्युतम्।
महाज्वराङ्कुशः सर्वज्वरघ्नः सन्निपातजित्।।36।।

**हिन्दीः—**

**(महाज्वरांकुशरस)**

शुद्ध पारद, शुद्धविष, शुद्धगन्ध को बराबर हिस्सा में मिला दें। इन तीनों के बराबर धथूर का बीज लें ले। इन चारों का दुगुना व्योष (सोंठ, पीपली तथा काली मिर्च) को मिलाकर दो—दो रत्ती की मात्रा में आद के रस के साथ या जंबीरी के रस के साथ सेवन करने से बड़ा से बड़ा रोग दूर हो जाता है।।35—36।।

**मैथिलीः— (महाज्वरांकुश रस)**

महाज्वरांकुश रस मे शुद्ध पारा, शुद्ध विष, शुद्ध गन्धक प्रत्येक 1 टंक लए, धतूरक बीज 3 टंक, व्योष (सूठि, पीपरि एवं मरीच) तीनू 4—4 टंक सबकेँ जल मे मिलाय पीसि कँ दू दू रत्ती क गोली बना कए अदरख वा जंबीरीक रस क संग सेवन सँ महाज्वर क नाश होइत छैक। भा. प्र.। विद्यापति लिखैतछथि—

शुद्ध पारद, शुद्धविष, शुद्ध गन्ध, वरावरि हिस्सा मे लिअ। एहि तीनूक वरावरि धथूर क बीज लिअ। एहि चारूक द्विगुण व्योष (सूंठि, पीपरि, एवं मरीच) कँ मिला कए दू दू रती क मात्रा मे आदक रस वा जंबीरक रस मे सेवन कएला सँ पैघ सँ पैघ ज्वर शान्त भए जाइत छैक। ई महाज्वरांकुश—रस सब प्रकार क ज्वर कँ दूर करैत अछि।।35—36।।

भाव प्रकाशक अनुसार अन्तिम वाक्य एहि प्रकारक अछि—

**महाज्वराङ्कुशोनाम्ना रसोऽयं सर्वसम्मतः।।**

(अथ भूतभैरवरसः)

**तालकं शुक्तिकाचूर्णं तुल्यं यत्रोभयोरपि।**

---

[1] शुद्धं सूतं विषं गन्धं प्रत्येकं शाणसम्मितम्।धूर्त्तबीजं त्रिशाणं स्यात् सर्वेभ्यो द्विगुणा भवेत्।।हेमाद्वा कारयेदेषां सूक्ष्मं चूर्णं प्रयत्नतः।

जंबीरजीरकैर्देयं चूर्णं गुञ्जाद्वयोन्मितम्।।आर्द्रकस्य रसेनापि ज्वरं हन्ति त्रिदोषजम्।महाज्वरांकुशो नाम्ना रसोऽयं सर्वसम्मतः।। (भाव. प्र. पृ ४६२)

नवमांशं च तुत्थं स्यात् मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ।।37।।
तत्तु संशुष्कमुपलैर्वन्यैर्गजपुटे पचेत्।
पीतं गु०जामितं शीतज्वरघ्नं सितया सह।।38।।
पथ्यं सिता दधियुतं भक्तं मध्ये दिनः पुनः।
वांतिर्भवति कस्यापि भूतभैरवसंज्ञकः।।39।।

**हिन्दीः—**

**(अथ भूत भैरव रस)**

हरताल तथा शुक्ति के चूर्ण को बराबर हिस्सा में मिलाकर इन दोनों के नवम भाग तुत्थ मिला दें। इन सब को घृतकुमारी के रस में मर्दन करें। सूख जाने पर दो मिट्टी के पात्र में बन्द करके गजपुट प्रक्रिया से उपली से गर्म करें। ठंडा हो जाने पर दो रत्ती की मात्रा में मिसरी के साथ सेवन करना चाहिए। दही मिसरी तथा भात दोपहर को पथ्य माना जाता है इससे शीतज्वर शान्त हो जाता है। किसी—किसी को इस औषधि से उल्टी हो जाती है। इस औषधि का नाम भूतभैरव रस है।।37—38--39।।

**मैथिली**

**(अथ भूत भैरव रस)**

हरताल, शुक्तिका चूर्ण दूनू वरावरि हिस्सा मे मिला कए, एहि दूनूक नवम भाग तुत्थ दिऔक। सब कें घृतकुमारि क रस मे मर्दन करी। सुखा गेला सॅ दू सर्वाक बीच बन्द कए गजपुट प्रकिया सॅ गोईठा सॅ गर्म करी। शीतल भेला पर दू रत्ती मात्रा मे मिश्रीक संग सेवन करी। दही मिसरी एवं भात मध्याह्न मे पथ्य दिऔक। एहि सॅ शीतज्वर शान्त होइत अछि। ककरो ककरो एहि औषधि सॅ वमन होइत छैका। ई भूत भैरव रस थिक।।37—39।।

भाव प्रकाश क वाक्य विद्यापतिक समान अछि। भैषज्यरत्नावलीक अनुसार भूतभैरवरस मे नरमूत्र क प्रयोग होइत अछि। ओकर अनुसार मृत पारद, अभ्रक, लौह, मैनशिल, गन्धक, हरताल, एवं रसा०जनक तुल्य अंश कें नरमूत्र मे मर्दन करी। पॉच रत्ती भरि एहि रस कें मधु मे मिला कए सेवन करी। पुनः घृत वर्जित हिंगु क चूर्ण दू रत्ती भरि लए 1 तौला नरमूत्र तथा 1 तौला घृत क अनुपान करक चाही।।(भैषज्यरत्ना. पृ.371)

(सन्निपात–पित्त–कफानां प्रशमनम्)

**कृष्णा शिला निम्बबीजगुटिका कारवेल्लजैः।**
**रसैः कृता सन्निपातज्वरघ्नी समुदाहृता।।40।।**
**एकः पर्पटकः पीतः पित्तज्वरविनाशनः।**
**किं पुनर्यदि युज्येत चन्दनोशीर धान्यकैः।।41।।**
**व्योष कटु फलनस्यं स्यात् कफज्वरशिरोरूजि।**

(वातज्वरे उपायः)

**शिवा कद्वी त्रिकटुकरूचिकं सकिरातकम्।**
**वातज्वरहरं चूर्ण श्रेष्ठमुक्तं भिषग्वरैः।।42।।**

**हिन्दीः–** **(सन्निपात प्रशमन)**

पीपली, शिलाजीत तथा नीम के बीज को मिलाकर सेवन करने से सन्निपातज्वार दूर हो जाता है एक पित्तपापरा के खाने से पित्तज्वर नाश हो जाता है अगर उसमें पुनः चन्दन, खस तथा धनिया मिला दे तो और अधिक गुणवान औषधि बनता है। यह पित्तरोग के लिए अच्छी दवा है।। 40–41।।

शिवा (हर्रे), कटुकी, त्रिकटु (सोंठ, पीपली तथा काली मिर्च) रूचिक (सोंफ) किरात (चिरैता) का चूर्ण वात रोग को दूर करने में श्रेष्ठ माना गया है। चरक आदि वैद्य का यह वचन है।।42।।

**मैथिलीः–** **(सन्निपात प्रशमन)**

पिप्पली, शिलाजित, नीमक बीज कें कारवेल्ल(करैला) क रस मे गुटिका बनाय सेवन कएला सॅं सन्निपातज्वर दूर होइत अछि।।

एक पित्तपापरा क पानसॅं पित्तज्वर क शान्ति होइत छैक यदि ओहि मे पुनः चानन, खस तथा धनिया मिलाय दिऐक तॅं फेर कथे कोन? अर्थात् पित्तरोग एहि सॅं शान्त भए जाइत अछि।।40–41।।

योष (त्रिकटु) तथा कटफल क नस्य सॅं कफज्वर तथा सिरक पीड़ा दूर होइत अछि। चक्रदत्तक अनुसार पाठ अछि–

**एकः पर्पटकः श्रेष्ठः पित्तज्वरविनाशनः।**
**किं पुनर्यदि युंजीत चन्दनोशीरबालकैः।।**

अर्थात् एक पित्तपापरा सॅं पित्त पित्तज्वरक शान्ति होइत अछि ओहि मे पुनः यदि चन्दन, खस तथा नेत्र वाला (बालक) मिला देबैक तॅं अत्युत्तम औषधि पित्तक शान्त्यर्थ भए जाइत अछि।

**(वातज्वरक उपाय)**

शिवा(हर्रे), कटुकी, त्रिकटु (सोंठि, पीपरि, एवं मरीच), रूचिक (शोंफ), किरात (चिरायता) क चूर्ण वातरोग कें हरबा मे श्रेष्ठ मानल गेल अछि। चरक आदि भिषक्वर ई वात कहने छथि।।42।।

**अभ्यज्य तिलतैलेन स्नानं तप्तोदकेन यः।**
**करोति तस्य संनश्येत् आमोद्भूतो ज्वरोद्भुतः।।43।।**

**(वात–पित्त–कफानां शमनम्)**

**कट्वी कृष्णामृता शुंठी किराताामोदपर्पटा।**
**वात–पित्त–कफातंकं चूर्णमेषां विनाशयेत्।।44।।**

**(शीतज्वरस्य प्रशमनम्)**

**द्रोणपुष्पामृता शुंठी पिप्पली पयसा पिवेत्।**
**शीतज्वरः शमं याति मात्रा टंकद्वयोन्मिता।।45।।**

**हिन्दीः–**

तिल के तेल को लगाकर गर्म जल से स्नान करने पर आंव से उत्पन्न ज्वर नष्ट हो जाता है।।43।।

कटुकी, कृष्णा, अमृता सोंठ चिरायता मोथा तथा पित्त पापड़ा इन सबों का चूर्ण वात एवं पित्त के आतंक को दूर करता है।।44।।

**शीत ज्वर प्रशमन**

द्रोण पुष्पी (गुंमा) गुडीच, सोंठ तथा पीपली के चूर्ण को दूध के साथ पीने से शीतज्वर का नाश होता है। इस चूर्ण की मात्रा दो टंक के बराबर होना चाहिए।।45।।

**मैथिलीः–**

तिल क तैल लगाय यदि गर्म जल सँ स्नान कएल जाय तँ आम सँ उत्पन्न ज्वर नष्ट भए जाइत अछि।।43।।

(वात पित्त तथा कफ क शान्ति)

कटुकी, कृष्णा, अमृता, शुंठी, चिरैता, मोथा तथा पित्तपापरा एहि सब केर चूर्ण वात–पित्त, कफ तथा आतंक कें दूर करैत अछि।।44।।

**(शीतज्वरप्रशमन)**

द्रोणपुष्पी (गुम्मा), गुडीच, सोंठि, एवं पिप्पली क चूर्ण कें दूधक संग पीला सँ शीतज्वर क नाश होइत छैक। एहि चूर्ण क मात्रा 2 टंक क रहबाक चाही।।45।।

(ज्वरस्य श्लेष्मरोगस्य च प्रशमनम्)

शिवाग्नि पिप्पली पथ्या सैन्धवानां विचूर्णनम्।।
दीपनं पाचनं रूच्यं ज्वरनुत् श्लेष्मनुत्सदा।।46।।
मरीचेन समायुक्तस्तुलसीपत्रजो रसः।
द्रोणपुष्पी रसो वापि विषमज्वरनाशनः।।47।।

(इति षट्तकतैलम्)

हेमा मूर्दा नागर स्वर्जिकात्वग्व्योष लाक्षाकल्कसंयुक्तमेकम्।
सिद्धं षट्गुणैः कालशे संस्कृतं तद्दाहापहारी।।48।।

**हिन्दीः— ज्वर तथा श्लेष्मा रोग का प्रशमन**

ऑवला , अग्नि (चित्रक) पीपली, हर्रे तथा सेन्धा नमक के चूर्ण से पाचन तथा रूचि बढ़ता है। इससे ज्वर तथा श्लेष्मा का नाश होता है।।46।।

काली मिर्च तथा तुलसीपात का रस तथा द्रोणपुष्पी का रस विषम ज्वर को दूर करता है।।47।।

**(अथ षट्तक्र तैल)**

हेमा, मुर्वा, नागर, स्वर्जिकाक्षार त्वक् (दालचीनी व्योष (त्रिकटु) एवं लाक्षा के कल्क को मिलाकर कलश में सिद्ध करंके उस सुसंस्कृत तैल को लगाने से शरीर का दाह ठीक हो जाता है।।48।।

**मैथिलीः— (ज्वर तथा श्लेष्मरोग क प्रशमन)**

धात्री, अग्नि (चित्रक), पिप्पली, हर्रे तथा सैन्धव नमक क चूर्ण सँ दीपन, पाचन तथा रूचि बढैत छैक। एहि सँ ज्वर तथा श्लेष्मा क शान्ति होइत छैक।।46।।

मरीच तथा तुलसी पात क रस अथवा द्रोणपुष्पी (गुम्मा) क रस विषमज्वर कैं दूर करैत अछि।।47।।

**(अथ षट्तकतैल)**

हेमा, मूर्वा, नागर, स्वर्जिकाक्षार, त्वक् (दालचीनी) व्योष (त्रिकटु) एवं लाक्षाक कल्क मिलाय कलश मे सिद्ध एवं सुसंस्कृत तैल लगौला सँ शरीर क दाह शान्त भए जाइत छैक।।48।।

भावप्रकाशक अनुसार—

**सुवर्चिका नागर कुष्ठमूर्वा—लाक्षानिशालोहितयष्टिकाभिः।**
**सिद्धं हरेत् षड्गुणतकपक्वं तैलं ज्वरं दाहसमन्वित०च।** भाव. प्र. पृ. 562।।

अर्थात् स्वर्जिका, सोंठ, कूठ, मूर्वा, लाख, हल्दी, मजीठ, एवं एहि सब औषधिक 6 गुण तक्र कें सिद्ध कएल तैल दाह युक्त ज्वर कें नष्ट करैत अछि।।

भैषज्य रत्नावली में ''षट्तक्त्र'' तैल क चर्चा अछि। सुवर्चिका खार, सोंठ, कूठ, मूर्वा, लाक्षा, हल्दी एवं मजीठ कें वरावरि मात्रा मे मिला कए कल्क बना लिअ एवं मूर्च्छिततिल तैल कें तक्रक संग सिद्ध कए लिअ। पुनः जल दए पाक करबाक चाही। एहि तैल कें लगौला सँ जीर्णज्वर नष्ट भए जाइत अछि। द्रष्टव्य भैषज्यरत्ना पृ. 136

(अथ आनन्द भैरवरसः)

**सौभाग्यहिंगुलकणा गरलं मरीचं संमर्द्य निम्बुकरसैर्दिवसद्वयं च।**
**आनन्दभैरववटी तु वटी प्रमाणा माना तु पानवशतः**
**सकलामयध्नी।।50**
**सन्निपातज्वरे वातकफजे शैत्यमोहयोः।**
**शूलेऽजीर्णे विशेषेण रसोऽयमतिपूजितः।।51।।**

**हिन्दीः—**

**(आनन्द भैरव रस)**

सुहागा, हिंगुल कणा, (पीपली), गरल, (वत्सनाभ) तथा काली मिर्च को नींबू के रस में मिलाकर दो दिनों तक रखें। फिर खूब छोटा—2 बटी बना लें। इस आनन्द भैरववटी से सब प्रकार के दोष सन्निपात ज्वर वात कफ शीत, मोह, शूल अजीर्ण तथा आम रोगों में लाभ होता है।।50—51।।

**मैथिलीः—**

**(आनन्दभैरवरस)**

(भैषज्यरत्नावलीक अनुसार शुद्ध विष, सोंठि, पीप्पली, शुद्धगन्धक, शुद्धसोहागा, ताम्रभस्म, शुद्ध धथूरक बीज, शुद्ध हिंगुल कँ वरावरि मात्रा मे मिला लिअ। भाङ्गक रस में खरल कए एक दिन छोड़ि दिऔक; पुन चना क वरावरि छोट—छोट गोली बनाय छाया शुष्क कए लिअ। एहि सँ सब प्रकारक सन्निपातज्वर, शूल, अजीर्ण तथा अन्य रोग दूर होइत अछि।

आनन्द भैरव रसक दोसर प्रक्रिया एहि प्रकार सँ कहल गेल अछि—

शद्ध हिंगुल, शुद्धवत्सनाम, विष, शुंठी, मरीच, पीपरि, शुद्ध सोहागा, शुद्धगन्धक के वरावरि—वरावरि मात्रा मे मिलाय जम्बीरी नेवोक रसक संग खरल कए छाया शुष्क कए ली। रत्ती भरी क मात्रा मे सेवन करी। (भैषज्यरत्नावली पृ. 147)

**(विद्यापति लिखैत छथि)—**

सोहागा, हिंगुल, कणा (पिपरि), गरल (वत्सनाभ) तथा मरीच कँ नेबोक रस मे खरल कए दू दिन तक राखी। पुनः खूब छोट बटी बनाय लिअ। आनन्द भैरववटी क सेवन सँ सब प्रकार क दोष, सन्निपातज्वर, वात, कफ, शीत, मोह, शूल, अजीर्ण, तथा अन्य रोग मे लाभप्रद होइत अछि।।50—51।।

(अथ चिन्तामणिरसः)

शुद्धं सूतं गंधकं च विषं मरीचमभ्रकम्।
क्षारत्रयं जीरके द्वे व्योषं लवणपंचकम्।।52।।
नागवल्लीरसेनाथ तथार्द्रकरसेन च।
संमर्द्य बहुशः कार्या गुटिका चणकोन्मिता।।53।।
चिन्तामणि रसाख्यातः सन्निपातज्वरपहः।
कफामशूलदुर्नामविषमज्वरनाशनः।।54।।

**हिन्दीः—**

**(अथ चिन्तामणि रस)**

शुद्ध पारद, गन्धक, विष, मरीच, अभ्रक, तीन प्रकार के क्षार, दो प्रकार का जीरा, व्योष (सोंठ पीप्पली तथा काली मिर्च) तथा पांच प्रकार के नमक को पान तथा आद के रस में मिलाकर खूब मथना चाहिए। उसके बाद चणक (चना) के बराबर छोटी—छोटी गुटिका बना लें। इसका नाम चिन्तामणि रस है। इससे सन्निपात ज्वर दूर होता है। कफ, आम, शूल, विषमज्वर तथा अन्यान्य रोगों का इससे नाश होता है।।52—53—54।।

**मैथिलीः—**

**(अथ चिन्तामणिरस)**

(भैषज्यरत्नावली क अनुसार शुद्धपारद, शुद्धगन्धक, एवं अभ्रक भस्म समान मात्रा मे मिलाय तथा पारद क आधा शुद्ध विष मिलाय एवं विषक तीन भाग शुद्ध जयपाल कँ पानक नव पात सँ वेष्टित कए कुक्कुटपुटक विधि सँ पाक कए ली पुनः चूर्ण बना कए राखिली।)

विद्यापति लिखैत छथि—

शुद्ध पारद, गन्धक, विष, मरीच, अभ्रक, तीन प्रकारक क्षार, दू प्रकारक जीर, व्योष (सोंठि, पीपरि तथा मरीच) एवं नून पाँचों प्रकारक, सब कँ पान तथा आदक रस मे मिला कए खूब मथक चाही। बाद मे चणक (चना) क वरावरि मात्रा मे छोट—छोट गुटिका बना ली। एकर नाम चिन्तामणिरस थिक। एहि सँ सन्निपातज्वर दूर होइत अछि। कफ, आम, शूल, विषमज्वर तथा अन्यान्य रोग क नाश होइत अछि।।52—54।।

(इति चिन्तामणिरसः)

(अथ कनकसुन्दरी रसः)

शुद्धं सूतं विषं गन्धं व्योषं तुल्यं विनिक्षिपेत्।
एकस्मात् त्रिगुणं धूर्तमूलं सर्वं विचूर्णयेत्।।55।।
सगन्धं पारदं टंकं त्रिकटु त्रिफला पृथक्।

(पाठान्तरं यथा)

टंकैकं त्रिगुणं धूर्त्तमूलं सर्वं विचूर्ण येत्।।56।।
भृङ्गराजरसेनास्य गुटिका संप्रकल्पयेत्।
गुंजोन्मिता सन्निपाते विषमे कफजे गदे।।57।।
शीताङ्गे च भ्रमोन्मादे मन्दाग्न्यादौ प्रशस्यते।

**हिन्दीः—** **(अथ कनकसुन्दरीरस)**

शुद्ध पारद, विष, गन्धक व्योष सब को बराबर मात्रा में मिला दे इससे तीन गुणा धथूर के मूल को चूर्ण कर लें। इसका दूसरा पाठान्तर भी है।।55।।

गन्धक, पारद, टंक (सोहागा) त्रिकटु, त्रिफला सब को एक—एक टंक की मात्रा में मिलाकर उसमें तीन टंक धथूर की जड़ को चूर्ण कर लें।।56।।

भृङ्गराज के रस में इसकी गुटिका बना लें। गुञ्जा (रत्ती) की मात्रा में सेवन करने से कफ जन्य रोग दूर हो जाता है। यह औषधि सन्निपात में विशेष लाभप्रद होता है। शरीर में सर्दी लगने पर, विक्षिप्त अवस्था में, उन्माद में तथा मन्दाग्नि में यह फायदेमन्द दवा है।।57।।

**मैथिलीः—**

**(अथ कनकसुन्दरीरस)**

भैषज्य रत्नावलीक अनुसार शुद्धपारद, गन्धक, मरीच, सुहागा, तथा धथूर क बीज कें चूर्ण प्रत्येक 1—1 तोला भरि क लए लिआ पहिने पारद गन्धक क कजली बना कए शेष द्रव्य के मिला कए भाङ्र्गी क रस मे छ घंटा मर्न्दन करू। पारदक वरावरि अभ्रकभस्म मिला कए दू—दू रत्तीक बटिका बना लिअ। भैषज्य रत्ना (पृ. 147) एक आरो विधि एहिठाम लिखल अछि। **विद्यापति लिखैत छथि**—शुद्धपारद, विष, गन्धक, व्योष, सबकें वरावरि मात्रा मे मिलाय देबाक चाही एकर तीन गुणा धथूर क मूल कें चूरि लिअ।।55।।

**एकर पाठान्तर से हो अछि**—गन्ध, पारद, टंक (सोहागा), त्रिकटु, त्रिफला सब कें एक एक टंक क मात्रा एवं तीन टंक धथूर क जड़ि कें चूर्ण कए लिअ।।56।।

भृङ्गराजक रस मे एकर गुटिका बना ली। गु०जा (रत्ती) क मात्रा मे सेवन कएला सॅ कफजन्य रोग तथा सन्निपात मे ई लाभप्रद होइत अछि। शरीर मे शर्दी लगला पर, विक्षिप्त अवस्था मे, उन्माद मे, तथा मन्दाग्नि मे ई नीक औषधि थिक।।57।।

(अथ अष्टादशाङ्गक्वाथः)

भूनिम्बदारू दशमूल महौषधाब्द–
तिक्तेन्द्रबीजधनिकेभ कणा कषायाः।
तन्द्रा–प्रलाप–कसनारूचिदाहश्वास–
कासादियुक्तमखिलज्वरमाशु हन्यात्।।58।।

**हिन्दी:–**

**अथ अष्टादशांग क्वाथ**

भूनिम्ब, दारू, दशमूल, महौषध, अब्द, तिक्ता, इन्द्रयव, धनियाँ तथा कणा (पीप्पली) इन सबों के क्वाथ से तन्द्रा, प्रलाप, खाँसी, अरूचि, दाह, मोह, श्वास तथा विषदोषजन्य ज्वर दूर हो जाता है।।58।।

**मैथिली:–**

**(अथ अष्टादशांग क्वाथ)**

भैषज्यरत्नावली क अनुसार चिरायता, देवदारू, दशमूल, सोंठि, नागरमोथा, कुटकी, इन्द्रयव, धनियॉ, एवं गजपीपल एहि अठारह औषधिक क्वाथ बना कए सेवन करक चाही। ई क्वाथ तन्द्रा, प्रलाप, खॉसी, अरूचि, दाह, मोह, तथा श्वास आदि सँ युक्त ज्वर शीघ्र नष्ट भए जाइत अछि।

**(भैषज्यरत्ना. पृ 64)**

विद्यापति क अनुसार–भूनिम्ब, दारू, दशमूल, महौषध, अब्द, तिक्ता, इन्द्रयव, धनियॉ तथा कणा (पीपरि) एहि सब केर क्वाथ सँ तन्द्रा, प्रलाप, खॉसी, अरूचि, दाह, मोह, श्वास तथा त्रिदोषजन्य ज्वर दूर भए जाइत अछि।।58।।

भावप्रकाश मे सेहो ई श्लोक भेटैत अछि। ओतय लिखल अछि–चिरायता, देवदारू, दशमूल, सोंठि, नागरमोथा, कुटकी, इन्द्रयव, धनियॉ तथा गजपीपल क क्वाथ सँ तन्द्रा, प्रलाप, खॉसी, अरूचि, दाह, मोह, श्वास तथा त्रिदोषजन्य ज्वर दूर भए जाइत अछि। ओतय अन्तिम वाक्य एहि प्रकार क अछि–

**श्वासत्रिदोषजनितज्वरनाशनः स्यात्।।** भाव. प्र. पृ. 538

(अथ ज्वराधिकारः)

त्रिकटु त्रिफला हिंगु वचा–कटुकसैन्धवम्।
कद्वी शिरीषकं बीजमजामूत्रेण पेषयेत्।।59।।
अ०जनं हन्त्यपस्मारं सन्निपातं सुदारूणम्।
निशान्ध्यतिमिरं भूतमुन्मादं चित्तविभ्रमम्।।60।।
दन्ती शिवा शटी तिक्ता सैन्धवं सकिरातकम्।
पिप्पली पिप्पलीमूलं पौष्करं वृहती द्वयम्।।61।।
छिन्ना पटोल चवकं मुस्तं च समभागिकम्।
षोडशांगमिदं चूर्णं विषमज्वरनाशनम्।।62।।

**हिन्दीः–**

## अथ ज्वराधिकार

त्रिकटु, (मरीच, सोंठ तथा पीप्पली) त्रिफला हिंगु, वचा कटुक सैन्धानमक कट्वी तथा शिरीष के बीज को बकरी के दूध में मिलाकर पीस लें। इसके अञ्जन से अपस्मार का नाश होता है। बड़ा से बड़ा सन्निपात दूर हो जाता है। निशान्ध्य तिमिर (रतौंधी) भूत वा उन्माद तथा चित्त विभ्रम शान्त हो जाता है।। 59–60।।

दन्ती, शिवा, शटीक, तिक्ता, सैन्धानमक, चिरायता, पिप्पली, पिप्पलीमूल, पौष्कर तथा दोनों प्रकार की बृहती, गुडीच परवल, चवक तथा मुस्ता इन सबों को समान भाग में मिलाकर चूर्ण बना लें। इसका नाम षोडशांग चूर्ण है। इससे विषमज्वर का नाश होता है।।61–62।।

**मैथिलीः–**

त्रिकटु (मरीच, सोंठि तथा पीपरि), त्रिफला, हिंगु, वचा, कटुक, सैन्धानमक, कट्वी तथा शिरीषक बीज कें बकरी क मूत्र मे पीस क चाही। एकर अ०जन (सेवन) सँ अपस्मार क नाश होइत अछि। पैघ सँ पैघ सन्निपात दूर भए जाइत अछि। निशान्ध्यतिमिर (रतौंधी), भूत वा उन्माद, तथा चित्त विभ्रम शान्त भए जाइत अछि।।59–60।।

दन्ती, शिवा शटी तिक्ता, सैन्धवनमक, चिरायता, पिप्पली, पिप्पलीमूल, पौस्कर एवं दूनू प्रकार क बृहस्ती, गुडीच, परोर, चवक, तथा मुस्ता एहि सबके सबके समान भाग मे मिला कए चूर्ण बनेबाक चाही। एकर नाम षोडशांग चूर्ण थिक। एहि सँ विषमज्वर क नाश होइत अछि।। 61–62।।

व्योषकटुफलनस्यं कफ ज्वरशिरोऽर्तिनुत्।
सौवर्चलं च कैरातं कट्वी कृष्णा शिवायुतम्।
मरीचं नागरं चूर्णं वातज्वरविनाशनम्।।63।।
किराताब्दामृता कट्वी शुंठी क्वाथः हरेद्रुजम्।
आकारकरभः कृष्णा लवंगं कुंकुभं समम्।।64।।
आद्र्कस्य रसेनास्य गुटिका टंकसम्मिता।
सन्निपातं कफं तन्द्रां कासं श्वासमपोहति।।65।।

**हिन्दीः—**

व्योष, (मरीच, सोंठ तथा पिप्पली) तथा कटफल के नस्य से कफज्वर तथा शिरोवेदना का नाश हो जाता है।

सौवर्चल, किरात, कट्वी कृष्णा शिवा, मरीच तथा नागर का चूर्ण वातज्वर को नष्ट करता है।।63।।

किरात, अमृता, अब्द, कट्वीं शुंठी इन सबका क्वाथ ज्वर तथा पीड़ा को दूर करता है। आकारकरभ (अकरकरा) कृष्णा, लवंग तथा कुंकुम को बराबर मात्रा में मिलाकर आदके रस में डालकर टंक़ की मात्रा में गुटिका बना लें। इससे सन्निपात कफ तन्द्रा कास, तथा भश्वास सब की शान्ति होती है।।64—65।।

**मैथिलीः—**

व्योष (मरीच, सोंठि तथा पीपरि) तथा कटफल क नस्य सँ कफज्वर तथा माथ क पीड़ा दूर भए जाइत छैक।।

सौवर्चल, किरात, कट्वी, कृष्णा, शिवा, मरीच तथा नागर क चूर्ण वातज्वर कें नष्ट करैत अछि।।63।। किरात, अमृता, अब्द,، कट्वी, शुंठी, एहि सबकेर क्वाथ पीड़ा कें दूर करैत छैक।

आकारकरभ (अकरकरा) कृष्णा, लवंग, तथा कुंकुभ कें समभाग मे मिला कए आदक रस मिला कए गुटिक बनाय लेबाक चाही। एहि सँ सन्निपात, कफ, तन्द्रा, क़स, तथा श्वास सब केर शान्ति होइत अछि।।(64—65)

तिक्तोशीर वलाधान्य पर्पटांभोधरैः कृतः।
क्वाथः पुनः समायान्तं ज्वरं शीघ्रं विनाशयेत्।।66।।
दाडिमानां च मुकुलं वव्वूलकुसुमं तथा।
आम्रास्थिवांसीमरीचं महाराष्ट्री च धातकी।।67।।
माजूफलं मात्रिकं च लोध्रं मोचरसं तथा।
जातीफलं च कुटजं मुस्तकी समभागिका।।68।।
भागद्वयं च खदिरं मज्जाकूष्माण्डबीजतः।
चतुर्भागं विचूर्ण्येदं खाखसोदावमर्दितम्।।69।।
टंकोन्मिता वटी देया तण्डुलांभोयुता प्रिये।
एषा लीलावती ख्याता महातीसारनाशिनी।। 70।।

**हिन्दीः–**

**(अथ ज्वराधिकार)**

तिक्ता (चिरायता) उशीर, वला, धान्य पर्पट तथा अंभोधर इन सबको मिला करके क्वाथ बना लें। इससे ज्वर शीघ्र नष्ट हो जाता है।।66।।

## अथ बृहद्गंगाधर चूर्ण

दाडिम का मुकुल (वा छाल) बबूर का फूल, आम्र, अस्थिवांसी, मरीच, महाराष्ट्री, जातीफल, कुटज, मुस्तकी इन सबकों बराबर मात्रा में मिलाकर उसमें दो भाग खदिर तथा कुम्हर (कुस्माण्ड) का छिलका रहित बीज को चूर्ण करके उसमें खाखस मिलाकर मर्दन करें। फिर परिमाण में वटी बना लें इसमें चावल का धोया हुआ पानी मिला दें। यह लीलावती नामक टंक के बृहदगंगाधरचूर्ण है। इससे महातिसार का नाश होता है।।67–68–69–70।।

**मैथिली**

(अथ ज्वराधिकार)

तिक्ता (चिरायता) उशीर, वला, धान्य, पर्पट तथा अंभोधर सब कें मिला कए बनाओल गेल क्वाथ ज्वर कें शीघ्र नष्ट करैत अछि।।66।।

**(इति ज्वराधिकार)**

एकर वाद बृहदंगाधर चूर्णक विधान कहल गेल अछि।
ज्वराधिकार हेतु विशेष द्रष्टव्य चरक संहिता पृ. 94 द्वितीयभाग. चौखम्भा प्रकाशन।

**(अथ बृहद्गांधरचूर्णम्)**

भैषज्यरत्नावलीक अनुसार कॉच बेलफल क सुखायल मज्जा, मोचरस, पाठा, धायफूल, धनिया, नेत्रवाला, नागरमोथा, शुद्ध अतीस, शुद्ध अफीम, पाठानी लोध्र, दाड़िम क फलक खोंइचा अथवा बीज, कूड़ा क छाल, शुद्ध पारद तथा शुद्ध गन्धक कें मिला कए तकक संग बृहद्गंगाध चूर्ण बनैत अछि। (द्रष्टव्य भैषज्यरत्ना. पृ. 171)

**विद्यापति लिखैत छथि–**

दाड़िमक मुकुल (वा छाल) ववूरक फूल, आम्र, अस्थिवांसी, मरीच, महाराष्ट्री, धातकी, माजूफल, मात्रिक, लोध्र, मोचरस, जातीफल, कुटज, मुस्तकी एहि सब कें वरावरि मात्रा मे मिला कए दू भाग खदिर तथा कुम्हरक बीज क सोहल भाग (सोहल कुम्हर क बिआ) एहि सब कें चूर्ण कए खाखस मिलाय मर्दन करक चाही। टंक परिमाण मे वटी बनेबाक चाही। एहि मे चाउरक घोअल पानि से हो मिला दिऔक। ई लीलावती नामक बृहद्गंगाधर चूर्ण थिक। एहि सॅं महातीसार क नाश होइत अछि।।67—70।।

धातक्यामलकीपयोधरवृकी कट्वंग यष्टीमधु–
श्रीजव्याम्रफलास्थिनागरविषा ह्रीवेरलोध्रेन्द्रजैः।
तुल्याशं विहिंत च तण्डुलजलं गड्गाधराख्यंमहा
चूर्ण तूर्णमपाकरोति सकलं जीर्णातिसारं परम्।।71।।

(अथ अतिसारलेपः)

शुंठी वचा, कुसुम मोचरसाजमोदा–
स्तकान्विताः प्रशमयन्त्यतिसारमुग्रम्।।72।।

**हिन्दीः–**

## अथ महागंगाधर चूर्ण

धातकी आमलकी पयोधरवृकी, कट्वंग यष्टीमधु, श्रीजव्य, आम्रफलका गुदा (पखुआ) नागर, विषा, लोध्र तथा इन्द्रयव को बराबर हिस्सा में मिलाकर चावल के जल में मिला दें इससे महागंगाधर चूर्ण बनता है। इससे जीर्ण अतिसार का नाश होता है।।71।।

## अथ अतिसार लेप

सोंठ, वचा, लौंग मोचरस तथा अजमोदा का चूर्ण तक्र के साथ सेवन करने से उग्र अतिसार दूर हो जाता है।।72।।

**मैथिलीः–**

धातकी, आमलकी, पयोधरवृकी, कट्वंग, यष्टीमधु, श्रीजव्य, आम्रफलक पखुआ, नागर, विषा, लोध्र, तथा इन्द्रयव कँ वरावरि हिस्सा मे मिला कए तण्डुलक जल मे मिला दिऔक। एहि सँ महागंगाधरचूर्ण बनैत अछि। एहि सँ जीर्ण अतिसार क नाश होइत अछि।।71।।

## (इति महागङ्गाधरचूर्णम्)

भैषज्यरत्नावली क अनुसार नागर मोथा, सोना पाठा, सोंठ, धायक फूल, लोध्र, नेत्रवाला, बेलगिरि, मोचरस, पाठा, इन्द्रयव, कूड़ाक छाल, आमक गुठली क गिरी, मजीठ, तथा अतीस क समान भाग मे चूर्ण कए लिअ। मधु तथा चाउरक धोएल पानि क संग सेवन करबाक चाही। (भैषज्यरत्नावली–171)

## (अथ अतिसार लेप)

सोंठि, वचा, कुसुम, लवंग मोचरस एवं अजमोदा (अजमाइन) क चूर्ण तक्र क संग सेवन सँ उग्र अतिसार दूर भए जाइत अछि।। (कुसुम लवंग क नाम थिक)।

जातीफलाम्रबीजाहिफेनविल्वप्रलेपनम्।
नाभेः समंततः शीघ्रं अतिसारं निवारयेत्।।73।।

**(अथ अतिसारप्रशमनम्)**

**नागरातिविषा मुस्ता–भूनिम्बाम्रातवत्सकैः।**
**सर्वज्वरहरः क्वाथः सर्वातीसारनाशनः।।74**
**ह्रीवेरातिविषा मुस्ता विल्वधान्यकनागरैः।**
**पिवेत्पिच्छा विबन्धघ्नं शूलदोषमपाचनम्।।75।।**

**हिन्दी:–**

**(अथ अतिसार प्रशमन)**

जातिफल आम्रबीज (पखुआ) अहिफेन एवं बेल को नाभि पर लगाने से अतिसार का निवारण होता है।।73।।

नागर अतिविषा, मुस्ता, भूनिम्ब, आम्र, तथा आतबत्सक का क्वाथ सब प्राकर के अतिसार को नष्ट कर देता है।।74।।

ह्रीवेर, अतिविषा, मुस्ता, बिल्व, धनिया तथा नागरको पिच्छा बनाकर पीने से कब्जियत का नाश होता है एवं शूल और अपाचन नष्ट हो जाता है। रक्त सहित अतिसार तथा ज्वर का भी इससे नाश होता है।।75।।

**मैथिली:–**

**(अथ अतिसार प्रशमन)**

जातीफल, आम्रबीज (पखुआ) अहिफेन (हफीम) एवं बेल कें नाभि पर प्रलेपन सॅं अतिसार क निवारण होइत अछि।।73।।

नागर, अतिविषा, मुस्ता, भूनिम्ब, आम्र तथा आतवत्सक क क्वाथ सब प्रकारक अतिसार क नाश करैत अछि।।74

भाव प्रकाश मे श्लोक अछि–

**नागरातिविषाभुस्ताऽमृताभूनिम्बवत्सकैः।**
**क्वाथः सर्वज्वरान् हन्ति चातिसारसुदारूणम्।।(भा. प्र. 589)**

अर्थात् सोंठि, अतीस, नागरमोथा, गुड़ीच, चिरायता तथा कुडाक छाल, सब केर क्वाथ सर्वज्वर तथा अतिसार क नाश करैत अछि।।74

ह्रीवेर, अतिविषा, मुस्ता, विल्व, धनिया, एवं नागर क पिच्छा बनाय पीला सॅं कब्जियत तथा शूलदोष एवं अपाचन दूर भए जाइत अछि।।75।।

सरक्तं हन्त्यपस्मारं सज्वरं वाथ विज्वरम्।
विल्वमोचरसं चेन्द्रयवं लोध्रं च धातकी।।76।।
सगुडा गुटिका कार्या सर्वातिसारनाशिनी।
वैरं सौवर्चलं हिंगु वचा चातिविषा शिवा।
तप्तोदकेन संपीतं आमातीसारनाशनम्।। 77।।

(इत्यतिसारः)

(अतिसारग्रहणी रोग प्रतिकारः)

**धान्यं विल्वं नागरं च बालकं मुस्तकं तथा।
क्वाथोऽयं पाचनं शूलविबन्धमग्निमांद्यजित्।।78।।**

**हिन्दीः—**

बिल्व, मोचरस, इन्द्रयव, लोध्र तथा धातकी को गुड़ सहित मिलाकर गोला बना लेना चाहिए। उसके सेवन से सब प्रकार का अतिसार नष्ट हो जाता है।।76।।

बदरी, (बेर) सौवर्चल, हिंगु बचा, अतिविषा तथा शिवा इन सबको गर्म जल के साथ पीने से आमातिसार का नाश होता है।।77।।

धान्य, बिल्व, नागर, बालक मुस्तक इन सबका क्वाथ बना लें इसके सेवन से शूल का नाश होता है तथा अग्निमान्द्य दूर होता है। यह भोजन को पचाता है।।78।।

**मैथिलीः—**

रक्त सहित अतीसार तथा ज्वर क एहि सँ नाश होइत अछि।

विल्व, मोचरस, इन्द्रयव, लोध्र तथा धातकी क गुड सहित गोली बनाय सेवन कएला सँ सब प्रकारक अतिसार क नाश होइत अछि।।76

वैर, सौर्वचल, हिंगु, वचा, अतिविषा तथा शिवा एहि सबकेँ गर्म जलक संग पीला सँ आमातिसार क नाश होइत अछि।।77।।

धान्य, विल्व, नागर, बालक, मुस्तक, एहि सबकेर क्वाथ बना ली। ई पाचन, शूल केँ नाशन करैबला तथा अग्नि मान्द्य केँ दूर करैवला होइत अछि।।78।।

**घुणप्रियामृताशुंठी मुस्ताचूर्ण पिवेन्नरः।**
**तप्तोदकेन शूलामसंग्रहारूचिनाशनम्।।79**
**पाठाब्दलज्जालोध्रंच कुटजामृतधान्यकं**
**बालकं धातकी विश्वविल्वमेषां कषायकः।।80।।**
**ग्रहणीमतिसारं च नाशयेदामपाचनः।**
**(इत्यतिसारग्रहणीरोगप्रतिकारः)**
**मरीचमहौषधीचित्रकसूरणभागः यथोत्तरं द्विगुणसमः।**
**सर्वसमो गुडभागः प्रोक्तोऽयं मोदकः प्रसिद्धफलम्।।82।।**
**ज्वलनं ज्वलयति जठरमुन्मीलयति शूलगुल्म—**
**गदान् निःशेषयति श्लीपदमर्शांसि नाशयत्याशु।।83।।**

**हिन्दीः—**

घुणप्रिया, अमृता, सुन्ठी एवं मुस्तक के सेवन से शूल, आम, संग्रहणी, अरूचि आदि का नाश होता है।।79।।

पाठा, अब्द लज्जा, लोध्र, कुटज, इन सबका कषाय बना लें। यह औषधि संग्रहणी, अतिसार तथा आम का नाश करता है। यह एक पाचन कषाय औषधि है जो अतिसार को नाश करता है।।80।।

मरीच, महौषधि, चित्रक तथा सूरण को क्रमशः दुगुनी मात्रा में मिलाकर फिर सभी भाग के बराबर गुड़ मिलाकर लड्डू बना लें। यह प्रसिद्ध फल मोदक कहलाता है। इसके सेवन से ज्वलन शांत होता है। जठरानल उद्दीप्त हो जाता है। शूल तथा गुल्म का नाश होता है।।82—83।।

**मैथिलीः—**

घुणप्रिया, अमृता, शुंठी, एवं मुस्ता क चूर्ण गर्म पानि क संग पीबाक चाही। एहि सँ शूल, आम, संग्रहिणी, अरूचि आदि केर नाश होइत अछि।।79।।

पाठा, अब्द, लज्जा, लोध्र, कुटज, अमृत, धातकी, बालक, धान्यक, एवं विल्व एहि सब केर कषाय बनाली। ई औषधि संग्रहणी, अतिसार तथा आम(ऑव) क नाश करैत अछि। ई पाचन कषाय होइत अछि।।80।।

**(अथ अर्श प्रतिकार)**

मरीच, महौषधि, चित्रक, ओल कें क्रमशः द्विगुण मात्रा मे मिलाय पुनः सम्पूर्ण भाग क वरावरि गुड मिला कए लड्डू बनेबाक चाही। ई प्रसिद्ध फल मोदक कहबैत अछि। एहि सँ ज्वलन शान्त होइत छैक, जठरानल उद्दीप्त होइत छैक, शूल, गुल्म एवं अन्यरोग, श्लीपद तथा अर्श पूर्णरूप सँ दूर भए जाइत अछि।।82—83।।

सैधवेन्द्रयवौ शुंठी विल्वचवकचित्रका।
चूर्ण तक्रेण पातव्यम् अर्शसां नाशनं परम्।।84।।
सूरणश्च वचा शुंठी मुसुली कुटजासमम्।
चूर्ण तक्रेण पातव्यमर्शसां नाशनं परम्।।85।।
लवणत्रितयं शुंठी पथ्याक्षारो यवानिका।
कृष्णा हिंगु विडंगंच चूर्ण सर्पिस्समन्वितम्।।86।।
शूलगुल्मविशूचीघ्नमर्शो जीर्णविनाशनम्।।87।।

**हिन्दी:–**

**(अथ अर्श प्रतिकार)**

सेंधानमक, इन्द्रयव, सोंठ बिल्व, चवक चित्रक, इन सबको मिलाकर चूर्ण को तक्र के साथ पीने से अर्श रोग नष्ट हो जाता है।।84।।

शूरण (ओल) बचा, सोंठ, मुसली एवं कुटज को समान मात्रा में चूर्ण करके तक्र के साथ पीना चाहिए। इससे सब प्रकार का अर्श नष्ट हो जाता है।।85।।

तीन प्रकार का नमक, सोंठ पथ्या, खार एवं जवानिका, कृष्ण, हिंग, विडंग का चूर्ण बनाकर उसे घी में मिला दें। इसके सेवन से गुल्म,शूल, विशूची एवं जीर्ण अर्श का नाश होता है।।86–87।।

**मैथिली:–**

ई श्लोक भाव प्रकाश (पृ. 606) मे सेहो अछि। ओतय टीका मे लिखल अछि कालीमिरच 1 तोला, सोंठि 2 तौला, चित्रक क छाल 4 तौला, जमीकन्द 8 तौला एवं सब केर बरावर 20 तौला गुड़ मिला दिऔक। पुनः एक एक तौलाक गोली बना लिअ। एकर नाम लघुसूरणमोदक थिक। ई जठराग्नि कें प्रज्वलित करैत अछि, शूल तथा गोला कें जड़ि सॅ दूर करैत अछि। श्लीपद कें नाश करैत अछि। अर्श (ववासीर) के सेहो दूर करैत अछि। भाव प्र. पृ. 606।।

सैन्धवनमक, इन्द्रयव, सोंठि, विल्व, चवक, चित्रक एहि सब केर मिलल चूर्ण कें तक्रक संग पीबाक चाही। एहि सॅ अर्श रोग नष्ट भए जाइत छैक।।84।।

शूरण(ओल) वचा, सोंठि, मुसुली, एवं कुटज कें समान मात्रा मे मिला कए चूर्ण कए तक्र क संग पीबाक चाही। एहि सॅ सब प्रकारक अर्श नष्ट भए जाइत अछि।।85।।

तीन प्रकारक नून, सोंठि, पथ्या, खार, एवं यवानिका, कृष्णा, हिंगु, विडंग क चूर्ण बनाय सर्पि(घृत) क संग मिला दिऔक। एहि सॅ गुल्म, शूल, विशूची एवं जीर्ण अर्शक नाश होइत अछि।। (86–87)

(इत्यर्शप्रतिकारः)

(अथ भगन्दरप्रतिकारः)

निशामलकदन्तीनां लेप कार्यो भगन्दरे।
त्रैफलेन रसेनापि विडालास्थि प्रलेपनम्।।88।।
जाती पत्रामृताशुंठी सैन्धवं वटपल्लवाः।
हरिद्रासहितो लेपो भगन्दरहरः परः।।89
कर्षैकमरिचैः सार्द्ध रस कर्पूरसंज्ञकम्।
त्रिंशद्दिने समश्नाति पयोन्नाशी भंगदरी।।90।।
उपदंशी वातरक्ती सर्वथा स सुखी भवेत्।

**हिन्दीः—**

## अथ भगन्दर प्रतिकार

निशा (हल्दी) आमलक तथा दन्ती का लेप भगन्दर पर करना चाहिए। त्रिफला के रस से विड़ालक करना भी लाभकारक है।।88।।

जाती, पत्र, अमृता, सोंठ सेन्धानमक एवं वट का पल्लव तथा हरिद्रा का चूर्ण लेप करने से भगन्दर नष्ट हो जाता है।।89।।

एक कर्ष (मात्रा विशेष) मरीच तथाउसका आधा रसकपूर का तीस दिनों तक प्रयोग करने से भगन्दर नष्ट हो जाता है। भगन्दर उपदंश (लिंग के रोग) तथा वातरक्त के रोगी को कष्ट से मुक्त करता है।।90।।

**मैथिलीः—**

## (अथ भगन्दरप्रतिकार)

निशा (हरैद), आमलक एवं दन्ती क लेप भगन्दर पर करबाक चाही। त्रिफला क रस सँ विडालक से हो ओहिठाम करबाक चाही।।88।।

जातीपत्र, अमृता, सोंठि, सैन्धव एवं बट क पल्लव तथा हरिद्रा क चूर्ण सहित लेप कएला सँ भगन्दर विलुप्त भए जाइत अछि।।89।।

एक कर्ष(मात्राविशेष) मरीच तथा ओकर आधा रसकपूर क 30 दिन तक प्रयोग कएला सँ भगन्दर नष्ट भए जाइत छैक। भगंदर, उपदंश (लिङ्गक रोग), वात रक्त आदि सँ रोगी मुक्ति पाबि सुखी भए जाइत अछि।।90।।

(अथ उदरगुल्मप्रतिकारः)
एलकं देवपुष्पं च टंकणं समभागकम्।
त्रिभिः समं सारकं च टंकैकमुदरे हितम्।।91।।
पिष्टं तण्डुलजं टंकं त्रितयं स्नुक्दुग्धमिश्रितम्।
तदापूपं घृते पक्वं प्रातः खादेत्कवोष्मकैः।।92।।
विरेके नोदनं सर्वं नाशमायाति निश्चितम्।
शरपुंखाभवं मूलं तक्रेणोदरनाशनम्।।93।।

हिन्दीः—

## अथ उदरगुल्म प्रतिकार

एलक, (इलायची) देव पुष्प (लौंग) एवं टंकण को बराबर मात्रा में मिलाकर उसके तीनों भाग के बराबर सारक मिला दें। टंकक के मात्रा में उसके सेवन करने से उदर रोगों में लाभ होता है।।91।।

तण्डुल को पीसकर सेहुण्ड के दूध में मिलाकर उसे घी में पका लें। उस माल– पुआ को सुबह–सुबह खाना चाहिए। यह मालपुआ न ज्यादा ठंडा और न ज्यादा गर्म रहना चाहिए। इस प्रकार के विरेचक भोजन से सब प्रकार का दोष दूर हो जाता है।।92।।

शरपुंखा के मूल को तक्र के साथ सेवन करने से उदर रोग का नाश होता है।।93।।

मैथिलीः—

## (अथ उदर गुल्मप्रतिकार)

एलक (इलायची), देवपुष्प (लवंग) एवं टंकण कँ वरावरि भाग मे मिला कए ओहि तीनू योग क वरावरि सारक मिला कए 1 टंक क मात्रा मे सेवन कएला सँ उदर रोग मे लाभ होइत छैक।

तण्डुलक पीसल तीन तीन टंक मे स्नुक्दुग्ध (सेहुण्डक दूध) मिलाय घी मे पकाओल मालपुआ प्रातःकाल खएबाक चाही। ई मालपुआ ने वेशी ठंडा आने वेशी गर्म रहबाक चाही। एहि प्रकारक विरेचक भोजन सँ सब प्रकार क दोषक नाश भए जाइत अछि।।

शर पुंखाक मूल कँ तक्र क संग सेवन कएला सँ उदर रोग क नाश होइत अछि।।91–93।।

(अथ शोथप्रतिकारः)

कटु सौभांजनं शुंठी वर्षाभूसुरदारू च।
कांजिकेन कृतो लेपः पीडाशोथनिवारणः।।94।।
कृष्णाग्निविश्व घनजीरक कंटकारी,
पाठा निशा करिकणामगधाजटानाम्।
चूर्णं कवोष्णसलिलैरवलोड्यपीतं
नातः परं श्वयथुरोगहरं नराणाम्।।95।।
कासश्वासामवाताग्निमांद्यरूक्प्लीहनाशनम्।

**हिन्दीः—**

## अथ शोथ प्रतिकार

कटुकी, सौभांजन , सोंठ वर्षाभू, सुरदारू एवं कांजिक के लेप से पीड़ा तथा शोथ का निवारण होता है।।94।।

कृष्णा, ( पीपरी) अग्नि (चित्रक), विश्व (सोंठ), जीरक कट्कारी पाठा, निशा (हल्दी), गजपीपरी (करिकणा) मागधी एवं जटा का चूर्ण समशीतोष्ण जल के साथ सेवन करने से शोथ रोग दूर हो जाता है। शोथ रोग के लिए आयुर्वेद शास्त्र में इससे बढ़कर दूसरी दवा नहीं है। इस दवा से कास आमवात, अग्निमांद्य तथा प्लीहा आदि का नाश होता है।।95।।

**मैथिलीः—**

## (अथ शोथ प्रतिकार)

कटुकी, सौभांजन (मुनिगा, सोहिजन) सोंठि, वर्षाभू, सुरदारू (देवदारू) एवं कांजिक क लेप सँ पीड़ा तथा शोथ क निवारण होइत छैक।।94।।

कृष्णा (पीपरि) अग्नि (चित्रक) विश्व (सोंठि) जीरक (जीर) कंटकारी, पाठा, निशा (हरैद) गजपीपरि (करिकणा), मागधी, एवं जटाक चूर्ण सुसुम जलक संग मिला कए पीला सँ शोथरोग निश्चित दूर भए जाइत छैक। शोथरोग क हेतु एहि सँ बढ़ि कें औषधि नहि अछि। एहि सँ कास, आमवात, अग्निमान्द्य, तथा प्लीहा इत्यादि नष्ट भए जाइत छैक।।95।।

(अथ आमवातोदरप्रतिकारः)

उष्ट्रीदुग्धं यथा पथ्यमामवाते तथोदरे।
निरन्नस्य तदा नान्यद् भेषजं पृथिवीतले।।96।।
शुंठी विडंगं सुरदारू पथ्या कटुस्मकेनाम–महद्‌गदघ्नम्।
दार्वीन्द्रबीजं मरीचं विडंगं घुणप्रियैरण्ड–जटात्रिवृत् च।।97।।
मूलं पुनर्नवायाश्च निशायुग्मामृतायुतम्।
शोफोदरहरः क्वाथो मूत्रगुग्गुलसंयुतः।।98

**हिन्दीः—**

## आमवातोदर प्रतिकार

ऊँट का दूध आमवात तथा उदर रोग में बहुत लाभदायक होता है अगर कोई व्यक्ति भूखा रहकर मात्र ऊँट के दूध का सेवन करे तो उससे बढ़कर आमवातोदर की दूसरी कोई दवा इस पृथ्वी पर नहीं है।।96।।

दार्वी इन्द्रबीज, मरीच, विडंग, घुणप्रिया एरण्ड (अण्डी) जटा, त्रिवृत् पुनर्नवा का मूल भाग दो प्रकार की हल्दी तथा अमृता इन सबको मिलाकर जो औषधि बनती है वे शोफोदर के लिए बहुत उपयुक्त है। मूत्र एवं गुग्गुल से युक्त क्वाथ भी इसमें लाभप्रद होता है।।97—98।।

**मैथिलीः—**

## (अथ आम वातोदर प्रतिकार)

उष्ट्रीक दूध आमवात तथा उदर रोग मे बड़ लाभप्रद होइत अछि। यदि भूखल रहि मात्र ऊटक दूधक सेवन करी तॅ ओहि सॅ बढ़ि कॅ पृथ्वी पर दोसर औषधि नहि अछि।।96।।

सोंठि, विडंग, सुरदारू एवं पथ्या कॅ गर्म जलक सेंवन कएला सॅ बहुत प्रकार क रोग नष्ट भए जाइत अछि।।

दार्वी, इन्द्रबीज, मरीच, विडंग, घुणप्रिया, ऐरण्ड (अण्डी), जटा, त्रिवृत्, पुनर्नवा क जड़ि, दू प्रकार क हरैद सॅ युक्त अमृता एहि सब से मिलल औषधि शोफोदर क हेतु बड़नीक होइत अछि।। मूत्र एवं गुग्गुल सॅ युक्त क्वाथ से हो लाभप्रद होइत अछि।। (97—98)

(अथ उदर कृमिनाशनम्)

तप्तोदकेन संपीतं विडंगं त्रिवृता वरा।
ृमिघ्नमुक्तमथवा त्रिकटु त्रिफला त्रिवृत्।।99।।
वचा विडंगकुटअं निम्बत्वक्खदिरं समम्।
अजामूत्रेण सप्ताहादु कृमिनाशनम्।।100।।

(अथ शूलप्रतिकारः

शुंठी पुष्करमूलं च हिंगुसौवर्चलान्वितम्।
तप्तोदकेन संपीतं गुल्माध्मानरूजापहम्।।101।।
त्रिकटुकमजमोदा सैन्धवं जीरके द्वे
समधरणतानामष्टमो हिंगु भागः।
प्रथमकवलमुक्तं सर्पिसा चूर्णमेतत्
जनयति जठराग्निं वातरोगान्निहन्ति।।102।।

**हिन्दीः—** **अथ उदर कृमिनाश**

गर्म जल के साथ विडंग त्रिवृत् तथा बरा का सेवन से पेट के कीड़े मर जाते है अथवा त्रिकटु, त्रिफला त्रिवृत् बचा, विडंग कुटज नीम का छाल तथा खदिर को समान मात्रा में मिलाकर बकरी के मूत्र के साथ पीने से पेंट के सब कीड़े मर जाते है।। 99—100।।

सोंठ, पुष्करमूल, हिंग और सौवर्चला को तप्त पानी के साथ पीने से ल्म रोग तथा डकार आदि दूर हो जाता है।।101।।

त्रिकटु अजमोदा, सेंधानमक और दोनों प्रकार के जीर को समान भाग मिलाकर उसका आठवाँ भाग हिंगु मिला देना चाहिए। खाने के समय प्रथम कवल में घी के साथ उसके चूर्ण को खाना चाहिए इससे जठराग्नि तेज होता ह तथा वात रोग का नाश होता है।।102।।

**मैथिलीः—** **(अथ उदरकृमिनाश)**

गर्म जलक संग विडंग, त्रिवृत् तथा वरा क सेवन सँ पेटक कीड़ा मरि जाइत छैक। अथवा त्रिकटु, त्रिफला, त्रिवृत्, वचा, विडंग, कुटज, निम्बक छाल एवं खदिर क समान मात्रा कें वकरीक मूत्र क संग पीला सँ एक सप्ताह क अभ्यन्तर पेट क सब कीड़ा मरि जाइत अछि।। (99—100)।।

**(अथ शूलप्रतिकार)**

सोंठि, पुष्करमूल, हिंगु, सौवर्चला कें तप्त जलक संग पीला सँ गुल्मरोग तथा ढेकार आदि दूर भए जाइत अछि।।101।।

त्रिकटु, अजमोदा, सैन्धव, दूनू प्रकार क जीर कें समान भाग मे मिलाय आठम भाग हिंगु मिलेबा क चाि। खएबा क काल प्रथम कवल (कौर) मे घृत क संग एकर चूर्ण खएबाक चाही। एहि सँ जठराग्नि तेज होइत अछि एवं वात रोग क नाश होइत अछि। (ई हिंग्वष्टक चूर्ण थिक)।।102।।

शुंठी हरीतकी कृष्णा त्रिवृत् सौवर्चलं समम्।
तप्तोदकेन संपीतं चूर्णं शूलहरं परम्।।103।।
तुवरं पौष्करं हिंगु यवक्षारो यवानिका।
लवणत्रितयं पथ्या विडंगं समभागकम्।।104।।

**हिन्दीः—**

सोंठ हर्रे, कृष्णा, (पीपरी) त्रिवृत् तथा सौवर्चल इन सब वस्तुओं को बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बना ले । गर्म जल के साथ उसके चूर्ण को खाने से शूल नष्ट हो जाता है।।103।।

तुवर, पौष्कर, हिंग यवक्षार तथा यवानिका एवं तीनों प्रकार के नमक पथ्या और विडंग को समभाग में मिला लें। इसके तीन भाग त्रिवृत् मिलाकर चूर्ण बना लें और गर्म जल के साथ उसको पीना चाहिए। इसके सेवन से गुल्म, अध्मान, आमवात और शूल नष्ट हो जाता है।।104।।

**मैथिलीः—**

भाव प्रकाश मे सेहो ई श्लोक अछि। ओतय हिन्दी मे व्याख्या क अनुसार सोंठि, पीपरि, मरीच (त्रिकटु), अजमोदा (अजमाइन), सैन्धवनमक, सफेद एवं काला जीरा, एहि सात वस्तुक सात भाग तथा आठम भाग भूजल हिंगु मिला कए चूर्ण कए लिअ। छ मासा सँ 1 तौला पर्यन्त चूर्ण घृतक संग प्रथम कवल मे खेबाक चाही। एहि सँ जठराग्नि तेज होइत अछि तथा वातरोग नष्ट भए जाइत अछि।।

सोंठि, हरीतकी, कृष्णा (पीपरि), त्रिवृत् तथा सौवर्चल एहि सब वस्तु कँ वरावरि मात्रा मे मिलाय यदि गर्म जलक संग चूर्ण क सेवन करी तँ शूलरोग दूर भए जाइत अछि।।103।।

तुवर, पौष्कर, हिंगु, यवक्षार, तथा यवानिका एवं तीनू प्रकार क लवण, पथ्या, विडंग, सबकेँ समाभाग मे मिला कए तकर तीन भाग त्रिवृत् मिलाय चूर्ण बनाली एवं उष्ण जलक संग जे पीबैत छथि हुनका गुल्म, अध्मान, आमवात तथा शूलरोग शीघ्र दूर भए जाइत अछि।। 104।।

त्रिवृत्त्रिभागं तच्चूर्णं उष्णनीरेण यः पिवेत्।
गुल्माध्मानमामवातं शूलमाशु व्यपोहति।।105।।
त्रिकटु स्वर्जिकाचूर्णं शूलघ्नं कोष्मनीरयुक्।।

**(अथ पाण्डुकामलाप्रतिकारः)**

**त्रिफला कटुकी निम्ब किराताम‍ृत सारिका।**
**क्वाथोऽयंमधुतापाण्डुकामलारोगनाशनः।।106।।**
**निशामलकचूर्णं तु कटुत्रयसमन्वितम्।**
**सर्पिर्मधुभ्यां सलीढं कामलापाण्डुनाशनम्।।107।।**
**द्विनिशा त्रिफला तिक्ता लोहचूर्णं ततोऽधिकम्।**
**शिवा गैरिक रात्रिणामञ्जनं कामलापहम्।।108।।**

**हिन्दीः—**

त्रिकटु तथा स्वर्जिका खार के चूर्ण को थोड़ा गर्म जल के साथ सेवन करने से शूल रोग नष्ट हो जाता है। त्रिफला, कटुकी, नीम चिरायता अमृत तथा सारिका (जैफर) इन सभी वस्तुओं का क्वाथ मधुरोग पाण्डु तथा कमला रोग का नाश करता है।।105—106।।

**अथ क्षय रोग प्रतिकार**

निशा, (हल्दी) आमलक एवं कटुत्रय (सोंठ पीपरी और मरीच) के चूर्ण को घी और मधु के साथ सेवन करने से कामला एवं पाण्डु रोग नष्ट हो जाता है।।107।।

दोनों प्रकार की हल्दी, त्रिफला, तिक्ता तथा लौहचूर्ण सबकों मेलाकर सेवन करने से कमलारोग नष्ट हो जाता है। शिवा गैरिक तथा हल्दी का अंजन भी कमला रोग को दूर करता है।।108।।

**मैथिलीः—**

त्रिकटु एवं स्वर्जिकाखार क चूर्ण सुसुम जलक संग सेवन कएला सँ शूल रोग नष्ट भए जाइत अछि।।105।।

**(अथ पाण्डुकामलाप्रतिकार)**

त्रिफला, कटुकी, नीम, चिरायता, अमृत, तथा सारिका (जयपाल), एहि सब वस्तुक क्वाथ मधुरोग, पाण्डु एवं कामलारोग कें नाश करैत अछि।।106।।

निशा (हरैद) आमलक एवं कटुत्रय (सोंठि, पीपरि, मरीच) क चूर्ण घी एवं मधुक संग मिला कए सेवन कएला सँ कामला एवं पाण्डु रोग नष्ट भए जाइत अछि।।107।।

दूनू प्रकारक हरैद, त्रिफला एवं तिक्ता एवं लोहचूर्ण सबके मिला कए सेवन कएला सँ कामला रोग नष्ट भए जाइत अछि। शिवा, गैरिक तथा हरदि क अ०जन सँ सेहो कामला रोग नष्ट भए जाइत अछि।।108।।

देवदालीफलं पिष्ट्वा पोटल्यास्तनुवाससा।
उच्छिन्दनान्मुहुर्नास्या स्रावान्नस्यन्ति कामलाः।।109अ।।

(इति पाण्डुकामलाप्रतिकारः)

(अथक्षयरोग प्रतिकारः)

अश्वगंधा कणा शुंठी लवंगं ससितोपलम्।
चूर्ण क्षयघ्नं गुटिका लवंगार्कप्रसूनता।।109ब।।

**हिन्दीः—**

देवदाली के फल को पीस कर पतले कपड़े मे पोटली बनाकर नाक में उच्छित् करने से नाक से स्राव होता है। जिससे कमला रोग नष्ट हो जाता है।।109अ।।

अश्वगन्धा, कणा, शुण्ठी, लवंग तथा मिसरी के चूर्ण को सेवन करने से क्षय रोग दूर होता है। लौंग के अर्क को मिलाकर गोली बनाकर खाने से भी आराम मिलता है।।109ब।।

**मैथिलीः—**

देवदाली क फल कें पीसि पातर कपड़ा मे पोटली बनाय नाक मे उच्छिन्न कएला सँ नाक सँ श्राव होइत अछि जाहि सँ कामला रोग नष्ट भए जाइत अछि।।109अ।।

## (अथ क्षयरोगप्रतिकार)

अश्वगन्धा, कणा, शुंठी, लवंग तथा मिसरी क. चूर्ण क सेवन क्षयरोग कें दूर करैत अछि। लवंगक अर्क मिलाय गुटिका सेहो लाभप्रद होइत अछि।।109ब।।

त्रिकटु त्रिफला मुस्ता विडंगं सुरदारू च।
चातुर्जातं लवंगं च पद्मबीजं कणा जटाः।।110।।
सरास्नाचूर्णमेतेषां द्विसितं क्षयनाशनम्।।

(इति क्षयरोगप्रतिकारः)

(अथ हिक्का प्रतिकारः)

माक्षिका विसुता लाक्षारसाद्धिक्का निवर्तते।
नावनादथ धूमेन शिवारात्रिभवेन च।।111।।
लवंगं मरिचं विल्वं सितां मधुयुतां लिहेत्।
हिक्कार्तो वा यवानस्यं देयं सैन्धवनीरजम्।।112।।

(इति हिक्काप्रतिकारः)

**हिन्दीः—**

त्रिकटु, त्रिफला, मुश्ता, विडंग, सुरदारू, चातुर्जातलौग, पद्मबीज, कणा, जटा तथा रसना के चूर्ण को सेवन करने से क्षय रोग निश्चित रूप से नष्ट हो जाता है।।110।।

**अथहिक्का प्रतिकार**

माक्षिक, विसुता एवं लाक्षा के रस से हिक्का दूर हो जाता है। हर्रे था हल्दी को आग पर डालने से उस धुआँ से नावन प्रक्रिया द्वारा हिक्का कम हो जाता है।।111।।

लौंग, मरीच, बिल्व एवं मिश्री को मधु में मिलाकर चाटना चाहिए इससे हिक्का कम हो जाता है वायु एवं सर्दी में सेंधा नमक से युक्त नस्य भी देना चाहिए।।112।।

**मैथिलीः—**

त्रिकटु, त्रिफला, मुस्ता, विडंग, सुरदारू, चातुर्जात, लवंग, पद्मबीज, कणा, जटा तथा रासना क चूर्ण क सेवन सँ क्षयरोग निश्चित रूपेँ नष्ट भए जाइत अछि।।110—111।।

**(इति क्षयरोग प्रतिकार)**

**(अथ हिक्का प्रतिकार)**

माक्षिक, विसुता एवं लाक्षा क रस सँ हिक्का दूर होइत अछि। एवं हर्रे तथा हल्दी क धुआँ सँ नावन प्रकिया (एक प्रकार क नस्य) सँ हिक्का कम भए जाइत अछि।।112।।

(अथ छर्दिप्रतिकारः)

**एलालवंगगजकेसरकोलमज्जा–**
**लाजाप्रियंगुघनचन्दनपिप्पलीनाम् ।।113।।**
**चूर्णानि माक्षिकसिता सहिता निलीढा–**
**छर्दिर्जयन्ति कफमारूतपित्तजाताम् ।।114।।**
**लाजालवंगमेला च पद्मबीजं सुचूर्णितम् ।**
**सिता मधुयुतो लेहो छर्दिरोगहरः परः ।।115।।**

**हिन्दी:–**

## अथ छर्दि प्रतिकार

एला (इलायची) लौंग,गजकेसर, कोलमज्जा, बैर की गुंठली लाजा, (खील),प्रीयंगु मोथा, चन्दन एवं पीपली का चूर्ण बना लें। मधु तथा मिश्री के साथ उसका सेवन करें। इससे कफ वायु एवं पित्त से उत्पन्न छर्दि नष्ट हो जाता है।।113–114।।

लाजा, लौंग इलायची तथा पद्मबीज के चूर्ण को मिश्री तथा मधु के साथ सेवन करने से छर्दि रोग दूर हो जाता है।।115।।

**मैथिली:–**

लवंग, मरीच, विल्व एवं मिसरी कें मधु सॅं युक्त चटबाक चाही। एहि सॅं हिक्का कम होइत अछि। हिक्का मे सैन्धवनीर सॅं युक्त नस्य से हो देबाक चाही।।113।।

## (अथ छर्दि प्रतिकार)

एला (इलायची), लवंग, गजकेसर, कोलमज्जा, (वैर क गुठली), लाजा (खील), प्रियंगु, मोथा, चन्दन एवं पीपरि क चूर्ण कए मधु एवं मिसरी क संग मिला कए चाटला सॅं कफ, वायु एवं पित्त सॅं उत्पन्न छर्दि नष्ट भए जाइत अछि।।114।।

लाजा, लवंग, इलायची, पद्मबीज कें चूर्ण कए मिसरी तथा मधु क संग सेवन कएला सं छर्दि रोग दूर भए जाइत अछि।।115।।

(इति छर्दिप्रतिकारः)

(अथ कासश्वासप्रतिकारः)

**कर्कटाब्दत्रिकटुकं शटी पद्मा च पौष्करम्।**
**तप्तोदकेन संपीतं श्वासकासनिवारणम्।।116।।**
**सवासा बृहती शुंठी पौष्करं सकुलर्ककम्।**
**भार्गी कर्कटश्रृङ्गीच कणाशुंठी विभीतकम्।।117।।**
**कन्यारसेन गुटिका मुखस्था कासनाशिनी।।**
**वासाशुंठीकणा चूर्णं मधुना कासनाशनम्।।118।।**

**हिन्दीः–**

### अथ कासश्वास प्रतिकार

करकट, अब्द, त्रिकटु, शटी पद्मा तथा पौष्कर के चूर्ण को गर्म जल के साथ प्रयोग करने से खाँसी तथा कांस दूर हो जाता है।।116।।

वासक, बृहती, सोंठ, पौष्कर सकुलर्क भार्गी काकरा श्रङ्गी कणा विभीतक इन सब को पीसकर घृत कुमारी के रस में गुटिका बनाकर मुख में रखने से खांसी दूर हो जाती है।।117।।

वासा, सोंठ, तथा पीपरी के चूर्ण को मधु के साथ सेवन करने से ांसी दूर हो जाती है।

वचा, कणा सोंठ तथा वासक को गर्म पानी के साथ अगर सेवन ्या जाय तो सर्दी खांसी दूर हो जाती है। सोंठ, वासक, पिप्पली, व्य, तथा व्याघ्री का चूर्ण के सेवन करने से कास भश्वास नष्ट हो जाता है।।118।।

**मैथिलीः–**

### (अथ कासश्वास प्रतिकार)

कर्कट, अब्द, त्रिकटु, शटी, पद्मा तथा पौष्कर क चूर्ण कैं जॅ गर्म जलक संग सेवन करी तॅ श्वास तथा कास शान्त भए जाइत अछि।।116।।

वासक,बृहती, सोंठि, पौष्कर, सकुलर्क (?) भार्गी, काकरा श्रृङ्गी, कणा, विभीतक एहि सब कैं घृतकुमारिक रस मे गुटिका बनाय मुख मे रखला सॅ ओकासी दूर भए जाइत अछि।।117।।

वासा, सोठि तथा पीपरि क चूर्ण मधुक संग सेवन कएला सॅ ओकासी दूर भए जाइत अछि।।118।।

सवचा सकणा शुंठी वासा तद्वत्कटुष्मकैः।
शुंठीवासा कणा चव्यं व्याघ्रीचूर्णं ततोऽधिकम्।।119।।
अमृतवराटमरिचैर्द्विपंचनवभागयोजितैर्गुटिकाः।
मरिच समार्द्रकरसजा वात कफाध्मानकासघ्नी।।120।।

(इति कासश्वास प्रतिकारः)

(अथ अग्निमान्द्यप्रतिकारः)

त्रिकटु त्रिफला हिंगु वरं दीप्यं गुडोऽग्निकृत्।
त्रिकटु त्रिफला वह्निदीप्यं हिंगु त्रिवृद्वरम्।।121।।
सौवर्चलं विडंगं च क्षारो जीरे लवंगकम्।
पुटो निम्बुरसैर्भूयश्चूर्णतो वह्निदीपनम्।।122।।
मन्दाग्निगजसिंहोऽयं चूर्णो लोकेषु विश्रुतः।। 123।।

**हिन्दीः—**

अमृत वराट, एवं मरीच का क्रमशः दो हिस्सा पांच हिस्सा तथा नव हिस्सा मिलाकर गुटिका बना लेना चाहिए अर्थात् 2 तोला अमृत पांच तोल कौड़ी तथा नव तोला मरीच मिलाकर गुटिका बनाना चाहिए। मरीच तथा आद, का रस, वात, कफ तथा डकार में और खांसी में लाभप्रद होता है।।120।।

**अथ अग्निमान्द्य प्रतिकार**

त्रिकटु, त्रिफला, हिंगु बरा ये सब दिव्य होता है अर्थात् उद्दीपक होता है। गुड़ अग्निवर्धक होता है। उसके सेवन से भूख ज्यादा लगती है।।121।।

त्रिकटु तथा त्रिफला अग्निवर्धक होता है। हिंग त्रिवृत् तथा बरा भी अग्नि को तेज करता है। सौवर्चल विडंग खार दोनों प्रकार का जीरा तथा लौंग को चूर्ण करके, नीबू के रस में मिलाकर सेवन करें। यह मन्दाग्नि को दूर करता है। जिस प्रकार सिंह हाथी को वश में करता है। उसी प्रकार यह औषधि मन्दाग्नि को नाश करता है।।122—123।।

**मैथिलीः—**

वचा, कणा, सोंठि, वासक कें गर्म पानिक संग सेवन सॅं कास श्वास मे लाभ पहुॅंचैत छैक।। सोंठि, वासक, पीपरि, चव्य तथा व्याघ्रीक चूर्ण क सेवन कासश्वास मे लाभप्रद होइत अछि।।119।।

अमृत, वराट, एवं मरीच कें कमशः दू हिस्सा पॉच हिस्सा तथा नव हिस्सा मे मिला कए गोटी बने बाक चाही। अर्थात् 2 तोला अमृत, 5 तोला वराट (कौड़ी) तथा 9 तोला मरीच कें मिला कए गोटी बनेबाक चाही। मरीच तथा आद क रस कफ तथा अध्मान (ढेकार) तथा ओकासी मे लाभप्रद होइत अछि।।120।।

## (इति कासश्वासप्रतिकार)
## (अथ अग्निमान्द्यप्रतिकार)

त्रिकटु, त्रिफला, हिंगु, वरा, ई सब दीप्य होइत अछि अर्थात् उद्दीपक होइत अछि। गुड अग्नि कृत् होइत अछि। एकर सेवन सॅ भूख वेशी लगैत अछि।।121।।

त्रिकटु तथा त्रिफला वह्निक दीपन करैत अछि। हिंगु, त्रिवृत्, तथा वरा से हो दीपन थिक।

सौर्वचल, विडंग, खार, दूनू प्रकार क जीर, लवंग, क चूर्ण मे निम्बू क रस मिलाय दिऔक। ई अग्नि दीपक होइत अछि। मंदाग्नि गज क हेतु ई चूर्ण सिंहक समान अछि। अर्थात् जाहि प्रकार सिंह हाथी कें वश मे करैत अछि वा खत्म कए दैत अछि तहिना ई औषधि मन्दाग्नि क नाश करैत अछि।।123।।

(अथ विशूचिका प्रतिकारः)
करपन्मर्दनं तैलैर्विशूच्यां भिषजा मतम्।
पलं चुकं कुष्ठं पिचुयुगमितं सैन्धवकणे–
तदर्धं प्रत्येकं करतलमितं जातिफलकम्।
कटोस्तैलं पक्वं कुवमितमग्न्यावधि श्रृतम्
तदेतच्चुक्रायं शमयति विशूचीश्च सगदा।।124।।

(इति विशूचिकाप्रतिकारः)

**(अथ अण्डशोथप्रतिकार)**

**वरं हिंगुजीरकल्कै कटुतैल पाचनम्।**
**कुरंटघ्नं त्रिफला आज्येऽपि विहितं मूत्रेण गोस्ततोऽप्यधिकम्।125**

**हिन्दीः—**

## अथ विशूचिका प्रतिकार

विशूचिका के रोगी के हाथ पैर में तेल का मर्दन करना चाहिए। यह भी एक दवा है। एक पल चुक्र दो पीचु कुष्ठ, सेन्धानमक एवं पीपली उसका आधा और एक मुठ्ठी जातिफल को सरसो. के तेल में पकाकर कम मात्र में जब बचे तो उस चुक्र को विशूचिका के रोगी को खिलाना चाहिए।।124।।

## अण्डशोथ प्रतिकार

हिंग तथा जीरा के कल्क तथा सरसों के तेल को मिलाकर अण्डकोश के ऊपर पचाने से अण्डकोश कम हो जाता है। कुष्माण्ड तथा त्रिफला को घी के साथ खाने पर तथा गाय के मूत्र के साथ सेवन से अण्डशोथ का नाश होता है।।125।।

**मैथिलीः—**

## (अथ विशूचिका प्रतिकार)

विशूचिका क रोगी कें हाथ तथा पैर मे तेलक मर्दन वैद्यक अनुसार नीक औषधि थिक।

एक पल चुक्र (अम्मत रस), पिचु कुष्ठ सैन्धव नमक एवं पीपरि, तकर आधा, एक मुट्ठी जाती फल कडूतेल मे पकाय जखन किछु कम मात्रा मे बचय तखन ओ चुक्र विशूचिका क प्रशमनार्थ नीक औषधि थिक।।124।।

## (अथ अण्डशोथप्रतिकार)

हिंगु तथा जीर क कल्क एवं कडूक तैल कें पचौला सँ अण्डशोथ कम भए जाइत अछि।

कुम्हर तथा त्रिफला कें घी मे खएला सँ लाभ होइत अछि। गायक मूत्र क संग ओकर सेवन आर लाभप्रद होइत अछि।।125।।

शरपुंखा जटाचूर्ण मासमेकं निरन्तरम्।
ऽ. ऽडवृद्धिविनाशाय टंकैकं सर्पिसा पिवेत्।।126।।
पयसैरण्डतैलं वा सप्ताहं तत्र पाययेत्।
हवुषा जीरकं कुष्ठवचैरण्ड समन्वितम्।।127।।
अण्डशोथहरोलेपः कांजिकेन च वृंहितः।।
(अथ प्रमेह प्रतिकार) (इति अण्डशोथप्रतिकारः)
**दाडिमीपुष्पकलिका खदिरं ससितोपलम्।**
**टंकद्वयमितं चूर्णं प्रमेहघ्नमुदीरितम्।।128।।**
**शिलाजतु ससूक्ष्मैला शंखपुष्पी सितोपलम्।**
**सर्वप्रमेहहरणं एला वा शर्करान्विता।।129।।**
**गुडूची स्वरसा पीतो मधुना सर्वमेहहा।।।130।।**

**हिन्दीः—**

सरपुंखा एवं जटा मांसी के चूर्ण को एक मास तक प्रयोग करने से अण्डवृद्धि का नाश होता है। इसकासेवन एक टंक की मात्रा में घी के साथ होना चाहिए।।126।।

दूध के साथ अण्डी के तेल को एक सप्ताह तक पीने से लाभ होता है। हयुषा, जीर, कुष्ठ वचा तथा अण्डी के तेल के साथ लेप अण्डशोथ को दूर करता है।।127।।

**(अथ प्रमेह प्रतिकार)**

दाडिम के फूल की कली खदिर, कत्था एवं मिसरी के दो टंक मात्रा में चूर्ण करके सेवन करने से प्रमेह रोग दूर हो जाता है।।128।।

शिलाजीत, छोटी इलायची, शंखपुष्पी तथा मिसरी के सेवन से सब प्रकार के प्रमेह दूर हो जाते है इलाचयी, शर्करा, गुडीच आदि का सेवन अगर मधु के साथ किया जाये तो प्रमेह दूर हो जाता है।।129।।

**मैथिलीः—**

शरपुंखा एवं जटामांसी क चूर्ण जँ लगातार एक मास तक प्रयोग कएल जाय तँ ओहि सँ अण्डवृद्धिक नाश होइत अछि। एकर सेवन एक टंक क मात्रा मे घृत क संग हेबाक चाही।।126।।

दूधक संग अण्डी क तेल एक सप्ताह तक पीला सँ लाभप्रद होइत अछि। हपुषा, जीर, कुष्ठ, वचा एवं अण्डीक क कांजिक लेप अण्डशोथ के दूर करैत अछि।।127।।

**(अथ प्रमेहप्रतिकार)**

दाडिम क फूल क कली, खदिर (कथ), एवं मिसरी क दू टंक मात्रा मे चूर्ण क सेवन सँ प्रमेह दूर भए जाइत अछि।।128।।

शिलाजीत, छोटकी इलाइची, शंखपुष्पी, एवं मिसरी क सेवन सँ सब प्रकारक प्रमेह दूर भए जाइत छैक। एला (इलायची, शर्करा, गुडीच आदि क सेवन मधुक संग कएला सँ प्रमेह सब प्रकार क नष्ट भए जाइत अछि।।129।।

(अथ मूत्र कृच्छ्रप्रतिकारः)
एलोपकुल्पामधुकाश्मभेदकौंती स्वदंष्ट्रावृषकोरूवूकैः।
श्रृतं पिवेदश्मजतो प्रगाढं सशर्करं मूत्रगदेऽश्मरीषु।।131।।
वृषैलैरण्डजं चूर्ण दघ्ना कृच्छहरं मतम्।
तथाहि समयः पीतो यवक्षारः सितायुत।।132।।

**हिन्दीः—**

## अथ मूत्र क्रिच्छ्र प्रतिकार

एला (इलायची), पिप्पली, मधुक, अस्मभेद, स्वदन्ष्ट्रा वृषक उरूबुक इन सबको मिलाकर शिलाजीत तथा शक्कर के साथ सेवन करने से मूत्र रोग तथा अश्मरी रोग दूर हो जाता है।।131।।

वृषा इलायची तथा अण्डी के चूर्ण को दही के साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र कम हो जाता है। मूत्रक्रिच्छ्र के रोगी के लिए यह लाभदायक होता है।।132।।

**मैथिलीः—**

## (अथ मूत्रकृच्छ प्रतिकारः)

एला (इलायची) उपकुल्पा (पिप्पली), मधुक, अश्मभेद (पाखाढ़भेद) कौन्ती, स्वदंष्ट्रा, वृषक, उरूवुक एहि सब कैं मिलाय शिलाजीत तथा शक्कर क संग पीला सँ मूत्र रोग तथा अश्मरी दूर भए जाइत अछि।।131।।

वृष, एला तथा अण्डीक चूर्ण के सेवन दही क संग कएला सँ मूत्रकृच्छ कम भए जाइत छैक। यवाखार मिसरीक संग सेहो मूत्रकृच्छ क रोगी क हेतु वेशी लाभप्रद होइत छैक।।132।।

**पिष्ट्वा सुवर्चकोष्मेन कांजिकेन प्रलेपयेत्।**
**रूद्धमूत्रं निहनयाशु रंभाकंदे तथैव च।।133।।**
**हरीतंकी गोक्षुर राजवृक्ष पाषाणभिद् धन्ययवासकानाम्।**
**क्वाथं पिवेन्माक्षिकसंप्रयुक्तं कृच्छे सदाहे सरूजे विबन्धे।।134।।**
**एवीरूबीजा त्रिफला वरं गोक्षुरजं रजः।**
**तप्तोदकेन संपीतं मूत्रकृच्छहरं परम्।।135।।**
**(अथ अश्मरीप्रतिकारः)**
**वरूणस्य त्वचं श्रेष्ठां शुंठी गोक्षी संयुताम्।**
**पाचयित्वा सतं तस्य यवक्षारगुडन्वितम्।।136।।**

**हिन्दीः—**

सुवर्चक को पीसकर कांजी बनाकर गर्म करके प्रलेपन करने से रूका हुआ मूत्र चलने लगता है।।133।।

केला का कन्द, हरीतकी, गोखुर, राजवृक्ष पाषाण वासक, इन सबको मिलाकर मधु तथा मिसरी के साथ खाने से मूत्रकृच्छ्र तथा कब्जियत नष्ट हो जाता है।।134।।

एवीरूबीज, त्रिफला, गोखुर गुडीच इन सबको चूर्ण बनाकर गर्म जल के साथ पीने से मूत्रकृच्छ्र दूर हो जाता है।।135।।

वरूण का छाल, श्रेष्ठा तथा सोंठ को गाय के दूध में मिलाकर आग पर पका ले उसमें यवाखार तथा गुड मिला देना चाहिए। उसके सेवन से वात रोग तथा अश्मरी दूर हो जाता है।।136।।

सोंठ, अग्निमन्थ पाषाणभिद् गुड वरूण गोखुर एवं अमलतास का क्वाथ बना लें उसमें हिंग खार तथा वरा मिला दें। उसके सेवन से अश्मरी तथा मूत्रकृच्छ्र निश्चय दूर हो जाता है।।137।।

**मैथिलीः—**

सुवर्चक कें पीसि कांजी बनाय गर्म कए प्रलेपन कएला सँ रूकल मूत्र चलय लगैत छैक।केला क कंद, हरीतकी, गोखुर, राजवृक्ष, पाषाण, वासक एहि सब के मिलाय मिसरी एवं मधुक संग क्वाथ पीला सँ कृच्छ, दाहयुक्त रोग एवं कब्जियत नष्ट भए जाइत छैक।

एवीरूबीज, त्रिफल, गोक्षुर, वरा(गुडीच) एहि सब केर चूर्ण कें तप्तजल क संग पीला सँ मूत्रकृच्छ दूर भए जाइत छैक।।133—135।।

**(अथ अश्मरीप्रतिकार)**

वरूणक छाल, श्रेष्ठा तथा शुंठी कें गाय क दूध, तथा गुड मिला दिऔक। ओकर पान सँ वात तथा अश्मरी बहुतो दिनक दूर भए जाइत अछि।।136।।

पीतं वाताश्मरीं हन्ति चिरकालानुबन्धनीम्।
शुंठाग्निमंथपाषाणभिद्‌गुडवरूणगोक्षुरैः।।137।।
सारग्वधामयै क्वाथः हिंगुक्षारवरान्विता।
अश्मरीमूत्रकृच्छं च नाशयमायाति निश्चितम्।।138।।

(अथ अपस्मार प्रतिकारः)

**पौष्करं पिप्पलीमूलं ब्राह्मी शुंठी हरीतकी।**
**शटी किराततिक्तं च शिरीषं रोहिषं वचा।।139।।**
**दार्वी मुस्ता देवदारू कुष्ठमेषां श्रृतं पिवेत्।**
**अपस्मारज्वरोन्मादविशूचीकफनाशनम्।।140।।**

**हिन्दीः—**

इलाचयी, शर्करा, गुडीच आदि का सेवन अगर मधु के साथ किया जाये तो प्रमेह दूर हो जाता है।।137।।

सोंठ, अग्निमन्थ, पाषाणभिद्, गुड़, वरूण, गोखुर एवं अमलतास का क्वाथ बना लें उसमें हिंग खार तथा वरा मिला दें। उसके सेवन से अश्मरी तथा मूत्रकृच्छ्र निश्चय ही दूर हो जाता है।।138।।

**(अथ अपस्मार प्रतिकार)**

पौष्कर, पिप्पली मूल ब्राह्मी, सोंठ, हर्रे शठी, किरात, तिक्ता, शिरीष रोहिष वचा दार्वी मुस्ता, देवदार एवं कुष्ठ इस सब को मिलाकर श्रृत बना लें। इसे पीने से अपस्मार ज्वर उन्माद, विशूची तथा कफ का नाश होता है।।139—140।।

**मैथिलीः—**

सोंठि, अग्नि मन्थ, पाषाणाभिद्, गुड, वरूण, गोखुर एवं अमल तास क क्वाथ बनाय ओहि मे हिंगु खार एवं वरा मिलाय सेवन कएला सँ अश्मरी तथा मूत्रकृच्छ्र निश्चित दूर होइत अछि।।137—138।।

पौष्कर, पिप्पलीमूल, ब्राह्मी, सोंठि, हर्रे, शटी, किरात, तिक्ता, शिरीष, रोहिष, वचा, दार्वी, मुस्ता, देवदारू, एवं कुष्ठ एहि सब कें श्रृत बनाय पीला सँ अपस्मार, ज्वर, उन्माद, विशूची तथा कफ क नाश होइत अछि।।140।।

यः खादेद् दुग्ध भक्ताशी माक्षिकेन वचा रजः।
अपस्मारं तथान्मादं सचिरोत्थं जयेद्ध्रुवम्।।141।।
एकविंशद्दिनं स्थाप्य मूषणं स्नुक्पयस्तथा।
जलेन पिष्ट्वापस्मारे सेवनं योग्यमीरितम्।।142।।
शंखपुष्पीवचा कुष्ठै ब्राह्मी रससमन्वितैः।
घृतपक्वमपस्मारं पानाद्धन्तिन संशयः।।143।।

**हिन्दीः—**

जो व्यक्ति दूध भात खाता है तथा मधु के साथ वचा के चूर्ण का सेवन करता है उनके बहुत दिनों का अपस्मार तथा उन्माद दूर हो जाता है।।141।।

21 दिनों तक मूषण को सेहुण्ड के दूध में रख दे फिर पीसकर सेवन करने से अपस्मार का नाश होता हैं।142।।

शंखपुष्पी वचा, कुष्ठ एवं ब्राह्मी रस को मिलाकर घी में पकाकर सेवन करने से अपस्मार नष्ट हो जाता है। उसमें कोई सन्देह नहीं।।143।।

**मैथिलीः—**

पौष्कर, पिप्पलीमूल, ब्राह्मी, सोंठि, हर्रे, शटी, किरात, तिक्ता, शिरीष, रोहिष, वचा, दार्वी, मुस्ता, देवदारू, एवं कुष्ठ एहि सब कें श्रृत बनाय पीला सँ अपस्मार, ज्वर, उन्माद, विशूची तथा कफ क नाश होइत अछि।।140।।

## (अथ अपस्मार प्रतिकार)

जे व्यक्ति दूध भात खाइत छथि एवं मधुक संग वचा क चूर्ण क सेवन करैत छथि हुनका बहुतो दिनक अपस्मार तथा उन्माद दूर भए जाइत छन्हि।।141।।

एक्कैश दिन तक मूषण तथा सेहुण्ड क दूध के राखि जल मे पीसि के सेवन कएला सँ अपस्मार मे लाभप्रद होइत अछि।। 142।।

शंखपुष्पी, वचा, कुष्ठ, एवं ब्राह्मीरस कें मिलाय घी मे पका कए सेवन कएला सँ अपस्मार नष्ट भए जाइत छैक। एहि मे कनियो सन्देह नहि।।143।।

(अथ कुष्ठव्याधिप्रतिकारः)

पटोलत्रिफला वासा खदिरामृतनिम्बजम्।
चूर्णं जलेन पातव्यं कुष्ठव्याधिविनाशनम्।।144।।
मंजिष्ठा त्रिफला तिक्ता वचा दारू निशामृता।
निम्बश्चैषां कृतः क्वाथः सर्वकुष्टं विनाशयेत्।।145।।
गुंजा कुष्ठाग्निषड्ग्रन्था लेपो निम्बरसान्वितः।
कांजिकेनान्वितश्चापि श्वेतकुष्ट हरः परः।।146।।
शशिलेखा शिला वह्नि बंगभस्मभवोऽथवा।
काष्टोडं वटमूलत्वक् लेपो वा बह्निसम्मतः।।147।।
खदिरामलकः क्वाथो वाकुचीचूर्णसंयुतः।
प्रातरूत्थाय पातव्यो श्वेतकुष्टहरः परः।।148।।

**हिन्दीः—** **अथकुष्ठ व्याधि प्रतिकार**

परबल, त्रिफला वासक खदिर अमृत एवं नीम के पत्ते का चूर्ण बनाकर जल के संग उसका सेवन करें। इससे कुष्ठ रोग का नाश होता है।।144।।

मंजिष्ठ, त्रिफला, चिरायता वचा देवदार निशा (हल्दी) अमृता तथा नीम के पत्ते का क्वाथ पीने से सब प्रकार का कुष्ठ रोग नष्ट हो जाता है।।145।।गुंजा, कुष्ठ अग्नि षड्ग्रन्था एवं नीम के रस का लेप तथा कांजिक से युक्त लेप भश्वेत कुष्ठ को दूर करता है।।146।।

शशिलेखा (कपूर) शिलाजीत, वह्नि (चित्रक) तथा बंगभस्म का लेप कुष्ठ में लाभप्रद होता है। काष्टोड तथा बरगद के मूल का छाल को पीसकर गर्म करके लेप करने से कुष्ठ रोग शान्त होता है।।147।।

खदिर (कत्था) आमलक तथा वकुची के चूर्ण को मिलाकर क्वाथ बना लें उसे प्रातःकाल पीने से श्वेत कुष्ठ दूर हो जाता है।।148।।

**मैथिलीः—** **(अथ कुष्ठ व्याधिप्रतिकार)**

पटोल, त्रिफला, वासक, खदिर, अमृत एवं नीमक चूर्ण बनाय जलक संग पीबाकचाही। एहि सॅ कुष्ठ रोग नाश होइत अछि।।144।।

मंजिष्ठ, त्रिफला, चिरायता, वचा, देवदारू, निशा (हरैद), अमृता एवं नीम क क्वाथ पीला सॅ सब प्रकार क कुष्ठ रोग क नाश होइत अछि।।145।। गुंजा, कुष्ठ, अग्नि, षड्ग्रन्था, एवं नीम क रस क लेप तथा कांजिक सॅ युक्त लेप श्वेत कुष्ट कें दूर करैत अछि।।146।।

शशिलेखा (कर्पूर), शिलाजीत, वह्नि (चित्रक), बंगभस्म क लेप कुष्ठ मे लाभप्रद होइत अछि। काष्टोड तथा वट क जड़िक छाल कें पीसि के गर्म कए लेप सॅ कुष्ठरोग शान्त होइत छैक।।

खदिर (कथ), आमलक तथा वाकुची क चूर्ण मिलाय क्वाथ बना कए प्रातः काल पीबाक चाही। एहि सॅ श्वेत कुष्ठ दूर भए जाइत छैक।।147—148।।

(अथ कण्डू–पामा–विचर्चिका–लूता–सिध्मा–स्नायुरोग–शस्त्रक्षत प्रतिकारः)

शशिलेखा निम्बपत्रनिशामलकजं रजः।
गोमूत्रेण नरः पीत्वा कण्डुरोगं व्यपोहति।।149।।
महिषी सर्पिषा लेपो सिन्दुरमरिचोद्भवः।
पामाहरोऽथ दरदं कंकुष्ठं कुष्टगन्धकम्।।150।।
शिवा विडंगसिन्दूर चकमर्द च पेषयेत्।
धत्तुरनिम्बतांबूली रसैर्लेपं समाचरेत् 1/151।।
पामा–विचर्चिका–दद्रुनाशनं नास्त्यतः परम्।
अर्कपत्रभवं भस्म नवनीतेन संयुतम्।।152।।
विचर्चिकाहरं शीघ्रं लेपेन ना संशयः।

**हिन्दीः–**

**अथ–कण्डू–विचर्चिका–लूता–सिध्मा स्नायुरोग–शरक्षत प्रतिकार**

शशिलेखा, नीम का पत्ता, निशा तथा आमलक को चूर्ण बनाकर गोमूत्र के साथ पीने से कण्डू रोग का नाश होता है।।149।।

भैंस के घी के साथ सिन्दूर तथा मरीच मिलाकर लेप करने से पामा का नाश होता है।।150।।

छरद कंकुष्ठ, कुष्ठ गन्धक, शिवा विडंग, सिन्दूर तथा चक्रमर्द को पीसकर उसमें धथूर का रस नीम का रस तथा पान का रस मिला दें उसके लेप से पामा विचर्चिका एवं दद्रु का नाश होता है।।151–152।।

**मैथिलीः–**

**(अथ कण्डू–पामा–विचर्चिका–लूता–सिध्मा–स्नायुरोग–शस्त्रक्षत प्रतिकार)**

शशिलेखा, नीमक पात, निशा (हरैद), तथा आमलक एहि सब कें चूर्ण कए गोमूत्र क संग पीला सँ कण्डूरोग नाश होइत अछि।।149।।

महिष क घृत क संग सिन्दुर एवं मरीच मिलाय लेप कएला सँ पामा क नाश होइत अछि।।

दरद, कंकुष्ठ, कुष्ठ, गन्धक, शिवा, विडंग, सिन्दूर एवं चकमर्द कें पीसि धथूर नीम एवं पान क रस मे मिला कए लेप करक चाही पामा, विचर्चिका एवं दद्रुक हेतु एहि सँ बढ़ि कें औषधि नहि अछि।।150–151।।

आक क पात क भस्म, एवं नवनीत (मक्खन) क लेप सँ विचर्चिका शीघ्र नष्ट भए जाइत अछि।।152।।

गन्धं तु पंचकं कुष्टं वाकुची स्वर्जिका निशा।
सर्वतो द्विगुणं चुकं मर्दं च कटु तैलयुक्।।153
लेपं कृत्वाथ महिषी पुरीषैः स्नानमाचरेत्।
नाशमायाति–नियतं पामा–दद्रु–विचर्चिका।।154।।
दूर्वानिशा कल्कलेपो कण्डूपामा विनाशनः।।155।।
काला ब्राह्मी हरिद्रा च विडंगं गदपौष्करम्।
शुंठयर्जक चक दलनील कोषणगैरिकैसः।।156।।
मूलं कर्कोटकस्यापि मूत्रेण सह पेषितम्।
विषजं दोषजं शोथं रक्तजं लेपतो हरेत्।।157।।

**हिन्दी:–**

आक के पात का भस्म एवं नवनीत (मक्खन) के लेप से विचर्चिका का शीघ्र नाश हो जाता है।

गन्धक, पंचक, कुष्ठ, वाकुची, सर्वाजिका, निशा तथा इन सब को मिलाकर उसके दोगुनी मात्रा में चक्र मर्द, (चकबड़) को सरसों के तेल में मिलाकर शरीर में लेप करें इसके बाद भैंस के मूत्र से स्नान करना चाहिए इससे पामा दद्रु तथा विर्चिका का नाश निश्चित रूप से होता है।।0153–154।।

दूर्वा तथा हल्दी को मिलाकर कल्क बना लें और उसका लेप करें इससे कण्डु तथा पामा का नाश होता है।।155।।

कालायाजी, ब्राह्मी हल्दी, विडंग, गदपौष्कर, सोंठ, अर्जक, चक्रदल नीलकोषण, गैरिक तथा कर्कोटक के जड़ को पीसकर मूत्र के साथ लेप करने से विष के कारण अन्य दोषों के कारण तथा रति दोष के कारण फूला हुआ शोथ नष्ट हो जाता है।।156–157।।

**मैथिली:–**

गन्धक, पंचक, कुष्ठ, वाकुची, स्वर्जिका, निशा एवं सब वस्तु क द्विगुण चकमर्द (चकबड़) कें कडूक तैल मे मिला कए शरीर मे लेप करी एवं महिषक मूत्र सँ स्नान करबाक चाही। एहि सँ पामा–दद्रु तथा विचर्चिका निश्चिते दूर भए जाइत छैक। दूर्वा (दूबि) तथा हरैद क कल्क क लेप सँ कण्डू एवं पामा क नाश होइत अछि।।153–155।।

कालाजाजी, ब्राह्मी, हरिद्रा, विडंग, गद पौष्कर, शुंठी, अर्जक, चकदल, नीलकोषण, गैरिक एवं कर्कोट क जड़िकें मूत्र क संग पीसि लेप कएला सँ विषक कारण, दोषक कारण तथा रक्त क कारण फूलल शोथ लेप मात्र सँ छूटि जाइत अछि।।156–157।।

श्योनाक हिम कुष्टानि सारिवा समभागका।
लूताव्यथाहरो लेपः सद्यः प्रत्ययकारकः।।158
कदलीपत्रजं भस्म हरिद्रा तत्समा भवेत्।
पिष्टा जलेन तल्लेपः सिध्मरोगहरः परः।।159।।
हिम गंधकलेपो वा हिमसोमलजोऽपिवा।
सौभाग्य हिमजो वापि लेपः सिध्माविनाशनः।।160।।
स्नायुरोगेऽर्द्धसंदग्धां शुक्तिकां दधिसंयुताम्।
टंकद्वयमितं वैद्यः पाययेत्सप्तवारकम्।।161।।

**हिन्दीः—**

श्योनाक, हिम, कुष्ठ, सारिवा इन सब को मिलाकर लेप करने से लूता (फोड़ा) नष्ट हो जाता है।।158।।

केला के पत्ते का भस्म और उसी मात्रा में हल्दी को पीसकर लेप करने से सिध्मा रोग (सिहुली) दूर हो जाता है।।159।।

हिम तथा गन्धक का लेप अथवा सोहागा का शीतल लेप से सिध्मा दूर हो जाता है।।160।।

स्नायुरोग में आधी जली हुई शुक्तिका का चूर्ण दही के साथ दो टंक मात्रा में सात दिन तक रोगी को खाना चाहिए।।161।।

**मैथिलीः—**

श्योनाक, हिम, कुष्ठ, सारिवा, एहि सब कें मिला कए लेप कएला सँ लूता(फोड़ा) शीघ्र दूर भए जाइत अछि।।158।।

केराक, पात क भस्म तथा ओतवे मात्रा मे हरैद कें पीसि लगौला सँ सिध्मरोग (सिहुली) दूर भए जाइत अछि।।159।।

हिम तथा गन्धक क लेप अथवा सोहागाक शीतल लेप सँ सिध्मा दूर भए जाइत अछि।।160।।

स्नायुरोग मे आधा जरल शुक्तिका क चूर्ण दही क संग दू टंक परिमाण मे सात दिन तक रोगी कें खुएबाक चाही।।161।।

शस्त्रक्षते काकजंघामूलं पिष्ट्वा प्रलेपयेत्।
रक्त प्रवाहपीडादि तत्क्षणाद्विनिवर्तते।।162।।

(इति–कण्डू –पामा–विचर्चिका–लूता–
सिध्मा–स्नायुरोग–शस्त्रक्षतप्रतिकारः)

(अथ वात व्याधिप्रतिकारः)

**रास्नामृता देवदारू शुंठ्येरंडकषायकः।
मधुना सकलान् रोगान् वातजानाशु नाशयेत्।।164।।**

**हिन्दीः–**

शस्त्र से छत होने पर काकजंघा के मूल को पीसकर प्रलेप करना चाहिए। रक्त प्रवाह तथा अन्य पीड़ा उसी काल में दूर हो जाता है।।162।।

**(इति कण्डू–पामा–विचर्चिका–लूता–
सिध्मा–स्नायुरोग तथा शस्त्रक्षतप्रतिकार)**

**(अथ वातव्याधिप्रतिकार)**

रास्ना अमृता देवदारू, सोंठ तथा अण्डी के कसाय को मधु के साथ सेंवन करने से सब वायु रोग दूर हो जाता है।।164।।

**मैथिलीः–**

शस्त्र सँ क्षत भेला सँ काकजंघा क मूल कें पीसि कें प्रलेप करक चाही। रक्त प्रवाह अथवा अन्य पीड़ा ओहिकाल मे दूर भए जाइत छैक।।162।।

**(इति कण्डू–पामा–विचर्चिका–लूता–
सिध्मा–स्नायुरोग तथा शस्त्रक्षतप्रतिकार)**

**(अथ वातव्याधिप्रतिकार)**

रास्ना, अमृता, देवदारू, सोंठि एवं अण्डीक कषाय कें मधुक संग सेवन कएला सँ वात सम्बन्धी सब रोग दूर भए जाइत छैक।।164।।

**शुंठ्यश्वगंधाः सतिलाः सघृताः ससितोपलाः।**
**वातव्याधिहराः श्रेष्ठाः पुष्टिदा मोहनाशनाः।।165।।**
**निर्गुण्डीमार्कवं भावं शुंठीचूर्णमरूद्रुनि।**
**अश्वगंधा कणाशुंठी चिदुंगाफलदीप्पकम्।।166।।**
**कारवी पिप्पलीमूलं वचा चित्रकसंयुतम्।**
**गुडेन मोदकः श्रेष्ठः वातव्याधिविनाशनः।।167।।**
**विषस्य भागमेकं स्यात् टंकणस्य त्रयं तथा।**
**वेदभागंच मरिचं नागरं च विचूर्णयेत्।।168।।**
**आर्द्रकस्य रसै कार्या गुटिका रत्तिका मिता।**
**वातश्लेष्मज रोगाणां नाशिनी बह्निवर्द्धिनी।।169।।**

**हिन्दीः—**

सोंठ, अश्वगंधा, तिल, घी तथा मिसरी के सेवन से वातव्याधि दूर हो जाता **है** तथा मोह का नाश होता है। शरीर की पुष्टि होती है।

निर्गुण्डी तथा आक के रस सोंठ के चूण को मिलाकर सेवन से वायुरोग में विशेष लाभ होता है।

अश्वगंधा कणा, सोठ तथा चिदुंगा का फल बात रोग दूर करता है।

कारवी, पीपली, मूल बचा चित्रक तथा गुड़ को मिलाकर लड्डू बना लेना चाहिए। वातव्याधि को दूर करने में यह अच्छी दवा है।विष का एक भाग टंकण का तीन भाग मरीच का चार भाग तथा सोठ को चूर्ण करके आद के रस मिलाकर लाल—लाल गोली बना लें। रत्ती के मात्रा में छोटी गुटिका होनी चाहिए। इससे वात तथा श्लेष्मा रोग का नाश होता है। यह अग्निदीपक भी होता है।।165—169।।

**मैथिलीः—**

सोंठि, अश्वगन्धा, तिल, घृत तथा मिसरीक सेवन सँ वातव्याधि दूर होइत छैक तथा मोहक नाश एवं शरीर क पुष्टि होइत छैक।। 165।।

निर्गुंडी एवं आक क भाव (रस), तथा सोंठि क चूर्ण वायुरोग मे विशेष लाभप्रद होइत अछि।।166।।

अश्वगन्धा, कणा, सोंठि, तथा चिदुंगा क फल वात कें दूर करैत अछि।।

कारवी, पिप्पली मूल, वचा, चित्रक तथा गुड मिलाय लड्डू बनेबाक चाही। ई वातव्याधि क हेतु नीक औषधि थिक।।167।।

विष क एक भाग, टंकण क तीन भाग मरीच क 4 भाग तथा नागर (सोंठि) कें चूर्ण कए ली। आदक रस मे लाल लाल गोली बनाय लिअ। ई रत्तिक मात्रा मे छोट बरिया हेबा क चाही। एहि सँ वात तथा श्लेष्मा क रोग क नाश होइत अछि। ई अग्नि दीपक सेहो होइत अछि।।168—169।।

धत्तूरस्य रसैर्गुंजा विषधत्तूरबीजकैः।
पक्वं तैलं समस्तस्य वातव्याधिविनाशनम्।।170।।
रसोनं गोपयः सिद्धं वातव्याधिहरंपरम्।
आभाश्वगन्धा हपुषा गुडूची शतावरी गोक्षुरकश्च रास्ना।।171।।
श्यामा शताह्वा च शटी यवानी सनागरा चेति समं विचूर्ण्य।
सर्वैः समं गुग्गुलमत्रदेयात्क्षिपेदिहाज्यं च तदर्ध भागम्।।172।।
तद्भक्षयेदर्ध पिचु प्रमाणं प्रभातकाले सुरयाथ यूषैः।
मद्यैर्वा कोष्मजलेन वापि क्षीरेण वा मांसरसेन वापि।।173।।
त्रिकग्रहे जानुग्रहे च वाते भुजस्थिते च चरणस्थिते च।
सन्धिस्थिते चास्थिगते च तस्मिन्, मज्जस्थिते स्नायुगते च कोष्ठे।।174
रोगान् हरेत् वातकफानुविद्धान् वातेरितान् हृद्ग्रहयोनिदोषान्।
भग्नास्थिविद्धेषु च खंजतायां सगृध्रसीके खलु पक्षघाते।।175।।
महौषधं गुग्गुलमेतमाहुः सद्यो दशांगं भिषजाः पुराणा।।176।।

**हिन्दीः—**

धतूर के रस के साथ गुन्जा, विष तथा धतूर के बीज को तेल में पका लें, इसके मालिश से सब प्रकार की वातव्याधि दूर हो जाती है।।170।।

लहसुन को गाय के दूध में उबालकर सिद्ध करके खाने से वातव्याधि नष्ट हो जाता है।।।171।।

आभा, अश्वगंधा, हपुषा, गुडूची, शतावरी, गोखुर, रासना, श्यामा, शतावरी, शटी, अजवाईन तथा सोंठ को बराबर मात्रा में चूर्ण करके उस सब के बराबर मात्रा में गुग्गुल मिला दें और उसका आधा भाग घी मिला दें। आधापिचुक के प्रमाण में प्रातःकाल सुरा के साथ झोल के साथ मद्य के साथ गर्म जल के साथ, दूध के साथ या मांस के रस के साथ इसका सेवन करें।

त्रिकग्रह जानुग्रह तथा हाथ—पैर में वात रोग हो जाए या हड्डी के जोड़ पर गठिया वात हो जाय तो इसमें इस औषधि का सेवन लाभप्रद है।।172—174।।

वात, कफ आदि के कारण, सभी रोग तथा योनि रोग में यह औषधि लाभप्रद है। हड्डी टूटने पर किसी चीज के गड़ जाने पर लंगड़ा हो जाने पर गृध्रसी रोग में पक्षपात (लकवा में) गुग्गुल के साथ इस दशांग का सेवन बहुत लाभदायक होता है।। 175–176।।

**मैथिलीः–**

धत्तूर क रस क संग गुंजा, विष, धतूर क बीज कॅं तैल मे पकाय लगौला सॅं सब प्रकार क वातव्याधि दूर भए जाइत अछि।।170।।

लहसून कॅं गाय क दूध मे सिद्ध कए खएला सॅं वातव्याधि नष्ट भए जाइत छैक।

आभा, अश्वगन्धा, हपुषा, गुडूची, शतावरी, गोखुर, रासना, श्यामा, शताह्वा, शटी, यवानी (अजमाइन) तथा सोंठि कॅं वरावरि मात्रा में गुग्गुल मिला कए ओकर आधा भाग घृत मिला दिऔक। आधा पिचुक प्रमाण मे प्रातःकाल सुराक संग, झोरक संग, मद्य क संग, गर्म जलक संग, दूध क संग वा मांस रस क संग एकर सेवन करक चाही। त्रिक् ग्रह, जानुग्रह तथा हाथ पैर मे वात रोग पकड़ि लेला सॅं अथवा हड्डीक जोड़ पर गढिया वात भए गेला पर, मज्जा, स्नायु वा कोष्ठ मे वायु रोग पकड़ि लेला सॅं एहि औषधि क सेवन करबाक चाही।।

वात, कफ आदि क कारण सब रोग तथा योनि क दोष एहि सॅं शान्त भए जाइत अछि।। हड्डी टूटला पर, कोनो चीज क गड़ि गेला पर, ख०जता मे, गृध्रसी रोग मे, पक्षघात (लकवा) मे गुग्गुल सहित एहि दशांग क सेवन पुराण औषधि थिक।।171–176।।

(अथ पित्त व्याधि प्रतिकारः)

आमलोशीरकर्पूर हिमैला पित्तनाशनम्।
तण्डुलामलकं मांसी बदरीपल्लवान्वितम्।।177।।
पादयोः पयसा लेपः दाहमाशु व्यपोहति।
खर्जूरैला पद्मबीजं मधुना छर्दिनाशनम्।
शतधौतघृतैर्लेपो दाहघ्नः सर्वसंमतः।।179।।

**(अथ कफव्याधि प्रतिकारः)**

**मृतताम्रं च मरीचं लवंगं कुंकुमं कणा।**
**भार्गी समांशं संचूर्ण्य नागवल्लीदलान्वितम्।।180।।**

**हिन्दीः—**

## अथ पित्तव्याधि प्रतिकार

ऑवला, उशीर, कपूर, हिम तथा इलायची से सब पित्त दूर होता है। तण्डुल, आमला, जटामांसी बद्री का पल्लव खैर का पात को जल में मिलाकर पीस लें। दोनों पैर में उसके लेप से दाह शीघ्र ठीक हो जाता है।।177—178।।

खजूर इलायची, पद्मबीज तथा मधु सर्दी का नाश करता है। सतधौत तथा घी के लेप से दाह दूर हो जाता है।।179।।

मृतताम्र, मरीच, लौंग, कुमकुम, कणा तथा भार्गी को बराबर मात्रा में मिलाकर चूंर्ण कर लें। इसे पान के साथ सेवन करने से कफ रोग नष्ट हो जाता है।।180।।

**मैथिलीः—**

## (अथ पित्त व्याधि प्रतिकार)

आमला, ऊशीर, कर्पूर, हिम तथा एला, (इलायची) ई सब पित्त कें दूर करैत अछि।

तण्डुल, आमलक, जटामांसी, बदरी क पल्लव (वरैक पात) कें जल मे मिलाय पीसि के दूनू पैर मे लगौला सँ दाह शीघ्र दूर भए जाइत अछि।।

खर्जूर, एला पद्मबीज एवं मधु छर्दिक नाश करैत अछि। शतधौत घृत क लेप सँ दाह दूर भए जाइत अछि।।177—179।।

**(अथ कफ व्याधिप्रतिकार)**

मृतताम्र, मरीच, लवंग, कुंकुम, कणा, तथा भार्गी कें समभाग मे मिला कए चूर्ण कए पानक संग खएला सँ एक डेढ़ मास मे कफव्याधि दूर भए जाइत अछि।।180।।

माशैकं सार्धमाशं वा कफव्याधिं विनाशयेत्।
कंटकारी कणा भार्गी लवंगं नागरं रजः।
तप्तोदकेन संपीतं कासश्वासकफापहम्।।181।।

(इति कफ व्याधि प्रतिकारः)

(अथ गण्डमालापचीप्रतिकारः)

त्रिफला कांचनारत्वक् कणाचूर्णं कटुष्मकैः।
संपीतं गलगण्डघ्नं गण्डमालापचीहरम्।।182।।
तण्डुलानां जलैर्लेपो भार्गी शुंठी विनिर्मिता।
मासमाषप्रयोगेण गण्डमालापचीहरः।।183।।

**हिन्दीः–** **अथ कफ व्याधि प्रतिकार**

कंटकारी कणा, भार्गी, लौंग, तथा सोंठ का चूर्ण गर्म जल के साथ पीने से श्वास तथा कफ दूर हो जाता है।।181।।

**अथ गण्डमाला अपची प्रतिकार**

त्रिफला, कांचनार, काचनार का छाल, एवं पीपली का चूर्ण थोड़ा गर्म पानी के साथ खाने से गला का गण्डरोग दूर हो जाता है। यह औषधि गण्डमाला एंव अपची रोग का नाशक है।।182।।

तण्डुल के साथ जल का लेप भार्गी सोंठ तथा एक मास तक उड़द के प्रयोग से गण्डमाला तथा अपची रोग ठीक हो जाता है।।183।।

**मैथिलीः–**

कंटकारी, कणा, भार्गी, लवंग तथा सोंठि क चूर्ण तप्त जलक संग पीला सॅ कास–श्वास एवं कफ दूर होइत अछि।।181।।

**(अथ गण्डमाला–अपचीप्रतिकार)**

त्रिफला, काचनारक छाल एवं पीपरिक चूर्ण सुसुम पानि क संग पीला सॅ गलाक गण्डरोग दूर भए जाइत अछि। ई औषधि गण्डमाला तथा अपची रोग क हरण करैत अछि।।182।।

तण्डुलक जलक लेप, भार्गी, सोंठि, तथा एक मास तक उरीदक प्रयोग सॅ गण्डमाला तथा अपची दूर भए जाइत अछि।।183।।

त्रिफलायास्त्रयो भागाः व्योषं तद्द्विगुणं मतम्।
तस्माच्च द्विगुणं देयं कांचनारस्य वल्कलम्।।184।।
एकीकृतानां चूर्णानां समो देयोऽथ गुग्गुलः।
क्षौद्रेण गुटिका कार्या गण्डमालापचीहरः।।185।।

(इति गण्डमालापचीप्रतिकारः)

(अथ मुख–नासिका–कर्णाक्षि–शिरोरोगप्रतिकारः)

**एलाशुभा च खदिरं मुखस्थं मुखपाककजित्।**
**वासारसजो मधुना संयोज्य सततं लिहेत्।।186।।**
**सप्ताहं दंततो रक्तं स्रवतस्य विनाशनम्।**
**वृषाब्द खदिरं लोध्रं मंजिष्ठा यवतिक्तकम्।।187।।**

**हिन्दीः–**

त्रिफला का तीन भाग और उसका दो गुना व्योष (त्रिकटु) उसका दो गुना कांचनार का छाल लेकर एक जगह मिला करके चूर्ण कर लें उसके बराबर उसमें गुग्गुल मिला दें। मधु डालकर छोटी गुटिका बना लें। यह गण्डमाला तथा अपची को दूर करने में अच्छी दवा है।।184–185।।

**अथ मुख नासिका कर्ण, अक्षि शिरो रोग प्रतिकार**

इलायची को मुख में लेने से मुख के छोटे–छोटे दाने वाला रोग दूर हो जाता है।वासा के रस को मधु के साथ सेवन करने से सात दिन में दाँत से गिरता हुआ रक्त रूक जाता है।

वृष, अब्द, कत्था, लोध्र मंजिष्ठा, यव तथा तिक्ता इन सबके चूर्ण को दाँत पर रगड़ने से दाँत का मल दूर हो जाता है तथा दाँत के कीड़े मर जाते है। दाँत से रक्त का बहना रूक जाता है। दाँत की पीड़ा दूर हो जाती है।।186–187।।

**मैथिलीः–**

त्रिफला क तीन भाग, ओकर द्विगुण व्योष (त्रिकटु), ओकर दून्ना कॉचनारक छाल कें एक ठाम मिलाय चूर्ण कए लिअ ओकर वरावरि गुग्गुल मिला दिऔक। मधुक संग छोट–छोट गोली बना लिअ। ई गण्डमाला तथा अपची कें दूर करैत अछि।।184–185।।

**(अथ मुख–नासिका–कर्ण–अक्षि–शिरोरोग प्रतिकार)**

एला, शुभा एवं खदिर कें मुख मे लेला सॅं मुख मे छोट–छोट दाना वला रोग दूर भए जाइत अछि।।

वासा क रस एवं मधु कें मिलाय सतत् सेवन सॅं एक सप्ताह मे दॉत सॅं खसैत रक्त दूर भए जाइत अछि।।

वृष, अब्द, खदिर, लोध्र, मंजिष्ठा, यव तथा तिक्ता एहि सब कें दॉत पर रगड़ला सॅं दॉत क मल दूर भए जाइत अछि तथा दॉत क कीड़ा, रक्त एवं पीड़ा दूर भए जाइत अछि।।187।।

घर्षणाद् दंतमलहक् कृमिरक्तगदान् हरेत्।
धात्रीपत्रामृता द्राक्षा वासदार्वीफलत्रिकैः।।188।।
क्वाथः क्षौद्रयुतः पीतः गण्डूषान्मुखपाकजित्।।
पद्मकंटकहृल्लेपो वचालोध्रवरं कटु।।189।।
व्यंगघ्नः सतिलैर्लेपो मांसी कटुकजीरकैः।।
ताम्बूलस्य रसैर्वापि निशालोध्रसमा वरा।190।।
नस्ये दाडिमपुष्पोत्थो रसो दूर्वाभवोऽथवा।
सुगन्धजलजो वापि नासिकास्रावरक्तजित्।।191।।

**हिन्दीः–**

ऑवल के पत्ते, अमृता, द्राक्षा, दार्वी एवं त्रिफला का क्वाथ बनाकर मधु मिलाकर ठण्डा पानी के साथ कुल्ला करने से मुख पाक दूर हो जाता है।

पद्मकंटक का हृदय पर लेप वचा, लोध्र वरा एवं कटुक इन सबका चूर्ण ,खाने से मुख का लटपटाना अर्थात् -बोली तोतराना दूर हो जाता है। जटामांसी कट्वी जीरक तथा तिल का लेप भी लाभप्रद होता है।

पान के रस के साथ हल्दी का चूर्ण लोध्र तथा वरा का सेवन लाभप्रद होता है।

दाडिम के फूल का रस एवं दूब का रस नस्य अथवा सुगन्धित कमल के रस से नस्य कराने से नासिका से रक्तस्राव रूक जाता है।।188–191।।

**मैथिलीः–**

धात्रीक पात, अमृता, द्राक्षा, दार्वी एवं त्रिफला क क्वाथ बनाय मधु, मिलाय ठंडा, पानि क संग कुल्ला सँ मुखपाक दूर होइत अछि।।

पद्मकंटक क हृदय पर लेप, वचा, लोध्र, वरा एवं कटुकी एहि सब सँ मुख क लटपटायब दूर होइत अछि। जटामांसी, कट्वी जीरक तथा तिलक लेप सेहो लाभप्रद होइत अछि।।

पानक रस क संग हरैद, लोध्र तथा वरा क सेवन सेहो लाभप्रद होइत अछि।।

दाड़िमक फूलक रस वा दूवि क रस क नस्य तथा सुगन्धित कमलक रस सँ नस्य करौला सँ नासिका सँ रक्त स्राव रूकि जाइत अछि।।188–191।।

त्रिकटुगुडसंमिश्रः प्रातः प्रातर्निषेवितः।
शिरोगौरव श्लेष्मा च प्रतिश्यायहरो मतः।।192।।
नस्यं मरीच चन्दालफलोष्यमपि तादृशम्।
यष्टी गैरिकासिन्धूत्थ दार्वीतार्क्ष्यैः समांशकैः।।193।।
सैन्धवं कटुतैलेन कांस्यपात्रे सुघर्षयेत्।
नेत्राभिष्यन्दरोगघ्नं अ०जनं संप्रकीर्तितम्।।194।।
स्फटिका सैन्धवं तार्क्ष्यं स्तन्येन च ततोऽधिकम्।
रजनीरससंपिष्टं कतकं जसदं मृतम्।।195।।

**हिन्दीः—**

त्रिकटु एवं गुड अगर कोई प्रातः काल सेवन करता है तो शिरो रोग, सिर का भारी होना, श्लेष्मावृद्धि तथा प्रतिश्याय रोग दूर हो जाता है।।192।।

मरीच तथा चन्दाल के फल को चूर्ण करके नस्य करने से लाभ होता है। मधु, यष्टी, गैरिक, सिन्धूत्थ, दार्वी तार्क्ष सब को बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर गर्म कर लें। आँख के पास लेप करने सब प्रकार का नेत्र रोग दूर हो जाता है।

सैन्धानमक को सरसों के तैल के साथ ताम्र के पात्र में घिस कर नेत्र में अज्जन करें। इससे नेत्र रोग दूर हो जाता है।।193—194।।

स्फटिक, सैन्धानमक एवं तार्क्ष्य के चूर्ण को हल्दी के रस में पीसकर तथा मृत जसद का अंजन नेत्र दूर को करता है। नींबू का परिशोधित रस भी नेत्र रोग को दूर करता है।।195।।

**मैथिलीः—**

त्रिकटु एवं गुड यदि प्रातःकाल केओ सेवन करैत छथि तँ शिरोरोग, माथक भारी भेनाई, श्लेष्माक वृद्धि तथा प्रतिश्याय रोग दूर भए जाइत अछि।।192।।

मरीच तथा चंदाल फलक नस्य से हो लाभप्रद होइत अछि।

मधुयष्टी, गैरिक, सिन्धूत्थ, दार्वी, तार्क्ष, सबकँ वरावरि मात्रा मे मिलाय गर्म कए लेप कएला सँ सब प्रकारक नेत्ररोग दूर भए जाइत छैक।।193।।

सैन्धव एवं कडूक तैल कें ताम्र क पात्र मे घसि लिअ। एकर अ०जन सँ नेत्र क रोग दूर भए जाइत अछि।।194।।

स्फटिक, सैन्धव एवं तार्क्ष्य कें हरैदक रस सँ पीसल, कतक, मृत जसद क अंजन नेत्र रोग कें दूर करैत अछि। नीबू क शोधित रस से हो नेत्र क रोग दूर करैत अछि।।195।।

अञ्जनान्नेत्ररोगघ्नं सौवीरं वाशु शोधितम्।
जातीरसैस्तु नक्तान्ध्यं सौवीररजनीयुतम्।।196।।
सपुष्पपटलं वापि सद्यः नक्त्यान्ध्यदूरकम्।
उत्पाद्य पक्ष्मलोमानि पक्ष्मकार्योऽति यत्नतः।।197।।
कुर्याल्लेपं च मरिचैर्गुडगैरिकसंयुतैः।
शुद्धं सूतं च जसदं खर्परं विद्रुमं समम्।।198।।
मौक्तिकं चार्धभागं स्यात् दुष्टदन्तः कुलत्थकः।
वनजा कांस्यजे पात्रे छागदुग्धेन घर्षयेत्।
संचूर्ण्य सवलं वातमंजनं नाशयेदिदम्।।200।।

**हिन्दीः—**

जातीरस, सौवीर, हल्दी तथा लौंग इन सब को कूटकर अंजन करने से नक्तान्ध्य (रतौंधी) दूर होता है।।196।।

आँख के लोम को ठीक से हटाकर यत्नपूर्वक दवा डालें। मरीच, गुड तथा गैरिक मिलाकर लेप करने से आँख का रोग दूर हो जाता है।

शुद्ध पारद, जसद, शर्पर, विद्रुम तथा मौक्तिक को मिलाकर दुष्टदन्त, कुलत्थ तथा कमल को पीसकर बकरी के दूध के साथ काँस के पात्र में घर्षण करके अञ्जन करें। इससे नक्तान्ध्य (रतौंधी) तथा आँख का दर्द दूर हो जाता है।।197—200।।

**मैथिलीः—**

जातीरस, सौवीर, हरैद तथा लवंग ई सब सद्यः नक्तान्ध्यहर अ०जन थिक।।

ऑखिक पक्ष्मलोम कें ठीक सॅ उपारि यत्नपूर्वक पक्ष्मक कार्य करबाक चाही। मरिच, गुड तथा गैरिक सॅ युक्त लेप सॅ ऑखिक रोग दूर भए जाइत अछि।।

शुद्ध पारद, जसद, खर्पर, विद्रुम तथा मौक्तिक कें मिलाय दुष्टदंत, कुलत्थी, तथा कमल कें छागक दुग्ध क संग कॉसक पात्र मे घर्षण कए अ०जन कएला सॅ वातजन्य नेत्र रोग दूर होइत अछि।।196—200।।

मरिचं जसदं ताम्रं स्फटिकोदधि फेनकम्।
शुक्तिचूर्ण समं किञ्चित्तुत्थकेन समन्वितम्।।201।।
गोघृतेन च संघर्ष्य कांस्यपात्रे तदंजनात्।
नक्तान्ध्यं पटलं काचं गदं हन्तिं न संशयः।।202।।
सौराष्ट्री शशिलेखा च निशालोध्राहिफेनकम्।
जीरकं ताक्ष्यर्जं पिष्ट्वा समं कुर्याच्च पोटलीम्।।203।।
त्रिफला जलयोगेन कृत्वार्द्रं नयने न्यसेत्।
सर्वपीडाविनिर्मुक्ता निर्मलं नयनं भवेत्।।204।।

## हिन्दीः—

मरीच जसद, ताम्र स्फटिक समुद्रफेन तथा शुक्तिका चूर्ण को बराबर मात्राा में मिलाकर चूर्ण कर लें। उसमें थोड़ा तुत्थ मिला दें। उसमें गाय का घी मिलाकर काँस के पात्रा में घिसकर अञ्जन करे। इससे नक्तान्ध्य (रतौंधी) तथा आंख का दर्द दूर हो जाता है।।201—202।।

सौराष्ट्री (तुरटी, गोपीचन्दन) शशिलेखा (कपूर) निशा (हल्दी) लोध्र, अफीम, जीरा, ताक्ष्र्य इन सबको पीसकर पोटली बना लें। इसमें त्रिफला का जल  मिलाकर आँख पर रखें। इससे सब पीड़ा दूर हो जाती है और आँख निर्मल हो जाती है।।203—204।।

## मैथिलीः—

मरीच, जसद, ताम्र, स्फटिक, समुद्रफेन, तथा शुक्तिचूर्ण कें वरावरि चूर्ण कए ओहि मे थोड़ेक तुत्थ मिला दिऔक। ओहि मे गाय क घृत मिला कए कॉस क पात्र मे घसिऔक तथा अंजन करू। एहि, सॅ नक्तान्ध्य (रतौन्धी) तथा ऑखी क कॉची तथा दर्द दूर भए जाइत अछि।।201—202।।

सौराष्ट्री (तुरटी, गोपीचन्दन), शशिलेखा (कर्पूर), निशा (हरैद), लोध्र, अहिफेन (हमीम), जीर, ताक्ष्र्य सब के पीसि के पोटली बनायली। त्रिफला क जल मिलाय आर्द्र कए ऑखि पर राखी। एहि सॅ सब पीड़ा दूर भए जाइत छैक तथा ऑखि से हो निर्मल भए जाइत छैक।।203—204।।

अंजनं सैन्धवं शंखमब्धिफेनं मनः शिला।
सितोपलं त्रिकटुकं कतकं सूक्ष्मचूर्णितम्।।205।।
अंजनं पयसाजेन तिमिराणि च पुष्पकम्।
नक्तान्ध्यं पटलं हन्ति नेत्रपीडां सुदुस्तराम्।।206।।
अर्कपत्ररसोनेन युक्तं तप्तं हि तद्रसः।
कर्णपूर्णे ततः सद्यः शूलपूयहरो मतः।।207।।
शतपुष्पा वचा शुंठी दारू क्वाथः ससैन्धवः।
अजमूत्रभवो हन्ति कर्णपीडासुदारूणम्।।208।।
कडुष्मसैन्धवोपेतमजामूत्रं तु कर्णयोः।
क्षिप्तं शाश्वत पूयादिशूलरोगहरं परम्।।209।।

**हिन्दीः—**

सैंधानमक, शंख, समुद्रफेन, मनः शिला, मिसरी, त्रिकटु तथा कतक इन सबको मिलाकर चूर्ण बना लें। उस चूर्ण को बकरी के दूध में मिलाकर अंजन करने से तिमिर रोग, आंख का फूलना, आँख के रोग दूर हो जाते है। इस अंजन से रतौंधी एवं नेत्र पीड़ा भी ठीक हो जाती है।।205—206।।

आक के पात का रस तथा लहसुन के रस को कान में पूरा भर देने से कान का दर्द और कान का बहना दूर हो जाता है।।207।।

सतपुष्पा, बचा, सोंठ, दारू और सैंधानमक के क्वाथ को बकरी के मूत्र के साथ कान में डालने से दर्द ठीक हो जाता है।।208।।

थोड़ा गर्म बकरी के मूत्र में सेंधानमक मिलाकर दोनों कान में डालने से पीज का बहना तथा कान का दर्द ठीक हो जाता है।।209।।

**मैथिलीः—**

सैन्धव, शंख, समुद्रफेन, मनःशिला, मिसरी, त्रिकटु, तथा कतक एहि सब केर सूक्ष्म चूर्ण कें बकरी दूधक संग मिलाय अ०जन कएला सँ तिमिर रोग, ऑखिक फुलनाई, ऑखि उठनाई सब दूर भए जाइत छैक। रतौन्धी एवं नेत्र पीड़ा से हो ठीक भए जाइत छैक।।205—206।।

आक पात क रस तथा लहसून क रस कें गर्म कए कान मे पूरा भरि के दए देला सँ सद्यः कान क दर्द तथा पीज बहनाई दूर भए जाइत अछि।।207।।

शतपुष्पा (सोंफ, सोया), वचा, सोंठि, दारू तथा सैन्धव क क्वाथ कें बकरी क मूत्र क संग कान मे लेला सँ कान क दारूण पीडा नष्ट भए जाइत छैक।।208।।

सुसुम बकरी क मूत्र मे सैन्धव नमक मिलाय दूनू कान मे डालला सँ बहुतो दिनक पीज बहब तथा कान क दर्द दूर भए जाइत छैक।।209।।

दारू कटु फलकुष्टानां चूर्णमैरण्डतैलयुक्।
शिरोऽर्तिवातजां हन्ति कांजिकेन विलेपनात्।।210।।
वृद्धदारूकमुस्तोग्रैरण्ड रास्नाजटामयः।
शिरोऽर्तिकफजां हन्ति तप्तनीरेण लेपनात्।।211।।
पद्मबीज शिवा पथ्या दूर्वोशीरकसेरूकम्।
सहिमं लेपतो हन्याद् शिरोऽर्ति पित्तसंभवाम्।।212।।

**हिन्दीः—**

दारू, कटफल तथा कुष्ठ का चूर्ण बनाकर उसमें रेडी का तेल दे। इस कांजिक के विलेपन से शिरोवेदना दूर हो जाती है। खासकर वायु रोग के कारण शिरोवेदना दूर हो जाती है।।210।।

वृद्ध, दारू, मुस्ता, उग्रा, अण्डी (रेडी), रासना जटामांसी इन सबको मिलाकर गर्म जल के साथ सेवन से कफ के कारण शिरोवेदना दूर हो जाती है।।211।।

कमल के बीज, शिवा, पथ्या, दूर्बा, खस तथा कसेरूक को मिलाकर इन सबको ठंडा करके लेप करने से पित्त के कारण शिरोवेदना दूर हो जाती है।।212।।

**मैथिलीः—**

दारू, कटफल तथा कुष्ठ क चूर्ण बनाय अण्डी क तेल मे मिला कए कांजिक बनाय विलेपन कएला सँ शिरोवेदना (खास, कए वातजन्य शिरोवेदना) दूर भए जाइत छैक।।210।।

वृद्धदारू, मुस्ता, उग्रा, अण्डी, रासना, तथा जटामांसी एहि सब कँ मिला कए तप्त जलक संग सेवन सँ कफजन्य शिरोवेदना दूर होइत अछि।।211।।

कटफल उषणा, ऐरण्ड के मूल को गर्म पानी में मिला कर लेप करने से सब प्रकार की शिरोवेदना दूर हो जाती है।

कटुफलोषणमैरण्डमूलामय समन्वितम्।
शिरोऽर्ति सकलां हन्ति तप्तनीरे विलेपनात्।।213।।
पिप्पली मरिचं पथ्या कांजिकेन च तादृशम्।
यष्टीमधुकसंयुक्तो सर्पगन्धोषणामयम्।।214।।
अर्द्धावभेदकं हन्ति कांजिकेन विलेपनात्।
नस्यं तु सैन्धवोपेतं सर्पिषापि च तादृशम्।।215।।

**हिन्दी:–**

पीपली, मरीच तथा पथ्या का कांजिक बना कर यष्टी मधु, सर्पगंधा तथा उष्णा को मिलाकर लेप करने से अधकपारी रोग दूर हो जाता है। सैंधानमक तथा घी से नस्य कराने पर भी शिरोवेदना तथा अन्य रोग दूर हो जाते है।।213–215।।

**मैथिली:–**

कमलक बीज, शिवा, पथ्या, दूर्वा, खस तथा कसेरूक एहि सब कें ठंडा कए लेप कएला सॅं पित्तजन्य शिरोवेदना दूर भए ज़ाइत छैक।।212।।

कटफल, उषणा ऐरण्ड क मूल (अण्डी क जड़ि) कें गर्म पानि मे मिलाय लेपन कएला सॅं सब प्रकार क शिरोवेदना दूर भए जाइत छैक।।

पिप्पली, मरीच, पथ्या, एहि सब केर कांजिक बनाय यष्टी मधु, सर्पगन्धा, तथा उषणा मिला कए लेप कएला सॅं अधकपारी दूर भए जाइत छैक। सैन्धवनमक तथा घृत सॅं नस्य करौला सॅं शिरोवेदना तथा अन्य रोग दूर भए जाइत छैक।।213–215।।

यन्त्रषट्त्रिंशकं प्रातर्लिखित्वा भूर्जपत्रके।
नीलसूत्रैः शिरोवद्धां शिरोऽर्ति सकलां जयेत्।।216।।
हिरवीं निर्विशी तुस्यं जयपालविषं समम्।
देहपीडा विनाशाय लेपं दद्यात्पदोपरि।।217।।

**हिन्दीः—**

भूर्जपत्र (भोजपत्र) पर प्रातः काल षट्त्रिशंक (36) नाम जंत्र बनाकर नील सूत्र से सिर में बांध देने से सभी प्रकार की शिरोवेदना नष्ट हो जाती है। "216" जंत्र इस प्रकार है—

| | | | |
|---|---|---|---|
| 10 | 17 | 2 | 7 |
| 6 | 3 | 14 | 13 |
| 16 | 11 | 8 | 1 |
| 4 | 5 | 12 | 15 |

हिरवी, निर्विशी, तुस्य जयपाल तथा विष को समभाग में मिलाकर पैर पर लेप करने से देह की पीड़ा का नाश हो जाता है।।217।।

**मैथिलीः—**

आब विद्यापति एक तान्त्रिक पद्धति क प्रयोग कएलन्हि अछि। ई प्रयोग हम एक तान्त्रिक कें करैत सद्यः देखने छी।

भूर्जपत्र (भोजपत्र) पर प्रातःकाल षट्त्रिंशक (36) नामक यन्त्र बनाय नील सूत्र सँ शिर मे बाहिन लेला सँ सब प्रकार सँ शिरोवेदना दूर भए जाइत छैक।।216।।

हिरवी, निर्विशी, तुष्य, जयपाल तथा विष कें सम मात्रा मे मिलाय पैर पर लेप करबाक चाही। एहि सँ देहक पीडा क नाश भए जाइत अछि।।217।।

**गोक्षुरस्तिलपुष्पाणि सर्पिर्मधुयुतानि च।**
**कियत्कालं शिरोलेपात् केशसंबर्द्धनानि च।।218।।**
**महिषीदधिसंमिश्रां कर्कोटकजटांनरः।**
**पिष्ट्वा शिरः प्रलिप्ते तु प्रक्षाल्याभ्यंगमाचरेत्।।219।।**
**हस्तीदन्तमसी ताक्ष्यमिन्द्रलुप्ते प्रलेपनम्।**
**आजेन पयसा कुर्यात्सर्वथा तद्विनश्यति।।220।।**
**अजामूत्रं भृङ्गराजं नीलपत्रमयो रजः।**
**पिष्ट्वा सम्यक् प्रलिपेद्वै केशाः स्युः भ्रमरोपमा।।221अ।।**

**हिन्दीः—**

गोखुर, तिल का फूल, घी, एवम् मधु को मिलाकर माथे पर लेप कराने से बाल बढ़ता है।।218।।

भैंस के दही को करकोटक जटा के साथ मिलाकर शरीर पर लेप करना चाहिए इसके पहले पूर्ण शरीर को ठीक से साफ कर लें।।219।।

हस्ति, दंत, मसी तथा ताक्ष्य को पीसकर इन्द्रलुप्त (केस झरना) पर लेपन करना चाहिए। बकरी के दूध के साथ ये लेप बहुत लाभदायक होता है।।220।।

बकरी के मूत्र के साथ भृंगराज तथा नील पत्र के चूर्ण को पीसकर लगाने से केश भ्रंमर जैसा घुघराला हो जाता है।।221अ।।

**मैथिलीः—**

गोक्षुर, तिलक फूल, सर्पि (घृत) एवं मधु कें मिलाय किछु काल तक शिर पर लेप कएला सँ केश बढैत छैक।।218।।

महिष क दही कें कर्कोटक जटा क संग मिलाय पीसि कें शिर पर लेप करबाक चाही। एहि सँ पूर्व देह कें ठ़ीक सँ प्रक्षालन कएलेबाक चाही।।219।।

हस्तीदन्त, मसी तथा ताक्ष्य कें इन्द्रलुप्त (केश झरनाइ) पर प्रलेपन करबाक चाही।।220।।
बकरी दूधक संग ई लेप बड़ लाभप्रद होइत अछि।।

बकरीक मूत्र क संग भृङ्ग राज तथा नीलपत्र क चूर्ण कें ठीक सँ पीसि कए लगौला सँ केश भ्रमर जकाँ औठिया भए जाइत छैक।।221अ।।

(इति मुख–नासिका–कर्ण–अक्षि–शिरोरोग प्रतिकार)

(अथ स्त्रीरोगाधिकारः)

**तण्डुलोदकसंपिष्टं त्वक्क्षिरीनागकेसरम्।**
**हिमाबालकसंयुक्तं नाशयेत्प्रदरं द्रुतम्।।221ब।।**
**नागकेसरमेकं वा तण्डुलांभः सितायुतम्।**
**भार्गीव्योषयुतः क्वाथः तिलजः पुष्परोगहा।।222।।**
**रामठ जीर कणांतुंबीबीजं गुडसमन्वितम्।**
**दन्तौ सेहण्डदुग्धेन वर्तिकृत्वा भगेन्यसेत्।।223।।**
**पुष्परोधावरोधाय नारीगर्भापनुत्तये।**
**शिरीषैलाब्धिफेनं च जातीफल विडंगकम्।।224।।**

**हिन्दीः—**

## अथ स्त्री रोग प्रतिकार

त्वक्छिरी, नागकेसर, हिमा, बालक को मिलाकर चावल धोने के बाद बचे हुए पानी के साथ पीसकर सेवन करने से प्रदर रोग नष्ट हो जाता है।। 221ब।।

रामठ (हिंग) जीरा, कणा, तुम्बी, बीज तथा गुड़ को मिलाकर दन्ती मूल में सेहुण्ड का दूध मिलाकर बाती बना लें और उसे योनि में रखना चाहिए इससे रूका हुआ मासिक धर्म शुरू हो जाता है तथा स्त्री के गर्भ का अन्य रोग नष्ट हो जाता है।।223।।

सिरीस, इलायची, अब्धीफेन, जातिफल विडंग तथा नागकेसर की बर्तिका को योनि में डालने से योनि रोग नष्ट होता है।।224।।

**मैथिलीः—**

## (अथ स्त्रीरोगाधिकार)

त्वक्क्षिरी, नागकेसर, हिमा, बालक कँ मिला कए तण्डुलोदक क संग ठीक सँ पीसि के सेवन कएला सँ प्रदर रोग दूर होइत अछि।।221।।

नागकेसर, तण्डुल क जल, मिसरी, भार्गी तथा व्योष (त्रिकटु) एवं तिल मिला कए क्वाथ पुष्परोग कँ दूर करैत अछि।।222।।

रामठ (हिंगु) जीर, कणा, तुम्बीबीज, एवं गुडमिलाय दंतीमूल मे सेहुण्ड क दूध मिलाय वाती (वर्तिका) बनाय योनि मे राख क चाही। एहि सँ मासिक धर्म रूकल प्रारम्भ भए जाइत छैक तथा स्त्रीगर्भक अन्यरोग नष्ट भए जाइत छैक।।223।।

शिरीष, एला (इलायची), अब्धिफेन (समुद्र फेन) जातीफल, विडंग, एवं नाग केसरक वाती (वर्तिका) योनि रोग कँ हरैत अछि।।224।।

सनागकेसरं वर्तिः योनिरोगहरा भवेत्।
क्षुद्रात्रिकटुसंयुक्तं नागकेसरजं रजः।।225।।
गोसर्पिषा समस्नीयान्नारीप्रसवहेतवे।
हेमाशुगन्धासंयुक्तो रोचना शालितण्डुलाः।।226।।
सीतापयोभ्यां संपीता गर्भसंजनना मता।
गोसर्पिषार्तवे देयं नागकेसरजं रजः।।227।।
दुग्धोदनं चरेत्पथ्यं नारी गर्भमवाप्नुयात्।
पानं तस्य लक्षणायाः गोपयोभिस्तथा श्रृतम्।।228।।

**हिन्दी:–**

क्षुद्रा, त्रिकटु तथा नागकेसर का दूध गाय के घी के साथ सेवन करने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।।225।।

हेमा (केसर), अश्वगंधा, रोचना, शालितण्डुल, मिसरी तथा दूध के सेवन से गर्भ ठीक से रहता है एवं प्रसव ठीक से होता है।। 226।।

ऋतुमती होने के लिए गाय के घी के साथ नाग़केसर का चूर्ण खाना चाहिए। उस स्त्री को दूध–भात खाना अच्छा होता है और उसको गर्भ हो सकता है।।227।।

गर्भ के लक्षण वाली औरत को गाय का दूध पीना लाभदायक है।।228।।

पाठा तथा अपा मार्ग को पीसकर भग को ऊपर लेप करने से शीघ्र बच्चा हो जाता है।।229।।

**मैथिली:–**

क्षुद्रा, त्रिकटु एवं नागकेसर क चूर्ण बनाय गोघृत क संग खएला सँ स्त्री कँ सुखप्रद प्रसव होइत छैक।।225।।

हेमा (केसर), अश्वगन्धा, रोचना (गोरोचन) शालितण्डुल, मिसरी तथा दूध क सेवन सँ गर्भ ठीक सँ रहैत अछि एवं प्रसव ठीक सँ होइत अछि।।226।।

ऋतु क हेतु गोघृत क संग नागकेसर क चूर्ण देबाक चाही। दूध भात पथ्य मे खएबाक चाही। एहि सँ गर्भ रहि जाइत छैक।।227।।

गर्भक लक्षण वाली कँ गायक दूध क पान करबा क चाही।।229।।

पाठा एवं अपामार्ग क भग पर संलेप सँ सद्यः प्रसव भए जाइत छैक।।228।।

पाठापमार्गसंलेपो भगे सद्यः प्रसूतकृत्।।
कटयां मुण्डी जटां बह्वा सुखं नारी प्रसूयते।।229।।
सेहुण्डपयसा लेपो नखेनाभौ प्रसूतिकृत्।
धातकी कमलं लज्जा मधुकं तण्डुलोदकैः।।230।।
नारी पीत्वा प्रयत्नेन पतद्गर्भं निवारयेत्।
बदरीकर्णकारत्वक् लोध्रमाजूफलान्वितम्।231।।
कहेला मात्रिकाचन्द्रस्फटिकं समभागिकम्।
योनौ संकोचनं कुर्यात् द्रुतमेतन्न संशयः।।232।।
मात्रिकास्फटिकालोध्र धातकी बदरी भवम्।
माजूफलयुतं चूर्णं योनिसंकोचकारकम्।।233।।

**हिन्दीः—**

कटि (डाण) में मुण्डी तथा जटा को बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।।229।।

सेहुण्ड का दूध नख तथा नाभि पर लगाने से बच्चे का जन्म शीघ्र होता है।।230।।

धातकी, कमल लज्जा तथा मधु एवं तण्डुल के जल का पान करने से गर्भ रूक जाता है अर्थात् गर्भपात नहीं होता है।।231।।

बदरी (बैर) कर्णकार का छाल, लोध्र, माजुफल, कहेला, मातृकाचन्द्र स्फटिक इन सबको बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर सेवन से योनि संकुचित तथा कठोर हो जाता है। इसमें थोड़ा भी संदेह नहीं हैं।।232।।

मातृका, स्फटिका, लोध्र, धातकी, बदरी तथा माजुफल का चूर्ण योनि को संकुचित करता है।। 233।।

**मैथिलीः—**

कटि(डॉर) मे मुण्डी तथा जटा बान्हि देला सॅ नारी सुखपूर्वक प्रसव करैत अछि।।229।।

सेहुण्ड क दूध नख तथा नाभि पर लगौला सॅ बच्चा शीघ्र होइत छैक।।230।।

धातकी, कमल, लज्जा(लजविज्जी) मधुक तथा तण्डुल क जल क पान सॅ खसैत गर्भ रूकि जाइत छैक।।231।।

बदरी, कर्णकार क छाल, लोध्र, माजूफल, कहेला, मात्रिकाचन्द्र, स्फटिक एहि सबकें वरावरि मात्रा मे मिलाय सेवन सॅ योनि संकुचित तथा कठोर भए जाइत छैक। एहि मे कनियों सन्देह नहि।।232।।

मात्रिका, स्फटिका, लोध्र, धातकी, बदरी, तथा माजूफल क चूर्ण योनि कें संकुचित करैत अछि।।233।।

जंबूजटौ तमालोध्र धातकीमधुलेपनम्।
योनिसंकोचनं यद्वा तक्रप्रक्षालनं शुचि।।234।।
आर्तवस्रावदिवसात्षोडशाहो निरंतरम्।
तण्डुलोदकनस्येन काठिन्यं कुचयोः स्थिरम्।।235।।
कुमारिकारसैर्लेपो हरिद्रारजसान्विता।
कदुष्णा स्तनशोथस्य नाशनं सर्वसम्मतः।।236।।
स्तनपाकहरं निम्बतैलतुल्यं न चापरम्।

**हिन्दीः—**

जामुन, जटामांसी, तमा, लोध्र, धातकी, तथा मधु को मिलाकर लेपन से योनिसंकोच होता है। किन्तु इससे पहले योनि का तक्र से प्रक्षालन कर लेना चाहिए।।234।।

ऋतु के दिन से लगातार सोलह दिन तक तण्डुलोदक के नस्य से स्तन कठोर हो जाता है।।235।।

घृतकुमारिका के रस तथा हल्दी के रस को थोड़ा गर्म करके स्तनशोथ पर लेप करना चाहिए इससे स्तन में होने वाली पीड़ा तथा रोग दूर हो जाता है।

नीम के तेल के समान स्तन पर घाव के लिए कोई दूसरी दवा नहीं है।।236।।

**मैथिलीः—**

जम्बू, जटामांसी, तमा, लोध्र, धातकी,एवं मधुक लेपन सँ योनि क संकोच होइत छैक। मुदा तक्र सँ प्रक्षालन कए योनि कँ शुद्ध कएली।।234।।

आर्तव दिवस सँ (मासिक जहिया सँ प्रारम्भ हो) लगातार सोलह दिन तक तण्डुलोदक नस्य सँ कुच क काठिन्य बढि जाइत छैक।।235।।

कुमारिकाक रसक लेप जाहि मे हरिद्रा क रस सेहो रहबाक चाही। ओकरा सुसुम कए स्तनशोथ पर लगेबाक चाही। थनैल अवश्य एहि सँ दूर भए जाइत छैक।

नीमक तैलक समान स्तन पर घाव क लेल कोनो दोसर औषधि नहि अछि।।236।।

**(इति स्त्रीरोगाधिकारः)**

श्रृङ्गीविषाकणाचूर्ण शिशुर्मधुयुतं लिहेत्।
श्वासकासविषच्छर्दिभीतिर्नैव कदाचन।।237।।
कर्णकारजटाभंगा धत्तूररसपेषयेत्।
छाया शुष्का वटी कार्यो स्वमूत्रेणानुलेपयेत्।।238।।
दीर्घस्थूलं च कठिनं लिङ्गं तेनाभिजायते।
वलाश्वगन्धाकुष्टोग्रागजपिप्पलकारजः।।239।।
महिषीसर्पिषा लिप्तं लिङ्गस्थौल्यकरं परम्।
अश्वगन्धा गजकणा रजनीपारदैरपि।।240।।

हिन्दीः–

(सामान्य प्रयोग)

श्रृङ्गी (काकरा श्रृङ्गी) विषा (अतिविषा) कणा पिप्पली इन सब का चूर्ण बनाकर बच्चों को मधु के साथ चटावें। इससे श्वासकास विष, छर्दि आदि का भय दूर हो जाता है।।237।।

कर्णकार, जटा, भांग, धथूर का रस इन सबकों पीसकर छाया में सुखाकर छोटी–छोटी गोली बना लें। इस गोली को अपने मूत्र में मिलाकर लिङ्ग पर लेप करे। इससे लिङ्ग दीर्घ स्थूल तथा कठोर हो जाता है।।238।।

अश्वगन्धा, गजपिप्पली, हल्दी पारद, अफीम, अमृत धथूर का बीज तथा जातीफूल को बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण करके घी के साथ लिङ्ग पर लेप करने से लिङ्ग की शिथिलता दूर हो जाती है अर्थात् लिङ्ग कठोर हो जाता है।।239–241।।

मैथिलीः–

(किछु सामान्य प्रयोग)

श्रृङ्गी (काकरा श्रृङ्गी) विषा (अतिविषा) कणा (पीपरि) एहि सब कें चूर्ण बनाय बच्चा कें मधुक संग चटेबाक चाही। एहि सँ श्वास कास, विष, छर्दि आदिक भय दूर भए जाइत छैक।।237।।

कर्णकार, जटा, भांग, धथूर क रस सब कें पीसि छाया मे सुखा कए बटी बनाउ। एहि बटी कें अपनमूत्र मे मिलाय लिङ्ग पर लगाउ। एहि सँ लिङ्ग दीर्घ स्थूल एवं कठिन भए जाइत छैक।

वला, अश्वगन्धा, कुष्ट, उग्रा, एवं गजपिप्पली क चूर्ण कँ। महिष क घृत क संग लिंग पर लेप कएला सँ लिङ्ग दीर्घ तथा कठोर भए जाइत छैक।।239।।

अहिफेनामृतं धूर्तबीजं जातीफलं समम्।
सर्पिषा लिङ्गलेपोऽयं शैथिल्यहरणं परम्।।241।।
अहिफेनभवा वर्ति लिङ्गा शुक्ररोधिनी।
गोक्षुरेक्षुरबीजानि वातगन्धा शतावरी।।242।।
मुसुली शाल्मलीपुष्पं भार्गी शुंठी च वानरी।।
वलाश्लेष्मान्तकं मोचरसैस्तच्च सुचूर्णितम्।।243।।
सितामधुयुतं पेयं वाजीकरणमुत्तमम्।
शिलाटंकणकुष्टैला मालतीदलजैः रसैः।।244।।
तैलं पक्वं तदभ्यङ्गाल्लिङ्गदीर्घमवाप्नुयात्।
कुंकुमं दरदं जातीफलं म्लेक्ष यवानिका।245।।

**हिन्दीः—**

अफीम की वाती लिङ्ग पर लगाने से शुक्रस्तम्भ होता है। अर्थात् वीर्यस्खलन शीघ्र नहीं होता है।

गोखुर, तालमखाना, वातगन्ध, शतावरी मुसुली शाल्मली पुष्प(सेमर का फूल), भार्गी सोंठ का चूर्ण करके मोच रस में मिलाकर मिसरी तथा मधु के साथ सेवन करने से बाजीकरण होता है। बाजीकरण का अर्थ है घोड़े के समान देर तक मिथुन करना। इसके लिए यह उत्तम औषधि है।।242—244।।

शिला, टंकण कुष्ठ, इलायची, मालती के पत्तों के रस के साथ तैल को पका लें। इसके लेप से दीर्घ लिङ्ग होता है।।245।।

**मैथिलीः—**

अश्वगन्धा, गजपिप्पली, हरैद, पारद, हफीम, अमृत, धथूर क बीज तथा जातीफल के वरावरि मात्रा मे मिलाय घृत क संग लिङ्ग पर लेप कएला सँ लिङ्ग क शिथिलता दूर भए जाइत छैक।।241।।

अफीम (हफीम) क वाती लिंग पर लगौला सँ शुक्र स्तम्भित होइत छैक।।

गोखुर, तालमखाना, वातगन्धा, शतावरी, मुसुली, शाल्मलीपुष्प (सेमर क फूल), भार्गी, शुंठी, वानरी, वला कॅ मोचरस क संग ठीक सँ चूर्ण मिसरी तथा मधुक संग सेवन कएला सँ बाजीकरण होइत छैक। वाजीकरण (स्त्री क संग बाजी—घोड़ा जकाँ दीर्घ काल तक मैथुन करब) क लेल ई उत्तम औषधि थिक।।243।।

शिला, टंकण, कुष्ट, एला, मालती क पात क रस क संग तैल पकाय लिङ्ग पर लगौला सँ दीर्घ लिङ्ग होइत छैक।।244।।

मस्तकी वानरीबीजं लवगं गोक्षुरं तथा।
त्वक् पत्रं च समं सर्व तुर्यांशमहिफेनकम्।।246।।
भंगारसैर्गुटीं वध्वा शुकस्तम्भनवृद्धिदा।
चन्दनं रजनी मुस्तं कर्पूरागुरूकेसरम्।।247।।
जटामांसीमरूवक शटीपद्मकलोध्रकम्।
शिवा कुलिंजनं पिष्ट्वा कुर्यादुद्वर्तनं नरः।।248।।
मेदास्वेदातिदौर्गन्ध्यं नाशनं मुनि भाषितम्।
पथ्याबीजाम्लकं विल्वमुस्तं नीरेण पेषितम्।।249।।

**हिन्दीः—**

कुंकुम, दरद, जातीफल, म्लेक्ष, यवानिका, मस्तकी, वानरीबीज, लौंग, गोखुर, दालचीनी, तेजपात, इन सबको बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण कर लें। उसका चतुर्थांश अफीम मिला दें। भांग के रस में गोटी बनाकर दूध के साथ सेवन करे। यह स्तम्भन के लिए अच्छी दवा है।।245—246।।

चन्दन, हल्दी, मुस्ता, कपूर, अगुरू, केसर, जटामांसी, मरूवक, शटी, पद्मक, शिवा, एवं कुलिंजन को पीस कर इससे सम्पूर्ण शरीर में मालिस करे। इससे शरीर के सभी प्रकार का दौर्गन्ध्य दूर होता है। ऐसा चरक का वचन है।।247—248।।

पथ्या, आमलकी, बिल्व तथा मुस्ता को जल में डालकर पीस लें। इसके लगाने से दोनों कुचके पसीना का दौर्गन्ध्य दूर हो जाता है।।249।।

**मैथिलीः—**

कुंकुम, दरद, जातीफल, म्लेक्ष, यवानिका, मस्तकी, वानरीबीज, लवंग, गोक्षुर, दालिचीनी, तेजपात, सब कें वरावरि मात्रा मे मिलाय ओकर चतुर्थांश हफीम मिला दिऔक। भांग क रस मे गोटी बना लिअ। ई शुकस्तम्भन मे उत्तम औषधि थिक।।246।।

चन्दन, हरैद, मुस्ता, कर्पूर, अगुरू, केसर, जटामांसी, मरूवक, शटी, पद्मक, लोध्र शिवा, एवं कुलिंजन कें पीसि शरीर पर उबटन जकाँ मलक चाही। एहि सँ निश्चिते सब प्रकारक शरीर क मेद तथा घाम—पसीना क दौर्गन्ध्य दूर भए जाइत अछि। ई चरक मुनि क वचन थिक।।248।।

पथ्या (हर्रे) क बीज, आमलक, विल्व, एवं मुस्ता के जल मे पीसि कए लगौला सँ दूनू कुचक स्वेदक दौर्गन्ध्यनाश भए जाइत छैक।।249।।

कुचयोः मुनिभिः प्रोक्तं स्वेददौर्गन्ध्यनाशनम्।
मुसुलीशाल्मलीमूलसूक्ष्मं दृषदि पेषितम्।।250।।
सितामधुयुतं पीतं धातुपुष्टिकरं परम्।
शिरीषपुष्पनलकात्वग्लोध्रं नागकेसरम्।।251।।
जलेनोद्वर्तनं गात्रे स्वेददौर्गन्ध्यनाशनम्।
घनैलाकेसरं विल्वजातीफलदलंघनम्।252।
त्वक्स्थौणेय च मधुना गुटिकास्या विधारिता।
दौर्गन्ध्यमास्यगं हन्यादपि मद्यादिसंभवम्।।253।।

**हिन्दीः—**

मुसली तथा शाल्मली के जड़ को खरल पर पीस करके मिसरी तथा मधु के संग पीने से धातु की पुष्टि होती है।।250।।

शिरीष का फल, दालचीनी, लोध्र, नागकेसर, इन सबको मिलाकर जल से स्नान करने से पसीना का दौर्गन्ध्य दूर हो जाता है।।251।।

घन (कपूर) इलायची, केसर, बिल्व, जातीफल दालचीनी को मधु के साथ मिलाकर गोली बनाकर मुख में रखने से मुख का दौर्गन्ध्य तथा मद्य आदि के कारण होने वाले दौर्गन्ध्य का नाश होता है।।252–253।।

**मैथिलीः—**

मुसली तथा शाल्मलीक जड़ि कँ ठीक सँ खरल पर पीसि कँ मिसरी तथा मधुक संग पीला सँ धातुपुष्टिकर होइत छैक।।250।।

शिरीष क फूल, नलका, दालिचीनी, लोध्र, नागकेसर एहि सब कँ मिलाय जल सँ स्नान कएला सँ पसीना क दौर्गन्ध्य दूर भए जाइत छैक।।

घन(कर्पूर), एला (इलायची), केसर, विल्व, जातीफल, दालिचीनी कँ मधुक संग मिलाय गोटी बना कए मुख मे रखला सँ मुँख क दौर्गन्ध्य (मद्य आदि क कारण दौर्गन्ध्य) नष्ट भए जाइत अछि।।253।।

नयनमुखमनोमहोत्सवस्य प्रभवति मूलमिदं मुनिप्रणीतम्।
अतिसुगमं सुसिद्धयोगवाक्यैः रचितमितोऽर्जनमस्तु सर्वतुष्टयै ।254।
इति श्री उपाध्याय विद्यापतिकृतं चिकित्साञ्जनं समाप्तम्।।
रामायनमः। शुभमस्तु लेखक पाठकयोः (श्रोतृणां च)

**हिन्दी:—**

मुनि प्रणीत आयुर्वेद शास्त्र का यह ग्रन्थ मुख तथा मन के महोत्सव के लिए है। अतिसुगम, सुसिद्ध योग वचनों के साथ यह लिखा गया है। सबों की सन्तुष्टि के साथ इससे लाभ मिलें ऐसी शुभकामना है।।254।।

**मैथिली:—**

ई मुनि प्रणीत आयुर्वेदशास्त्र क ग्रन्थ नयन मुख तथा मन क महोत्सव क हेतु अछि। अतिसुगम, सुसिद्ध योग वाक्य क संग ई लिखल गेल अछि। सब केर सन्तुष्टि क लेल एहि सँ लाभ प्राप्त हो से शुभकामना।।254।।

**श्री उपाध्याय विद्यापति कृत चिकित्सा०जन समाप्त भेल।।**

# — : समाप्त : —

# प्रथम–अध्याय

प्रथम अध्याय मे आयुर्वेदशास्त्रक दृष्टि सँ अग्निमान्द्य, श्वास रोग, कास रोग, हिक्का, स्वरभेद, प्रतिश्याय, तृष्णारोग, विशूचिका, ग्रहणी, अतिसार, गुल्म, शूल, कृमि, अश्मरी, ज्वर, राजयक्ष्मा, शोथ, आमवात, पाण्डु, कमला, कुष्ठ, अर्श, गलगण्ड, गण्डमाला, अपची, प्रमेह, नपुंसकत्व दोष तथा अन्यान्य रोगक लक्षण तथा निदान पर विचार कएल अछि। ई सब रोग विद्यापतिक चिकित्साञ्जन मे चर्चित अछि। विद्यापति रोगक लक्षण नहि लिखने छथि अतएव हम पृथक् रूप सँ एहि सब रोग पर विशेष चर्चा कए देल अछि।

एहि अध्यायक सहायता सँ बहुत रोगक लक्षणक तथा उपाय क ज्ञान सामान्य व्यक्ति कें भए सकैत छन्हि।

## 1. अग्निमान्द्य

अग्निमान्द्यक अर्थ थिक अजीर्ण भेनाई अर्थात् भोजनक ठीक सँ पाचन नहि होएब।

आयुर्वेद मे 13 प्रकारक आगि मानल गेल अछि – (1). 5 भौतिक अग्नि (2). सात धात्वग्नि तथा (3). एक जठराग्नि। जठराग्नि पेट मे अन्न कए पचबैत अछि। एकर दोसर नाम पाचकाग्नि थिक।

पाचकाग्नि चारि प्रकारक होइत अछि (1). मन्दाग्नि, (2) तीक्ष्णाग्नि, (3) विषमाग्नि तथा (4) समाग्नि। समाग्निक अतिरिक्त सब वैकारिक होइत अछि। कफाधिक्य सँ मन्दाग्नि, पित्ताधिक्य सँ तीक्ष्णाग्नि तथा वाताधिक्य सँ विषमाग्नि होइत अछि। मन्दाग्नि सँ अग्निमान्द्य होइत अछि। एहि सँ भोजनक पाचन एवं शोषण ठीक सँ नहि होइत अछि। भोजनक पाचन ठीक सँ नहि भेला सँ आमविष सेहो उत्पन्न होइत अछि।

पाचन क्रिया आमाशय, ग्रहणी तथा पक्वाशय तीन स्थान पर पचैत अछि। अग्निमान्द्य सँ आमविष बनैत अछि। जँ आमाशय मे आमविष होइत अछि। तँ छर्दि उत्पन्न होइत अछि। ग्रहणी तथा पक्वाशय मे आमविष द्रवमलक प्रवृत्ति करैत अछि। अग्निमान्द्यक कारण –

1. भोजनक जीर्ण नहि भेला सँ पूर्वहि भोजन अथवा बहुत देर तक भोजनक अभाव।

2. विषम भोजन (जेना दूध माछ एकहि संग)।

3. अति गुरु, अतिशीतल तथा अति उष्ण अन्नक प्रयोग।

4. ऋतुक परिवर्तन सँ।

5. व्याधि भेला सँ वा कमजोर भेला सँ।

6. ईर्ष्या भय आदि सँ।

अग्निमान्द्य सँ वमन, लालास्राव, ग्लानि, भ्रम, मूर्च्छा, प्रलाप तथा मृत्यु होइत अछि। अग्निमान्द्य मे दीपन तथा पाचन चिकित्सा लाभप्रद होइत अछि। अर्थात् जाहि सँ भूख लागत तथा पचय से खेबाक चाही। वमन करेबाक चाही। लंघन तथा लघु आहार करेबाक चाही।

लवणभास्कर, अग्निमुखचूर्ण, हिंग्वष्टक, गन्धकवटी, अजीर्ण कंटकरस आदि बनल औषधि भेटैत अछि।

माँड़, मूंगक दालि, बकरीक दुग्ध, गायक दुग्ध, मसूर आदि लाभप्रद होइत अछि। गरीष्ट भोजन तथा विरूद्ध भोजन नहि करबाक चाही। (विशेष द्र. नि. चि. पृ. 75) विद्यापति चिकित्साञ्जन मे लिखैत छथि जे सोंठि, पीपरि, मरीच, त्रिफला, हिंगु, गुड आदि अग्निवर्द्धक होइत अछि। सौवर्चल, विडंग, हिंगु तथा त्रिवृत् सेहो अग्निमान्द्य के दूर करैत अछि।

सौवर्चल, विडंग, जीर, लवंग, तथा क्षार मे नेवो क रस मिलाय पाचक चूर्ण बनैत अछि। ई मन्दाग्नि हाथीक लेल सिंह क समान (मन्दाग्निगज सिंहचूर्ण) प्रसिद्ध चूर्ण होइत अछि। चिकि. श्लो. 121–123

## 2. श्वास–रोग

एहि रोग मे श्वास प्रश्वासक क्रिया मे बाधा भए जाइत अछि। प्राणवह स्रोत मे चारि प्रकारक दोष भए सकैत अछि –

**1. अति दीर्घ श्वास, 2. रूकैत श्वास**
**3. तीव्र श्वास मुदा कम–कम, 4. शब्द एवं वेदनाक संग श्वास।**

वात एवं कफ के दोष सँ प्राणवह स्रोत मे दोष आबि जाइत अछि। कखनौ काल प्राणवह स्रोत मे कोनो यन्त्र विगड़ि जाइत अछि तँ श्वास फुलय लगैत अछि।

फुसफुस तथा श्वसना मे यदि शोथ भए जाइत अछि तँ श्वास मे गरबरी आबि जाइत अछि। जँ कोनो वाहरक चीज वायुनली मे चल जाइत अछि तँ श्वास मे रूकावट आबि जाइत अछि।

अधिक व्यायाम, अग्निमान्द्य, हृदयक व्याधि आदि सँ श्वास रोग होइत अछि।

श्वास रोग पाण्डु, जलोदर, आध्मान (ढेकार) हृदयरोग, सान्निपातिकज्वर, राजयक्ष्मा, कण्ठशुण्डी, तालुपाक, प्लीहोदर, अतिसार, विशूचिका, आदि मे बढ़ि जाइत अछि।

रूक्ष, गुरु भोजन, शीतल अन्नपान, धूल, धुआँ अथवा गर्मीक सम्पर्क, अतिव्यायाम, अतिभारवहन आदि सँ सेहो श्वासरोग बढ़ि जाइत अछि।

श्वासरोग पाँच प्रकारक मानल गेल अछि – 1. महाश्वास, 2. ऊर्ध्वश्वास, 3. छिन्न श्वास, 4. तमकश्वास, तथा 5. क्षुद्र श्वास।

श्वास के (Eosinophelia) इसिनोफेलिया सेहो दोसर नाम थिक। पटोल, कुरथी, जौ, गोधूम, अजादुग्ध, मद्य, लशुन, मधु, तीतर तथा वटेरक मांस आदि श्वास मे पथ्य होइत अछि। अम्ल, तेल मे तरल वस्तु माष (उरद), कन्द, कदीमा, शीतल वस्तु अपथ्य होइत अछि। द्रष्टक, निदान. चि. पृ. 40 चरक–508

विद्यापति चिकित्साञ्जन मे लिखैत छथि जे कर्कट, अब्द, त्रिकटु, शटी, पद्मा तथा पौस्करक चूर्ण तप्त जलक संग पीला सँ श्वास कास दूर भए जाइत छैक। वचा, कणा, शुंठी तथा वासक कँ सुसुम जलक संग पीबाक चाही।

अमृत, वराट, मरीच तथा आदक रसक सेवन सँ वात कफ, ढेकार, कास सब दूर भए जाइत अछि। (द्रष्टव्य. चिकि. श्लो. 116–120)

## 3. कास–रोग

**"कासृ कुशब्दे"** सँ कास शब्द बनल अछि। अर्थात् कास रोग मे कुशब्द होइत अछि। खाँसी ओकासी आदि एकर नामान्तर थिक। कफ सँ ई विशेष रूप सँ होइत अछि। प्राणवह स्रोत मे कोनो गरवरी सँ अथवा कफ भए गेला सँ ओकासी होइत अछि। 30 प्रकारक व्याधि मे कास उत्पन्न भए जाइत अछि, यथा – वातकफज्वर, कफजगुल्म, कफोदर, प्लीहोदर, जलोदर, हृदयरोग, उरःक्षत, राजयक्ष्मा, आदि मे। कास मे कखनौकाल गन्ध सेहो निकलैत अछि। कास पाँच प्रकारक होइत अछि – वातज, पित्तज, कफज, क्षतज, एवं क्षयज। एहि सब प्रकारक कासक अलग–अलग उपाय अछि। लवंगादिवटी, एलादिवटी, मरीच्यादिवटी, वासावलेह आदि औषधि लाभप्रद होइत अछि। लाजा, शालि, गोधूम, माष, मुद्ग, कुलत्थक यूष, लशुन, द्राक्षा, दाडिम, वकरीक दूध, जांगली मांस, आदि पथ्य होइत अछि। स्निग्धमधुर, दही, दूध, धूम्रपान, दीवास्वप्न तथा मैथुन कास रोग मे अपथ्य मानल गेल अछि। (नि. चि. पपृ. 51 चरक पृ. 532)।

विद्यापति चिकित्साञ्जन मे लिखैत छथि जे भार्गी, कर्कटश्रृङ्गी, कणा, सोठि, तथा वहेड़ाक चूर्ण कें घृतकुमारिक रस मे गोली बनाय मुख मे रखला सँ कास दूर भए जाइत छैक।

## 4. हिक्का

श्वासेक जकाँ हिक्का सेहो वात एवं कफक दोष सँ होइत अछि। हिचकी एकर दोसर नाम थिक। चरकक अनुसार अतिसार, ज्वर, छर्दि, प्रतिश्याय, उरःक्षत, क्षय, रक्तपित्त, विशूचिका, पाण्डुरोग आदि मे हिक्का

उठैत अछि। चरकक अनुसार एकर कारण प्राणवह, अन्नवह, एवं उदकवह स्रोत कें दुष्ट भेनाई वताओल जाइत अछि। हिक्का पाँच प्रकारक होइत अछि – 1. महा हिक्का, 2. गम्भीरा हिक्का; 3. व्यपेता हिक्का, 4. क्षुद्रा हिक्का, 5. अन्नजा हिक्का।

हिक्का क चिकित्सा श्वास रोगक समान कहल गेल अछि। आमलकी अथवा कपित्थक रस मे मधु तथा पिप्पलीक चूर्ण मिला कए चाटला सँ लाभ होइत अछि।( नि.चि.पृ. 63), (भा..प्र.पृ.670), (चरक. 508)।

विद्यापति सेहो लिखैत छथि जे लवंग, मरीच, विल्व, मिश्री, तथा मधुक मिश्रण कए चाटला सँ हिक्का दूर भए जाइत छैक। हर्रे तथा हरैदक धुआ स नस्य कएला सँ सेहो हिक्का कम होइत छैक। (चिकि. 11–112)।

## 5. स्वर–भेद

स्वर मे विभिन्न प्रकारक विकार उत्पन्न भए जाइत अछि। स्वर के उच्चारण हेबावला स्थान मे दोष भए गेला सँ स्वर विकृत भए जाइत अछि। तोतरेनाइ, गला बाझि गेनाई, आदि स्वरभेद थिक। यष्टीमधु, आमलकी, वास आदिक प्रयोग स्वरभेद मे लाभप्रद होइत अछि। एलादि गुटी, लवंगादि गुटीक प्रयोग करबाक चाही। द्राक्षा, मरिच, हरीतकी एवं घृत पथ्य होइत अछि। (नि.चि.पृ. 67)

## 6. प्रतिश्याय

प्रतिश्याय मे नासाशूल, छींक, नाक सँ कफ निकलब, स्वरभेद, शिरोवेदना, तृष्णा, कास, अरूचि, नासा कण्डू आदि भए जाइत अछि। ई रोग पाँच प्रकारक होइत अछि –

1. वातज, 2. पित्तज, 3. कफज, 4. सान्निपातिक तथा 5. रक्तज।

प्रतिश्याय जँ बढ़ि जाइत अछि तँ नासावरोध, मुखदौर्गन्ध तथा गन्धज्ञानक अभाव भए जाइत अछि।

नस्य, धूम, शोधन तथा शमन रूप सँ एकर चिकित्सा होइत अछि। नाक मे तेल देला सँ ई रोग कम होइत अछि। त्रिभुवन कीर्ति, सितोपलादि, लघुवसंत मालती आदि बनल औषधि भेटैत अछि। (नि.चि.पृ. 76)

## 7. तृष्णा रोग

पुनः पुनः जल पिलाक वाद प्यास क शान्ति नहि भेनाइ तृष्णारोग थिक। शरीर मे जलक मात्रा कम भेला सॅ ई रोग होइत छैक। कम जल पिलासँ विशूचिका, प्रमेह आदि भेला सॅ अथवा दोषक विकृति सॅ ई रोग होइत अछि। तृष्णा दू प्रकारक होइत अछि – 1. वातजा और 2. पित्तजा।

एहि मे शीतल जल मे मधुक संग पान लाभप्रद होइत अछि। द्राक्षा, चन्दन, पिण्डखजूर, खस, मूंग, मसूर, उष्ट्रदूध, दाडिम, जामून आदि लाभप्रद होइत अछि। कटुतिक्त पदार्थक सेवन वर्जित अछि। (चि. नि. पृ. 79)।

## 8. विशूचिका (हैजा)

एहि रोग मे वेर–वेर वमन तथा दस्त होइत छैक तथा उदर मे सुई चुभबाक समान कष्ट होइत छैक। 1. गलत आहार विहार, 2. अजीर्ण पर भोजन, 3. अपरिमित तथा असुयमित भोजन, 4. अशुद्ध जल तथा भोजन सॅ ई रोग होइत अछि। सम्पर्क सॅ सेहो ई रोग होइत अछि। एहि रोग मे अतिसार, वमन, प्यास, उदरशूल, भ्रम, दाह, ऐंठन, जम्भाई, विवर्णता तथा मूर्च्छा होइत छैक।

पानिके सुसुम कए लवंग मिला कए देवाक चाही। पानि कम मात्रा मे देवाक चाही। अहिफेनासव, कर्पूरासव, संजीवनीवटी आदि देबाक चाही। उपवास तथा पूर्ण विश्राम सेहो जरूरी होइत अछि। (चि. नि.पृ. 114)

विद्यापति लिखैत छथि जे हाथ पैर मे कडूतैलक मर्दन विशूचिकाक नीक औषधि थिक। चुक्र, कुष्ठ, सैन्धवनमक, पीपरि, जातिफल, कडूतैल आदि मिलाकए आगि पर गर्म कए सेवन कएला सॅ विशूचिका दूर भए जाइत छैक। (चिकि. श्लो. 124)

## 9. ग्रहणी

ग्रहणी रोग मे अन्नक ठीक सॅ पाचन नहि होइत अछि आ अर्धपक्वावस्था मे सब भोजन क तत्त्व–मलक संग निकलि जाइत अछि।

ई रोग आमाशयक अन्तिम भाग सँ प्रारम्भ भए बृहदन्त्रक प्रारम्भ तक रहैत अछि। संक्षेप मे लघ्वन्त्र कें ग्रहणी कहैत छैक। एहि ग्रहणी नामक अवयव मे दोष आबि जाइत अछि। ग्रहणी रोग सँ अग्निमान्द्य, तृष्णा, अरूचि, ऑखिक ज्योति कम, छर्दिज्वर, ढेकार, आलस्य, कमजोरी, आदि भए जाइत छैक। ई चारि प्रकारक मानल गेल अछि। 1. वातज, 2. पित्तज, 3. कफज तथा 4. सान्निपातिक।

लंघन, दीपन तथा पाचन चिकित्सा एहि मे करबाक चाही। रसपर्पटी, स्वर्णपर्पटी, ताम्रपर्पटी, गंगाधर चूर्ण, लोकनाथ रस, आदि औषधि एहि रोगक प्रशमनार्थ अछि। कपित्थ, दाडिम, जामुन, बकरीक दूध, गायक दूध, वटेर तथा हरिणक मांस तथा निद्रा लाभप्रद होइत अछि।

व्यायाम, गुरु स्निग्ध भोजन, स्वप्न आदि अपथ्य मानल गेल अछि। (चि.नि. 118)

विद्यापति सेहो लिखैत छथि जे सोंठि, मुस्ता, अमृता, घुणप्रिया आदिक चूर्ण गर्मजलक संग सेवन कएला सँ शूल, आम, संग्रहणी, अरूचि आदिक नाश होइत अछि। (चि.कि.–78)

## 10. अतिसार

अतिसार मे वेर वेर दस्त होइत अछि। विशेष दस्त होएबाक ई सब कारण अछि–

1. कोष्ठ मे वात वृद्धि
2. पित्त मे द्रवगुणक वृद्धि
3. पुरीषवहस्रोतस मे कोनो दोष
4. अग्निमान्द्य तथा आमविष।

ग्रहणी, विषूचिका, कृमि, राजयक्ष्मा, जलोदर, पैत्तिकज्वर तथा अन्य रोग मे अतिसार होइत अछि। विरूद्ध भोजन, अजीर्ण, अति भोजन, भय, शोक, अति मद्यपान, दूषित जलक पान, स्नेहक मिथ्या प्रयोग प्रभृति सेहो एकर कारण होइत अछि। अतिसार दू प्रकारक होइत अछि – 1. आमातिसार, 2. पक्वातिसार।

1. आमातिसार मे आम निकलैत अछि।

2. दोसर प्रकार सँ अतिसारक छः भेद अछि –

1. वातज, 2. पित्तज, 3. कफज, 4. सान्निपातिक, 5. शोकज तथा 6. भयज।

लंघन, दीपन, पाचन, ईसबगोल, मांसरस, बिल्व लाभप्रद होइत अछि। पंचामृत पर्पटी, कुटजारिष्ट, प्रवालपंचामृत आदि एकर औषधि थिक। (चि.नि.पृ. 132, भाव.प्र.पृ. 574, चरक पृ. 556)।

विद्यापति सेहो लिखैत छथि जे गंगाधर चूर्ण अतिसार के दूर करैत अछि। लीलावती वटी सेहो अतिसारनाशिनी होइत अछि। जातीफल, आमक बीज, हफीम तथा बिल्व क लेप जँ नाभिक चारू तरफ कएल जाय तँ शीघ्र अतिसार दूर भए जाइत अछि। अतिविषा, मुस्ता, भूनिम्ब, आम्र तथा आतवत्सक क क्वाथ सर्वज्वर के नाश करैत अछि। ग्रन्थिरूपेण अवस्थानात् गुल्मः गुल्मसंज्ञः सः। (च.स. 177) (नागर तथा अतिसारक चिकि. 67–81)।

एहि व्याधि मे रोगी कें पेट मे गोला भए जाइत छैक। कखनौकाल छूला सँ उपरे सँ गोला जकाँ भेटैत छैक। हृत्प्रदेश, नाभिप्रदेश, उदरप्रदेश, पार्श्वप्रदेश, तथा वस्तिप्रदेश मे ई होइत अछि। एहि रोग मे अरूचि, पेट मे वायु, मलमूत्रत्याग मे कष्ट, वायुक ऊर्ध्वगति होइत अछि। गुल्म पाँच प्रकारक होइत अछि –

1. वातज, 2. पैत्तिक, 3. कफज, 4. सान्निपातिक तथा 5. रक्तज। ई केवल स्त्री कें होइत छैक।

रूक्ष अन्नपान, बैसलरहव, शोक, अतिमलक क्षय, विषमभोजन, अभिघात, उपवास आदि एकर कारण होइत अछि।

कुलत्थ, कयूष, लशुन, द्राक्षा, मातुलुंग, तित्तिर, मयूर, कुक्कुटक मांस, गव्यघृत, तक्र अजादुग्ध आदि एहि रोग मे पथ्य थिक।

माष, मत्स्य, मधुरफल, अधिकजल, वमन आदि अपथ्य थिक। (चि.नि.पृ.148, विशेष द्रष्टस्य च.सा.पृ. 177–226)।

विद्यापतिक अनुसार इलायची, लवंग, सारक आदिक चूर्ण पेटक शूलक हेतु लाभप्रद होइत अछि। विशेष चिकि. श्लोक 71--73।

## 11. शूल

एहि रोग मे पेट तथा अन्यत्रो दर्द होइत छैक। अति व्यायाम, रात्रिजागरण, आघात, रूक्षपदार्थक सेवन, शोक, उपवास, अधिक बाजव, सवारी पर अधिक चढ़ब, तेल, कुरथी, अम्मत, मद्य, अग्निसेवन, क्षार तथा उष्ण वस्तुक सेवन आदि शूलक कारण होइत अछि। ई 6 प्रकारक होइत अछि –

1. वातिक, 2. पैत्तिक, 3. कफज, 4. श्लैष्मिक, 5. सान्निपातिक,तथा 6. आमज।

पेट फुलब, पेट मे गुड़गुड़ाहट, प्यास, दाह, वमन, मूर्च्छा, काम मे शैथिल्य, शरीर मे कम्पन आदि एकर लक्षण थिक।

शूल कें शान्त करबाक हेतु वमन, लंघन, स्वेदन, पाचन, क्षार प्रयोग, अग्निमुखरस, अमृतगर्भरस, कोलादिमण्डूर, ज्वालामुखी रस आदि एकर औषधि थिक।

जीर्णशाली, मधु, अन्न, पटोल, कारवेल्लक, लहशून, गर्मजल आदि पथ्य थिक।

विरूद्ध अन्नपान, रूक्ष, शीतल, गुरु, अन्न, मद्य, तिल, आतप, जागरण व्यायाम, शोक, क्रोध आदि अपथ्य थिक। (चि.नि.पृ. 156)

विद्यापति लिखैत छथि हिंग्वष्ठक चूर्ण शूल कें दूर करैत अछि। शुंठी हरीतकी, कृष्णा, त्रिवृत् तथा सौवर्चलक चूर्ण कें गर्मजलक संग पीला सँ पेटक शूल दूर भए जाइत छैक। चिकि. 101–106

## 12. कृमि

साधारणतः 20 प्रकारक कृमि मनुष्यक शरीर मे भेटैत अछि। वाह्य कृमि ढील, लीख, चिल्लर आदि थिक। आभ्यन्तर कृमि मे चाली आदि अछि।

कृमि मे ज्वर, विवर्णता, शूल, भ्रम, भक्तद्वेष, अतिसार आदि होइत छैक। अरूचि, वमन, मूर्च्छा, कार्श्य सेहो होइत छैक। विडंग चूर्ण, पलास, कृमि–मुद्‌गर रस आदि लाभप्रद होइत अछि।

क्षीर, गुड, घृत, मधुरान्न, मांस, कांजी, क्षार आदि अपथ्य मानल जाइत अछि। (चि.नि. 164–165, भा.प्र.पृ. 627)।

विद्यापति लिखैत छथि– वचा, विडंग, कुटज, नीमक छाल तथा खदिर (कत्था) कें बकरीक मूत्रक संग सप्ताह तक सेवन सॅं उदरक कृमिनाश भए जाइत अछि। (चिकि. 77–100)।

## 13. अश्मरी

एहि रोग मे मूत्रमार्ग तथा मूत्रासय मे पाथर भए जाइत छैक। अश्मरी वृक्क एवं वस्ति मे बनैत अछि। लघ्घी सुखा कए पार्थिवांश जमा भए जाइत छैक। कुपथ्य सॅं ई होइत अछि। ई चारि प्रकारक होइत अछि – 1. वातिक, 2. पैत्तिक, 3. कफज तथा 4. शुक्रज।

अश्मरी मे कष्ट सॅं मूत्र त्याग होइत अछि। मूत्रकृच्छ्र क कारण ज्वर तथा अरूचि भए जाइत छैक। दुर्बलता, भए जाइत छैक। शिश्न मे वेदना होइत छैक।

शिलाजतु, चन्द्रप्रभावटी, पाषाण भेदचूर्ण आदि लाभप्रद होइत अछि। (चि.नि. 174)।

विद्यापति लिखैत छथि – वरूणक छाल, शुंठी, गायक दूध, यवाक्षार, गुड आदिक सेवन सॅं अश्मरी दूर भए जाइत अछि। चि. कि. 136–137।

## 14. ज्वर

सब प्रकारक रोग मे ज्वर प्रसिद्ध अछि। क्रोध सँ तथा पित्त सँ सेहो ज्वर होइत अछि। मिथ्या आहार विहार अथवा आनो रोगक कारण ज्वर भए जाइत अछि।

दोषक आधार पर ज्वर आठ प्रकारक होइत अछि –

1. वातज, 2. पित्तज, 3. कफज, 4. वातपित्तज
5. वातकफज, 6. पित्तकफज, 7. सान्निपातिक, 8. आगन्तुक।

ज्वरक अन्यान्य भेद सब सेहो कएल गेल अछि। ज्वर मे आलस्य, श्रम, वैरस्य, अश्रुपूर्णनेत्र, जम्भाई, गुरुता, क्लम, अंगमर्द, अरूचि, दौर्बल्य आदि भए जाइत अछि। ज्वर कँ नापवाक हेतु आब थर्मामीटरक प्रयोग होइत अछि। विभिन्न प्रकारक ज्वरक हेतु अलग–अलग चिकित्सा अछि। गोदुग्ध, मूंग, द्राक्षा, दाडिम, पूर्णविश्राम आदि पथ्य थिक। व्यायाम, स्नान, घुमब, गरीष्ट भोजन अपथ्य थिक। (चि. नि. पृ. 177)

विशेष द्रष्टव्य च.स.पृ. 74–175.

विद्यापति लिखैत छथि जे लघुसुदर्शनचूर्ण, महाज्वरांकुश, भूतभैरवरस, षट्तक्रतैल, चिन्तामणिरस, कनकसुन्दरीरस, अष्टादशांगक्वाथ, आदि विभिन्न प्रकारक ज्वर मे लाभप्रद होइत अछि। एकर अतिरिक्तो बहुत उपाय विद्यापति लिखने छथि – द्रष्टव्य श्लोक–24–96।

## 15. राजयक्ष्मा

दक्षप्रजापतिक 28 कन्या सँ चन्द्रमा विवाह कएने छलाह मुदा रोहिणी कँ ओ सबसँ अधिक मानैत छलाह। प्रजापति श्राप देल खिन्ह जाहि सँ चन्द्रमा कँ राजयक्ष्मा रोग भए गेलन्हि। चन्द्रमाक शरीर दिनानुदिन घटैत गेल। पश्चात् चन्द्रमा अपन श्वशुर सँ क्षमा मंगलन्हि। अश्विनी कुमार चन्द्रमाक चिकित्सा करय लगलाह। ओजोवर्धक औषधि सँ चन्द्रमाक रोग दूर भए गेलन्हि। अधिक कामासक्त भेला सँ, साहस, वेग धारण, क्षय तथा विषमाशन सँ ई रोग होइत अछि। फुसफुस मे क्षति पहुँचैत छैक। एहि प्रकार क राज यक्ष्मा 11 प्रकारक होइत अछि। मूत्र पुरीषक वेग कँ रोकला सँ, हर्ष, उत्कंठा, भय, त्रास, क्रोध, शोक, अतिमैथुन, तथा उपवास सँ राजयक्ष्मा होइत अछि।

शिरःशूल, कास, अरूचि, मलभेद, ज्वर, कफ, प्रतिश्याय, वमन, श्वास आदि राजयक्ष्मा मे होइत अछि।

एहि रोग मे आराम, बलवर्द्धक ओजोवर्धक नीक भोजन, मात्रा मे मदसेवन, मांस, घृत, दूध, नीक जलवायु, लाभप्रद मानल गेल अछि। सितोपलादि, प्रवालपिष्टि, च्यवनप्रास, रूदन्ती चूर्ण, बलादिक्षीर आदि बनल औषधि भेटैत अछि। करैला, भाटा, बिल्व, मैथुन, तैल सिद्ध अन्न, दिवा स्वप्न, क्रोध आदि अपथ्य मानल गेल अछि।

गोधूम, यवान्न, मुद्गयूष, दाडिम, आमलकी, आम्रफल, दुग्ध, अजाक्षीर, मद्य, कोमल मांस, आदि पथ्य होइत अछि। (चि.नि.पृ. 183) भा. प्र. 653., च.स.पृ. 278–303)।

विद्यापति लिखैत छथि –अश्वगन्धा कणा, शुंठी, लवंग, मिसरी आदिक चूर्ण क्षयरोग कें दूर करैत अछि। विशेष चिकि. 107–111।

## 16. शोथ

शोथ, श्वयुथु, शोफ आदि शब्द ''फूलल'' क हेतु प्रयुक्त होइत अछि। जखन कोनो अंग फूलि जाइत अछि तँ शोथ रोग कहबैत अछि। अति कमजोर शरीर भए गेला सँ, रक्त क कमी सँ, क्षार, अम्ल, तीक्ष्ण, उष्ण तथा दुष्ट भोजनक सेवन सँ, अर्श, देहक शुद्धि ठीक सँ नहि कएला सँ, आघात, कीटादिक दंश, विषयुक्त भोजन शस्त्र से क्षत तथा अन्यान्य कारण सँ शोथ रोग होइत अछि। जाहि अंग मे शोथ होइत अछि ओ अंग अधिक गर्म भए जाइत अछि। ई वातज, पित्तज, कफज, द्वन्द्वज, तथा सान्निपातिक रूप सँ पाँच प्रकारक होइत अछि।

एहि रोग मे पाचन, शोधन, पुनर्नवा, गोमूत्र, हरीतकी, लवण वर्जित आहार आदि पथ्य थिक।

गोमूत्र हरीतकी, शिलाजतु रसायन, पुनर्नवाष्टक क्वाथ, पुनर्नवा मण्डूर आदि औषधि एकर बनल उपलब्ध अछि। (चि.नि.पृ. 175)।

विद्यापति लिखैत छथि – कटु, सोहिजन, शुंठी, वर्षाभू तथा देवदारू क कांजी बनाय लेप कएला सॅ शोफ तथा पीडा दूर भए जाइत अछि।

विशेष चिकि. श्लोक 74–75।

## 17. आमवात

एहि रोग मे सन्धि स्थल (हड्डीक जोड़) पर शोथ तथा शूल होइत अछि। ज्वर सेहो होइत अछि। एकर मुख्य कारण (1). विरूद्ध आहार, (2) विरूद्ध चेष्टा, (3) व्यायाम क अभाव (4) स्निग्ध भोजन।

वाद सहसा व्यायाम मन्दाग्नि उत्पन्न करैवला कारण सब। कफांश सन्धिस्थल पर चिपकि जाइत अछि जाहि सॅ शोणित तथा वायुक गति अवरूद्ध भए जाइत छैक आ फूलब शुरू भए जाइत छैक। ई पहिने हाथ, पैर, त्रिक्, जानु तथा उरूसन्धि मे प्रारम्भ होइत अछि। बाद मे छोटो–छोटो सन्धि स्थल पर बढ़ि जाइत अछि। शरीरक संचालन रूकि जाइत अछि। अरूचि, छर्दि आदि बढ़ि जाइत छैक। आमवात, वातरक्त, संधिवात तथा क्रोष्टुशीर्षक भेद सॅ ई चारि प्रकारक अछि।

एहि रोग मे शोधन, पाचन, तथा लंघन करेबाक चाही गुडूची तथा शुण्ठी कॅ मिला कए क्वाथ बनाकए पिएबाक चाही। अण्डीक तेल पिएबाक चही। (चि.नि.पृ. 177)।

## 18. पाण्डु

पाण्डुरोग मे त्वचा क वर्ण पाण्डुर होइत अछि। ''हरितः पाण्डुरः पाण्डुः'' कहल गेल अछि। केवड़ा (केतकी, क्यौला) क धूलिक समान पाण्डुक वर्ण होइत अछि। श्वेतरक्त मिश्रित रंग कॅ सेहो पाण्डु कहैत छैक।

व्यायाम, अम्ल एवं लवण रसक अधिक उपयोग, अति तीक्ष्ण मद्यपान, दिवा स्वप्न, मृत्तिका भक्षण आदि सॅ रक्त दूषित भए जाइत अछि एवं त्वचा पाण्डुर वर्ण भए जाइत अछि। पाण्डुरोग में तीनू दोष कुपित भए जाइत अछि मुदा पित्तक दृष्टि प्रधान मानल जाइत अछि। पित्तक दोष सॅ अग्निमान्द्य होइत अछि आ अन्त मे रक्त क कमी सॅ ई रोग होइत अछि।

पाण्डुरोग 5 प्रकारक होइत अछि – वातज, पैत्तिक, कफज, सान्निपातिक तथा मृद्‌भक्षण सँ।

यदि पाण्डु पुरान भए जाय, देह अधिक रूक्ष भए जाइ, शरीर पर शोथ भए जाय, रोगी सब वस्तु कें पीअर देखय, रोगीक पुरीष कफयुक्त, बद्ध तथा अल्प हो, छर्दि, मूर्च्छा, तथा तृषा सँ पीड़ित हो, गुदा भेद तथा अण्डकोश पर शोथ भए जाय तँ ओ पाण्डुरोग असाध्य मानल जाइत अछि।

पंचगव्य घृत, महातिक्तघृत, कल्याणघृत, दाडिमाद्यघृत, कटुकाद्यघृत, पथ्याघृत, दन्तीघृत, द्राक्षाघृत, आदि एकर औषधि थिक। दुग्ध तथा गोमूत्रयुक्त दुग्ध पथ्य होइत अछि। गोधूम, यवान्न, मुद्‌ग, मसूर, जांगलमांस, तथा पूर्णविश्राम पथ्य होइत अछि।

अग्निताप, आतप, मैथुन, क्रोध, अध्वगमन, पित्तल, अन्नपान आदि अपथ्य होइत अछि। (चि.नि.पृ. 212),(भा.प्र.पृ. 632), चरकसं.पृ. 486.।

## 19. कामला (जौण्डिश)

कामला रोग मे रोगीक त्वचा, नख तथा मुखक वर्ण पिअर भए जाइत अछि। आँखि सेहो पीत वर्णक भए जाइत अछि। पुरीष किछु लाल एवं लघ्घी पिअर होइत छैक। दौर्बल्य, अरूचि, दाह, तथा शक्तिक ह्रास भए जाइत अछि। पित्तवर्द्धक आहार विहार सँ ई रोग होइत अछि। पाण्डुक वाद कामला होइत अछि। स्वतन्त्ररूप सँ सेहो कामला रोग होइत अछि। पाण्डुरोग क समान एहू रोग मे पथ्यापथ्य करक चाही। हर्रे क संग गुड़ एवं मधुक सेवन लाभप्रद होइत अछि। लोहभस्म, हरीर, तथा हरैद कें समान मात्रा मे मिला कए मधु तथा घृतक संग सेवन लाभप्रद होइत अछि। (चि.नि.पृ. 218) (चरक.सं.पृ. 471)।

## 20. कुष्ठ

ई रोग त्वचा तथा मांस मे होइत अछि। प्रकुपित वात, पित्त तथा कफ सर्वप्रथम रक्त कें दुष्ट करैत अछि एवं त्वचा मे ई रोग भए जाइत अछि। एहि रोगी कें पहिने अतिस्वेद अथवा स्वेदाभाव होइत छैक। मुख, नितम्ब, पाद तथा बाहु पर ई होइत अछि। ओतय दाग भए

जाइत अछि। एक स्थान पर छूटि कए दोसर स्थान पर भए जाइत अछि। कण्डू, दाह एवं शूल सेहो कुष्ठ मे होइत अछि।

कुष्ठ 18 प्रकारक होइत अछि। 7 महा कुष्ठ और 11 क्षुद्रकुष्ठ।

7 महाकुष्ठक नाम – 1. कापाल, 2. उदुम्बर, 3. मण्डल, 4. ऋष्य जिह्व, 5. पुण्डरीक, 6. सिध्म, 7. काकणक।

11 क्षुद्रक कुष्ठक नाम – 1. एक कुष्ठ, 2.चर्म, 3.किटिम, 4. विपादिका, 5. अलसक, 6. दद्रुमण्डल, 7. चर्मदल, 8. पामा, 9. कच्छू, 10. विस्फोट, 11. शतारू।

कुष्ठ रोग त्रिदोषज होइत अछि। अतएव जाहि दोषक प्रबल लक्षण भेटय ओकर चिकित्सा करबाक चाही। स्वच्छवायु तथा प्रकाशयुक्त स्थान मे रहबाक चाही। आहारविहार उचित करबाक चाही।

गोमूत्रक संग शिलाजतुक प्रयोग करबाक चाही। अथवा वज्रभस्म के शिलाजीतक संग प्रतिदिन सेवन करबाक चाही।

एहि रोग मे मांस्यादि लेप, एलाद्यालेपन, त्रप्वादिलेपन, एडगजादिलेप नीक मानल जाइत अछि।

चक्रमर्दक बीज, सैन्धवनमक, रसौत, लोध्र तथा कैथक लेप बना कए प्रयुक्त करबाक चाही।

मुस्तादि चूर्ण, त्रिफलादिचूर्ण, पटोलमूलादि क्वाथ, मध्यासव आदि एहि रोगक बनल औषधि थिक।

तिक्तेक्ष्वाकु तैल, कनकक्षीरी तैल, तिक्तषट्पल घृत, महातिक्त घृत आदि नीक औषधि लगेबाक हेतु होइत अछि। (चि.नि.पृ. 224), (विशेष द्रष्टव्य–चरकसं. पृ. 248–275)।

## 21. अर्श

अर्श रोगक गणना मांसज विकार मे कएल जाइत अछि। एहि रोग मे गुदवली मे मांसांकुर उत्पन्न भए जाइत अछि। सुश्रुत क अनुसार धमनीक

दुष्टि सँ अर्श होइत अछि। अर्शरोगक क्षेत्र गुदा मानल गेल अछि मुदा किछु शास्त्रकारक अनुसार मुख, शिश्न, नासिका, कर्ण तथा त्वचा मे सेहो ई रोग होइत अछि।

मिथ्या आहार विहार सँ कठोर आसन पर वेशी काल वैसला सँ, पाथर, घासफूस सँ गुदा साफ कएला सँ, वेग धारण सँ, गर्भस्राव तथा गर्भपात सँ ई रोग होइत अछि। अर्श रोग मे अग्निमान्द्य तथा आम अवश्य होइत अछि।

वातज, पैत्तिक, कफज, सान्निपात्तिक, रक्तज एवं सहज भेद सँ ई 6 प्रकारक होइत अछि।

अर्श सँ पूर्व अजीर्ण, आरोट, विबन्ध, ग्रहणीदोष, कार्श्य, गुदा मे पीड़ा आदि होइत अछि।

अर्श रोग क शल्य चिकित्सा होइत अछि। अर्श रोग मे भल्लातक विशेष लाभप्रद होइत अछि। कांकायन गुटी, अभयारिष्ट, भल्लातकावलेह, चाङ्गेरीघृत, अर्शकुठार रस आदि बनल औषधि भेटैत अछि।

कुलत्थ, यव, गोधूम, कांजी, शूरण, पटोल, तक्र, नवनीत, अजादुग्ध, मृगमांस, आमलकी आदि लाभप्रद होइत अछि।

वेगावरोध, मैथुन, पृष्ठयान आदि अपथ्य मानल गेल अछि। (चि. वि. पृ. 245) (चरक सं. पृ. 416–447)।

## 22. गलगण्ड

गर्दनि मे अवटुका ग्रन्थि क बढ़ि गेला सँ गर्दनिक सामने तथा पार्श्वमे शोथ भए जाइत अछि। एकरे नाम गलगण्ड थिक। घेघ सेहो एकरा मैथिली मे कहैत छैक।

वायु तथा कफ दूषित भए मांस एवं मेद कें दूषित कए गलगण्ड उत्पन्न करैत अछि।

गलगण्ड, तीन प्रकारक होइत अछि –
1. वातज, 2. श्लैष्मिक तथा 3. मेदज। (चि.नि.पृ. 251)।

## 23. गण्डमाला

ई रोग वात कफ प्रधान होइत अछि। एहि मे मांस तथा मेदक दुष्टि भए जाइत अछि। गर्दनि मे वैर अथवा आमला सनक बहुत रास गिल्टी भए जाइत अछि। किछु समयक बाद ई पाकय लगैत अछि। (चि.नि. पृ. 252)

## 24. अपची

गण्डमालाक किछु ग्रन्थि फूटि जाइत अछि तथा ठीक भए जाइत अछि पुनः किछु ग्रन्थि उत्पन्न भए जाइत अछि। पुनः पुनः ग्रन्थिक पाकब तथा दोसर ग्रन्थिक निकलनाई अपची कहबैत अछि।

गलगण्ड, गण्डमाला तथा अपची मे प्रायः समान चिकित्सा कएल जाइत अछि।

कांचनार, गुग्गुल, ताम्रभस्म, स्वर्णवसन्तमालती, चन्द्रप्रभा तथा मनःशिला क यथायोग्य प्रयोग करबाक चाही।

उपर सँ लगेबाक हेतु कांचनारत्वक् लेप, वरूणत्वचाक लेप, तुम्बीतैल तथा गुञ्जाक तैल मे सँ कोनो तेल लगेबाक चाही। पेट साफ रहक चाही अतएव दीपन–पाचन औषधि क प्रयोग करबाक चाही। (चि.नि. पृ. 255)।

## 25. प्रमेह

एहि रोग मे रोगी कँ मूत्र क प्रवृत्ति वेशी होइत छैक तथा मूत्र सेहो गंदा निकलैत अछि। **''प्रकर्षेण मेहतीति प्रमेहः''** कहल गेल अछि।

व्यायाम के अभाव, आसन पर वेशी देरी तक वैसल रहब, अधिक शयन, अधिक दूध दही तथा मिष्ठान्नक प्रयोग, नवीन अन्न क वेशी प्रयोग तथा अन्यान्य कारण सँ ई रोग होइत अछि। 20 प्रकारक प्रमेह क संप्राप्ति आयुर्वेद मे मानल गेल अछि।

जौ क बनल वस्तु तथा मधु क सेवन, चन्द्रप्रभावटी, लोध्रासव, आदि लाभप्रद होइत अछि। कोद्रव, मुद्ग, कुलत्थ, यव, तिक्तशाक, जांगलमांस, लघु व्यायाम, आदि पथ्य मानल गेल अछि।

तेल, घृत, गुड, शुक्त, मद्य, इक्षुरस, मिष्ठान्न, आनूप मांस, नवान्न, दिवास्वप्न, धूम्रपान, रक्तमोक्ष तथा मूत्रवेगधारण अपथ्य मानल गेल अछि। (विशेष द्रष्टव्य–निदान चिकित्सा पृ. 253), (च.स.पृ. 227–244)

विभिन्न रोगक विस्तृत विवेचनक हेतु विभिन्न रोगक चिकित्सा तथा निदान आदिक लेल आयुर्वेदक भावप्रकाश, भैषज्य रत्नावली, चरक संहिता, सुश्रुत वाग्भट्ट तथा अन्यान्य ग्रन्थक अवलोकन ठीक सँ करबाक चाही। हिन्दी मे निदान चिकित्सा (प्रथम खण्ड) (वैद्य शिवचरणध्यानी कृत 1768, भक्तवत्सल प्रकाशन मन्दिर वक्सीभवन, आकरों का रास्ता जयपुर– 1 ) नीक छोट ग्रन्थ अछि।

| | |
|---|---|
| उन्मादक हेतु | च.स.पृ. 305 |
| अपस्मार हेतु | च.स.पृ. 328 |
| शोथ हेतु | च.स.पृ. 354 |
| उदर रोग हेतु | च.स.पृ. 382 |
| ग्रहणी हेतु | च.स.पृ. 452 |
| छर्दि हेतु | च.स.पृ. 578 |
| तृष्णा हेतु | च.स.पृ. 613 |
| विष हेतु | च.स.पृ. 624 |
| मदात्यय हेतु | च.स.पृ. 668 |
| व्रण हेतु | च.स.पृ. 697 |
| मूत्रकृच्छ्र हेतु | च.स.पृ. 722 |
| शिरोरोग हेतु | च.स.पृ. 736 |
| ऊरूस्तम्भ हेतु | च.स.पृ. 766 |
| आतव्याधि हेतु | च.स.पृ. 775 |
| योनिव्यापत् हेतु | च.स.पृ. 841 |
| स्तन्य रोग हेतु | च.स.पृ. 871 |
| बाल रोग हेतु | च.स.पृ. 878 |

## 26. नपुंसकत्वदोष

पुरुषक जननेन्द्रिय सम्बन्धी विशेष कमजोरी नपुंसकत्व थिक। एहि रोगक पुरुष क लिङ्ग मे दोष भए जाइत छैक। काम–कौतूहल मे नपुंसक क कारण एहि प्रकार सँ कहल गेल अछि –

**हस्तकर्मरता ये च दुष्टेन्द्रियकुयोनिषु।**
**रमंते योनिरोगासु वृद्धस्त्रीषु च ये नराः।।**
**मलिनांग्या च गुर्विण्या ऋतुमत्या तथैव च।**
**मेदस्व्यनूपजाताभी रूक्षशीतलभोजनैः।।**
**तेषु तेषु प्रपद्यन्ते केचिद्रोगास्तु देहिनाम्।**
**क्षीणधातुत्वक्लीवत्वकारणं सौश्रुतंमतम्।।**
**उपदंशः प्रमेहाश्च पिडिकाश्च भगन्दरः।**
**इन्द्रियं मैथुनरतं पीड्यते क्लीबसंभवः।।**
**वात पित्त कफैश्चैव वीर्यमार्गेण पीड्यते।**
**कृच्छ्राश्मरी भवेदाख्या षंढत्वकारणं परम्।।**

(कामकौतूहल–पृ. 2)

अर्थात् हस्तमैथुन केनिहारके, दुष्टयोनिवाली स्त्रीक संग संभोग कएला सँ, अथवा पशु आदि (गाय, भैस, घोड़ी, कुत्ती) क संग मैथुन कएला सँ, पुरुषमैथुन कएला सँ, वृद्धा स्त्रीक संग मैथुन कएला सँ, योनिरोगवाली स्त्रीक संग मैथुन कएला सँ, गर्भिणी स्त्रीक संग मैथुन कएला सँ, मलिन अंगवाली स्त्री क संग मैथुन कएला सँ, ऋतुमती अथवा तत्काल स्नान क वादे संभोग कएला सँ, अधिक स्थूल शरीरवालीक संग मैथुन कएला सँ, अनूपदेश (शीतलदेश) मे उत्पन्न स्त्रीक संग मैथुन कएला सँ, रूखा तथा शीतल भोजन कएला सँ मनुष्य मे नपुंसकता आबि जाइत छैक। धातुक क्षीण भेनाइ नपुंसकताक कारण थिक। उपदंश, प्रमेह, प्रमेहपिडका, तथा भगन्दर रोग भेलाक वाद जे व्यक्ति मैथुन करैत छथि, हुनका नपुंसकता दोष भए जाइत छन्हि। वात, पित्त तथा कफ क कारण सेहो वीर्यक मार्ग पीडित होइत अछि। मूत्रकृच्छ्र तथा अश्मरी (पाथर) क कारण सेहो नपुंसकता आंबि जाइत छैक।

घृत, दुग्ध, मिसरी, मधुर आहार, गहुम, उड़ीद, चाउर, सिंघारा, कसेरू, सफेद कटेरी, खर्बूजा, कंदमूल, मुलेठी (महुआ), सेमरक फूल, खजूर, नारियल, बादाम तथा अन्य पौष्टिक तत्वक सेवन सँ नपुंसकता दूर

होइत छैक। वाजीकरणद्रव्यक सेहो सेवन करक चाही। जेना मसूर तथा उड़द क चूर्ण कें महीसक दूध मे उबालि, गायक घृत क संग सेवन कएला सँ नपुंसकता दूर भए जाइत छैक।

(विशेष द्रष्टव्य चरक संहिता पृ. 65–93)

# द्वितीय–अध्याय

द्वितीय अध्याय मे अतिविद्या, अभया (हरीतकी–हरीर), अमृत (वत्सनाभ), अमृता (गुडूची–गुड़ीच), अहिफेन (हफीम), आभा (बबूर), आरग्वध (अमलतास), कारवी (कृष्णजीरक–कालाजीरा), कारवी (अजमोदा), कुटज, कुलत्थ (कुरथी), कुष्ठ (कूठ), कोल (बदर), खदिर, गुञ्जा (रत्ती), गोक्षुर, चक्रमर्द (चकवड), जाति (चमेली), जाति (जूही), जम्बीर, तिक्तोत्तम (पटोल), त्रिफला, दार्वी, द्राक्षा, निर्विषी, निम्ब (नीम), कमल, पाठा, पर्पट (पित्तपापरा), पुष्करमूल, वाकुची, बिल्व, भृङ्गराज, मधुक, मोचरस, मंजिष्ठा (मजीठ), यवानी (अजवायन), राठ, लज्जा, (छुईमुई–लजविज्जी), लोध्र, वरूण, बिभीतक (बहेड़ा), व्याघ्रपादी, शतपुष्पा (शोंफ), हिंगु, शिरीष, सर्पगन्धा, तथा अन्यान्य जड़ी बूटीक परिचय देल अछि। एहि औषधि तथा बूटी सभक ज्ञान सँ बहुत रोग दूर कएल जा सकैत अछि।

## 1. अतिविद्या

अतिविद्या क नाम शुक्लकन्दा, भंगुरा, घुणवल्लभ, शिशुभैषज्य आदि अछि। मिथिला मे अतीस सेहो एकरा लोक कहैत अछि। बच्चा सबकेँ बहुत प्रकार क रोग मे एकर औषधि देल जाइत अछि। ई लाल रंगक होइत अछि। एकर जड़ि शिखराकार होइत अछि। एकरा श‍ृङ्गी सहो कहैत अछि। ई विष मात्र क शत्रु होइत अछि अतएव एकरा **''प्रतिविषा''** सेहो कहैत अछि। हिमालयक केदारनाथ लग ई वेशी भेटैत अछि। गाम सब मे शक्तिहीन अतीस क गाछ होइत अछि। एकर छोट गाछ मात्र 2 सँ 4 फीट नाम होइत अछि। एकर मूलक औषधि बनैत अछि। ई बड़ तीत होइत अछि। वाग्भट्ट लिखैत छथि जे बालरोग मे अतिविषा शर्दी, ऊकासी तथा ज्वर केँ नष्ट करैत अछि।

भाव प्रकाश मे कहल गेल अछि –

**विषा सोष्णा कटुस्तिक्ता पाचनी दीपनी हरेत्।**
**कफपित्तातिसारामविषकासवमिकृमीन् ।।**

अर्थात् ई अतिविषा (अतीस) दीपनीय, पाचनीय, संग्राहक एव सर्वदोष केँ नाश करैत अछि। कफ, पित्त, अतिसार, आमातिसार, ज्वर, अरूचि, चाली, शर्दी, शूल आदि मे ई महौषधि होइत अछि।

चरक लिखैत छथि जे आमातिसार मे अतीसक चूर्ण, सोंठि क चूर्ण एक एक तोला मिलाय एकसेर पानि मे उबालि पीबाक चाही।

(अतीस एवं अतसी मे भेद बुझक चाही। अतसी तीसीक नाम थिक। तीसी के जल मे पीसि खट्टा दही मिला कए घाव पर लेप कएला सॅ घाव पाकि जाइत अछि)।

## 2. अभया (हरीतकी, हरीर)

अभया, अव्यथा, हरीतकी, पथ्या, शिवा, हड़, हर्रे, आदि हरीर क नाम थिक। आयुर्वेद मे ई महौषधि मानल गेल अछि। एकर सेवन सॅ कोनो प्रकारक भय नहि रहैत अछि अतएव एकर नाम अभया अछि। एकर सेवन सॅ सब व्यथा दूर भए जाइत अछि अतएव एकर नाम अव्यथा अछि। एकर सेवन सॅ पूर्ण कल्याण होइत अछि, अतएव एकर नाम शिवा अछि। **''हरीतकी पथ्यानां श्रेष्ठा''** कहल गेल अछि।

**आयुषां पौष्टिकीं धन्यां वयसः स्थापनीं पराम्।**
**सर्वदोषप्रशमनीं बुद्धिन्द्रियबलप्रदाम्।।**
**अर्शांसि ग्रहणीदोषं पुराणं विषमज्वरम्।**
**हृद्रोगं सशिरोरोगमतिसारमरोचकम्।।**
**कासं प्रमेहमानाहं प्लीहानमुदरं नवम्।**
**कफप्रसेकं वैस्वर्यं वैवर्ण्यं कमला कृमीन्।।**
**श्वयथुं तमकं छर्दिं क्लैव्यमङ्गवसादनम्।।**

अर्थात् हरीतकी आयु बढ़बैत अछि, पौष्टिक थिक, सब प्रकारक दोष कें नाश करैत अछि, बुद्धि एवं इन्द्रिय कें शक्ति दैत अछि। अर्श, संग्रहणी, पुरानरोग, हृदयरोग, माथक रोग, अतिसार, कास, प्रमेह, पीलही, कफ, कमलारोग, चाली, अन्यकीड़ा, शोथ, छर्दि, नपुंसकत्व तथा अन्यान्य रोग मे बड़ लाभ प्रद होइत अछि।

अर्श रोग मे भोजन सॅ पूर्व प्रतिदिन हरीतकीक चूर्ण एवं गुड़ क सेवन करक चाही।

अतीसार मे गुड़, घृत, मधु एवं तिलतेल क संग हरीतकी क सेवन करक चाही।

कोनो प्रकारक पेट रोग मे लगातार हरीर क सेवन लाभप्रद होइत अछि।

पक्वातिसार मे गर्मजल क संग हरीर खेबाक चाही।

कफजन्य पाण्डुरोग मे गोमूत्र मे फुला कए हरीर के सेवन करी।

वमन भेला पर मधुक संग हरीतकीक सेवन करबाक चाही।

वातरक्त मे गुड एवं हरीतकी क सेवन करक चाही।

कफ जन्य श्लीपद मे हरीतकी क चूर्ण गोमूत्रक संग पीबाक चाही।

गुल्म रोग मे गुड़क संग हरीतकी क चूर्ण खेबाक चाही।

हिक्का मे गर्म पानिक संग हरीतकीक सेवन करी।

अश्वमरी में हरीतकी क गुठली सँ सिद्ध कएल दूध पीबाक चाही।

कंठ रोग मे हरीतकीक क्वाथ पीबाक चाही।

हरीतकी क फल क उपर का हिस्सा के घी मे तरि सूक्ष्म चूर्ण बनाय घी क संग सेवन कएला सँ बलोत्पत्ति होइत अछि। शरीर पुष्ट भए जाइत अछि।

हरीतकी एवं पिप्परि क चूर्ण के मधुक संग सेवन सँ रक्तपित्त नष्ट भए जाइत छैक।

पित्तशूल मे गुड़ एवं घृतक संग हरीतकी चूर्णक सेवन करक चाही।

रूग्दाह नामक सन्निपात ज्वर मे तैल, घृत एवं मधुक संग हरीतकी क चूर्ण चटबाक चाही।

कुष्ठ, ब्रण, आदि रोग मे हरीतकी कें तरि के खेबाक चाही। उपदंश नामक रोग मे हरीतकी क चूर्ण कें रसवन्तीक संग मिलाय लिङ्ग पर लेप करक चाही।

गोमूत्र क संग हरीतकी क चूर्ण क सेवन सॅ दद्रु, शोथ, प्रमेह, कफ, कण्डु, गुल्म, पाण्डु, तथा अन्याय रोग नष्ट भए जाइत अछि।

अण्डकोष बढ़ि गेला पर सात दिन तक हरीतकी कें गोमूत्र मे फुलाय पुनः अण्डीक तैल मे भूजि सैन्धवलवणक संग बना लिअ। प्रतिदिन प्रातः सांय गर्म जलक संग खाउ। सब कष्ट दूर भए जायत।

गृध्रसी एवं सन्धिवात मे अण्डीक तेलक संग हरीतकीक सेवन करक चाही।

मन्दाग्नि रोग मे सोंठिक चूर्ण, गुड, एवं सैन्धवचूण क संग हरीतकी खयबाक चाही। एहि सॅ भूख खूब लागत।

मधुक संग हरीतकी खएला सॅ विषमज्वर नष्ट भए जाइत अछि।

अम्लपित्त मे द्राक्षा एवं हरीतकी चूर्ण खेबाक चाही।

समस्त नेत्र रोग मे हरीतकी लाभप्रद होइत अछि। हरीतकी क सूक्ष्मचूर्ण के घृत मे मिला कए पीसि बिडालक करबाक चाही। (आखिक चारु कात बाहर मे कएल गेल लेप विलाडक कहबैत अछि)।

सैन्धवनून, पिप्पलि, सोठि एवं हरीतकीक प्रयोग सॅ पाचन शक्ति बढ़ि जाइत छैक।

माथ क रूस्सी आदि मे आमक गुठलीक चूर्ण (पखुआक चूर्ण) एवं हरीतकीक चूर्ण के दूध मे फुला कए माथ मे लगाउ।

हरीतकी कैक प्रकारक होइत अछि। सब केर अलग–अलग प्रयोग अछि।

अभयारिष्ट, शिवाक्षार आदि दवाई सेहो बनल भेटैत अछि।

## 3. अमृत

वत्सनाभ, अमृत, क्ष्वेड, गरल, विष आदि अमृत का नाम अछि। ई औषधि मोह उत्पादक होइत अछि अतएव एकर नाम क्ष्वेड़ अछि। ई विष तथा गरल सेहो कहबैत अछि। एकरा वेशी मात्रा मे खएला सँ मृत्यु भए सकैत अछि। गायक बछड़ा एकरा खेला सँ अवश्य मरैत अछि। अतएव वत्सनाम एकर नाम अछि। हिमालयक पहाड़क काते कात ई होइत अछि। एकर मूलक प्रयोग वेशी होइत अछि।

आयुर्वेदप्रकाश मे कहल गेल अछि –

**कटुतिक्तकषायं च मदकारि सुखप्रदम्।**
**व्यवायि शीतनुद् ग्राहि कुष्ठवातास्रनाशनम्।।**
**अग्निमान्द्यं श्वासकासं प्लीहोदरभगन्दरान्।**
**गुल्मपाण्डुव्रणार्शांसि नाशयेद्विधिसेवितम्।।**

अर्थात् ई बात, कफ, कुष्ठ, शोथ, अग्निमान्द्य, श्वास, प्लीहा, उदर, ज्वर, कण्ठरोग सन्निपात एवं मधुमेह रोग कँ दूर करबा मे अपूर्व क्षमता रखैत अछि। वत्सनाभ मे वरावरि भाग मे सौभाग्य मिला देला सँ विषक अंश दूर भए जाइत अछि। मरीच सेहो एकर साथ विशेष लाभप्रद होइत अछि।

मुदा क्रोधी, पित्तप्रकृति, नपुंसक, क्षयी, श्रमजीवी, थाकल व्यक्ति, गर्भिणी, बालक एवं वृद्ध कँ वत्सनाभ नहि खएबाक चाही।

मृत्युञ्जयरस, पंचामृतरस, शिवताण्डवरस, कफकेतुरस, विषरसायन आदि में एहि औषधिक मात्रा अवश्य रहैत अछि।

## 4. अमृता–(गुडूची)

अमृता कँ गुडूची, छिन्नरूहा, कुण्डलिनी, वत्सादनी, तन्त्रिका, मधुपर्णी आदि नाम सँ सेहो चर्चा भेटैत अछि। ई भारतवर्षक प्रायः सब प्रान्त मे होइत अछि। गुड़ीच क सत्व मिथिला मे बड़ वेशी प्रयुक्त होइत अछि। गुड़ीच क लत्ती कँ सूखा कए काटि कए कूटि कए ओकर सत्त्व निकालल जाइत अछि। वर्षा सँ पूर्वे एकर लत्ती के काटि के सुखा लेबाक चाही। वायुरोग मे ई बड़ लाभप्रद होइत अछि। **"वायुं वत्सादनी हन्यात्"** कहल गेल अछि। चरक सूत्र मे कहल गेल अछि –

अमृता सांग्रहिक–वातहर–दीपनीय–श्लेष्म–
शोणित -विबन्धप्रशमनानाम् ।।

अर्थात् संग्रहिणी में वातरोग मे, दीपनक हेतु श्लेष्म रोग क नाशार्थ, रक्त रोग मे तथा विबन्ध मे लाभप्रद होइत अछि। गुड़ीच क रस कटु (तीत) होइत अछि। कामला रोग मे गुड़ीचक रस मधुक संग सेवन करी। पित्त क कारण वमन मे गुड़ीच क रस एक खुरचन पिआय दिऔक। ठीक भए जाएत। वातरस मे दूध तथा तेल मे गुड़ीच क रस मिलाय खूब आगि पर पका कए मालिश करबाक चाही। प्रसूति कँ दूधक सफाई क हेतु गुड़ीच क क्वाथ पीबा क चाही। अर्शक रोग मे गुड़ीचक चूर्ण खाय तक्र पीबाक चाही से सुश्रुतक वचन अछि। वाग्भट्ट कहैत छथि जे सब प्रकारक प्रमेह मे गुड़ीच क संग मधु क सेवन करक चाही।

गुड़ीच क सेवन सँ बल एवं वीर्य बढ़ैत अछि। केश उड़नाई बन्द भए जाइत अछि। कुष्ठ रोग मे गुड़ीच क रस खूब पीबाक चाही से सोढल क मत छन्हि। गुड़ीच क रसक सेवन क बाद मूंगक दालि, भात एवं घृत विशेष लाभप्रद होइत अछि। राजेमार्तण्ड मे कहल गेल अछि जे पिलही मे गुड़ीचक जड़ि के घसि के पीबाक चाही। श्लीपद रोग मे गुडूचीक स्वरस तिलतेलक संग सेवन करक चाही।

बङ्गसेन लिखैत छथि जे हृदयस्थित वायु मे कालीमीर्च क संग प्रातः गुड़ीचक चूर्णक सेवन करबाक चाही।

शाङ्गधर लिखैत छथि जे जीर्णज्वर मे गुडूचीक हिम पीला सँ रोगी ठीक भए जाइत अछि। ऑखिक व्यथा मे गुड़ीच त्रिफलाक क्वाथ, पिप्परि एवं मधुक सेवन करबाक चाही।

अमृतासत्व, गुडूच्यादि मोदक, अमृताद्यरिष्ट, अमृतादिक्वाथ, अमृताष्टक, आदि गुड़ीच सँ युक्त नीक आयुर्वेदिक दवाई उपलब्ध होइत अछि।

## 5. अहिफेन (अफीम–हफीम)

अहिफेन (हफीम), मालवा, पटना, राजस्थान, गॉजीपुर आदि स्थान पर होइत अछि। एकर गाछ 3–4 फूट क होइत अछि। पोस्तादाना एकरे बीज कें फारला सॅ निकलैत अछि। आयुर्वेदशास्त्र मे कहल गेल अछि –

**अहिफेनरसे तिक्तं विपाके कटुकं विषम्।**
**स्तम्भनं रूक्षमुष्णंच वेदनास्थापनं परम्।**
**स्वेदनं स्वापजननं कफरोगविनाशनम्।।**

अर्थात् हफीम क रस तीत होइत अछि। ई विष तुल्य होइत अछि। स्वच्छ जल मे हफीम कें अदरखक स्वरस क एक्कैसवेर भवना कएला सॅ हफीम शुद्ध होइत अछि। ई बाजीकरण मे बड़ सहायक होइत अछि। पैघलोक हफीमक वेशी सेवन करैत छथि। ई पीला सॅ निद्रा वेशी होइत छैक। मधुमेह मे हफीम क सेवन सॅ चीनीक अंश कम भए जाइत छैक। कफ तथा अन्यान्य रोग मे सेहो एकर प्रयोग होइत अछि। शोथ पर धतूरकपातक रस एवं हफीम क लेप लाभप्रद होइत अछि। हफीमक खूब कम मात्रा मे सेवन करक चाही। दमा, उदर शूल, खाँसी, आदि मे ई लाभप्रद होइत अछि

अहिफेनासव, महावातराजरस, दुग्धवटी आदि बनल दवाई मे एकर अंश अवश्य रहैत अछि।

## 6. आभा (बबूल–बबूर)

बब्बुल, आभा, बबूर, कीकर आदि एकर नाम अछि। एकर विषय मे आयुर्वेदशास्त्रक ग्रन्थ सब एहि प्रकार सॅ लिखैत अछि –

**बर्ब्बुरस्तु कषायोष्णः कफकासामयापहः।**
**आमरक्तातिसारघ्नः पित्तदाहविनाशनः।।** (रा.नि.)

अर्थात् कफ, खॉसी अमवात, अतिसार, पित्तरोग, दाह आदि मे बबूर लाभप्रद होइत अछि।

चक्रदत्तक अनुसार बबूर क कोमल पात क चूर्ण पीला सॅ अतिसार नष्ट भए जाइत अछि। भावमिश्र लिखैत छथि जे स्नायुक रोग मे बबूर क बिआ के पीसि के लगा देबाक चाही। अस्थिभंग भेला सॅ बबूरक फली क

चूर्ण मधुक संग तीन दिन तक चाटला सँ टूटल हड्डी जूटि जाइत छैक। जलोदर रोग मे बबूरक छाल कैं जल मे उबालि के घन बना कए तक्रक साथ पीबाक चाही से बंगसेनक मत अछि। बबूर क गोंदक उपयोग सेहो आयुर्वेद मे खूब होइत अछि। गर्भवती स्त्री जँ नौ मास पर्यन्त बबूरक कोमल पत्ती खाइत रहय तँ ओकर बच्चा गोर होइत छैक।

## 7. आरग्वध (अमलतास)

कर्णिकार, कृतमालक, आरग्वध, शम्पाक, राजवृक्ष, दीर्घफल, प्रग्रह, आरेवत, तथा अमलतास आदि एकर नाम अछि।

ई बहुत रोग कैं नष्ट करैत अछि। एकर रस मधुर, एवं तिक्त होइत अछि। आयुर्वेद मे कहल गेल अछि –

**आरग्वधो गुरूः स्वादुः शीतलो मृदुरेचनः।**
**ज्वर – हृद्रोगपित्तास्र व वातोदार्क्तशूलनुत्।**
**तत्फलं स्रंसनं रूच्यं कुष्ठपित्तकफापहम्।**
**ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम्।।** (भाव प्रकाश)

अर्थात् ई ज्वर, हृदयरोग, पित्त, आस्रव, वातरोग, शूल, कुष्ठ, कफ, तथा अन्यान्य रोग मे लाभप्रद होइत अछि। चरक लिखैत छथि जे अमलतासक फलक गुद्दा अंगूरक (किसमिस)क रसक संग दूध सहित पिआ देला सँ ज्वर दूर भए जाइत छैक। कुष्ठ रोग मे अमलतासक पंचांग क कषाय कैं नहेबाक समय तथा पीबाक समय उपयोग करक चाही। कामलारोग मे कुसियार क रसक संग अमलतासक फलक मज्जाक सेवन करी। पित्तोदर मे अमलतासक फलक मज्जाक क्वाथ पीबाक चाही। घाव कैं अमलतासक रस सँ धोबाक चाही। कुष्ठ रोग मे अमलतासक मूल कैं एक सौ बेर पकौल घीक संग नियमित रूप सँ खेबाक चाही। सन्धिबात मे अमलतासक पत्ता कैं सरसोक तेल मे पका के खेबाक चाही। गंडमाला रोग मे भातक मॉड़ मे अमलतासक मूल के घंसि के लेप करक चाही। द्रद्रु, कण्डू आदि मे कांजीक संग अमलतासक पत्ता के पीसि के लेप करबाक चाही। कब्जियत मे सेहो ई नीक औषधि थिक।

## 8. कारवी (कृष्णजीरक–कालाजीरा)

कृष्णजीरक, जरणा, कारवी, काश्मीरजीरक, कालाजीरा, आदि **'कारवी'** क नाम अछि। काश्मीर, अफगानिस्तान, ईरान, गढ़बाल आदि मे ई उपजैत अछि। एकर बीजक विशेष उपयोग आयुर्वेद मे होइत अछि।

चरक सूत्र मे कहल गेल अछि –

कारवी – **''रोचनं दीपनं वातकफदौर्गन्ध्यनाशनम्।।**

आयुर्वेदशास्त्र मे अन्यत्रो कहल गेल अछि –

**जरणा कटुरूष्णा च कफशोथनिकृन्तनी।**
**रूच्या जीर्णज्वरघ्नी च चक्षुष्या ग्राहिणी परा।।**

अर्थात् ई दीपन, दुर्गन्धनाशक, ग्राही, वात–कफ–शोथ एवं जीर्णरोग नाशक होइत अछि। आध्मान, उदरशूल, पेटक गरवरी तथा अन्यो रोग मे कृष्णजीरक विशेष लाभप्रद होइत अछि।

## 9. कारवी (अजमोद)

अजमोदा, खराश्वा, बस्तमोदा, दीप्या, कारवी आदि एकर नाम अछि। गदहा कँ ई भोजन बड़ नीक लगैत छैक। भावप्रकाश मे कहल गेल अछि –

**अजमोदा कटुस्तीक्ष्णा दीपनी कफवातनुत्।**
**उष्णा विदाहिनी हृद्या वृष्या बलकरी लघुः।**
**नेत्रामय कृमिच्छर्दिहिध्मबस्तिरूजो हरेत्।।**

अर्थात् ई शोथरोग कँ दूर करैत अछि। दीपन, पाचन, तीक्ष्ण होइत अछि। पित्तरोग, कफ, वात, नेत्ररोग, वमन, हिक्का, अर्श आदि मे लाभप्रद होइत अछि। यकृत, प्लीहा, आदि मे सेहो एकर उपयोग लाभप्रद होइत अछि। स्नायुक शैथिल्य भेला सँ ई औषधि लाभप्रद अछि। अपस्मारक रोगी कँ एकर सेवन नहि करक चाही।

## 10. कुटज (कुडा)

वत्सक, शक्र, गिरिमल्लिका, वृक्षक, कुटज, इन्द्र वृक्ष आदि एकर नाम अछि। एकर छाल, बीज एवं पुष्प आयुर्वेदशास्त्र मे लाभप्रद मानल गेल अछि। मदनपालनिघण्टु मे कहल गेल अछि –

**कुटजः कटुको रूक्षो दीपनस्तुवरा लघुः।**
**अर्शोप्रतिसारपित्तास्रकफतृष्णा मफ्तिनुत्।।**
**तत्पुष्पं शीतलं तिक्तं कषायं लघुदीपनम्।**
**वातलं कफपित्तास्रकुष्ठातीसारजन्तुजित्।।**
**तस्य शिम्बिभवं शाकं व्यञ्जनं चामवातजित्।**
**रूच्यं कफघ्नं रक्तातिसारकुष्ठकृमीन् जयेत्।।**

अर्थात् अतिसार, अर्श, कुष्ठ, रक्तपित्त, व्रण, प्रमेह, शुक्र, क्षयरोग, तथा अन्यान्य रोग मे कुटजक प्रयोग लाभप्रद होइत अछि।

क्षयरोगी कँ भातक माँड़ क संग इन्द्रयव (कुटज) तथा सोंठिक चूर्णक सेवन करक चाही।

कुष्ठ रोग पर इन्द्रयव क सूक्ष्मचूर्णक लेप करबाक चाही। अर्श मे यदि रक्तस्राव होइत हो तँ कुटज क छाल क क्वाथ सोंठि क संग पीबाक चाही। रक्तातिसार मे इन्द्रयव सँ सिद्ध घृत खेबाक चाही। व्रण (घाव) के भरवाक हेतु कुटज क छालक क्वाथ लाभप्रद होइत अछि। सुश्रुतक अनुसार कुटज क छाल के पानि मे सिद्ध कए पानि पीबाक चाही जाहि सँ रक्तज अर्श दूर भए जाइत छैक। प्रमेह मे कुटजक पुष्प क चूर्ण लाभ प्रद होइत अछि। भावप्रकाश कार लिखैत छथि जे मूत्रमार्ग मे स्थित अश्मरी मे दहीक संग कुटज क छालक चूर्ण खेबाक चाही। विभिन्न प्रकारक अतीसार मे कुटज लाभप्रद होइत अछि। कुटजाष्टक क्वाथ, कुटजावलेह, कुटजारिष्ट आदि औषधि बनल भेटैत अछि।

## 11. कुलत्थ (कुरथी)

कुलित्थ, कुलत्थ, ताम्रबीज, कुलाथिका, कुलथी कुरथी आदि एकर नाम अछि। एकर गाछ बड़ छोट होइत अछि। कु (पृथ्वी) पर लग्न रहबाक कारण कुलत्थ कहबैत अछि। कुरथी क दालि सेहो होइत अछि। चरक लिखैत छथि –

उष्णाः कषायाः पाकेऽम्लाः कफशुक्रानिलापहा।
कुलत्थाः ग्राहिणः कास हिक्काश्वासार्शसां हिता।।

चरक क अनुसार **अर्श** मे कुलत्थीक यूष (झोर) पीबाक चाही। सुश्रुतक अनुसार कुलत्थी मे लावकी (वटेर) क झोर बनाय सैन्धव नून एवं कालीमिर्चक संग खएला सँ कातशूल दूर भए जाइत छैक। कुलत्थी क क्वाथ पीबि दूध पीला सँ चाली तथा अन्य कीड़ा सेहो मरि जाइत छैक। ज्वर मे यदि बड़ घाम छुटैत हो तँ कुलत्थीक चूर्ण खेला सँ घाम रूकि जाइत छैक। आम बात मे कुलत्थीक यूष लाभप्रद होइत अछि। गण्डमाला, कफजन्य गुल्म तथा अन्यान्य रोग म कुरत्थी लाभप्रद होइत अछि। प्रसूता स्त्री कँ प्रसवान्तस्राव क हेतु एकर सेवन कराओल जाइत अछि। कुरत्थी सँ लघ्घी सेहो वेशी होइत अछि। पेट मे पाथर आदि भेला सँ सेहो कुरथी लाभदायक होइत अछि।

## 12. कुष्ठ (कूठ)

पाकल, कूट, कूठ, कुष्ठ, कठ, व्याप्य, उत्पल आदि एकर नाम अछि। एकर जड़िक प्रयोग आयुर्वेद मे वेशी होइत अछि। धन्वन्तरि निघण्टु मे कहल गेल अछि –

**कुष्ठं कटूष्णं तिक्तंस्यात् कफ मारूत रक्तजित्।**
**त्रिदोष विषकण्डूश्च कुष्ठरोगांश्च नाशयेत्।**

कफ, पित्त, रक्तजन्यदोष, कण्डु, कुष्ठरोग तथा अन्य रोग मे कुष्ठ लाभप्रद होइत अछि। वाग्भट्ट लिखैत छथि – अरूषिंका रोग मे अर्थात् माथ पर गंजा आदि रोग हो तँ कुष्ठ कँ माटिक वर्तन पर मन्दाग्नि पर खूब सेक कए कुटि के चूर्ण बना कए तेलक संग माथ पर मालिश करबाक चाही। शिरोवेदना मे अण्डीक जड़ि एवं कुष्ठ क वरावरि भाग मे चूर्ण कँ कांजिक संग पीसि माथ पर लेपक चाही से बंगसेनक मत अछि। विजौड़ा क रस मे सात दिन तक राखल कुष्ठचूर्ण कँ मधुक संग मिलाय मुख पर लेपला सँ मुखक कान्ति बढ़ि जाइत छैक। राजमार्तण्ड मे कहल गेल अछि जे बच्चा के भूतराक्षस आदि सँ बचबाक हेतु गोघृत तथा मधुक संग अल्पमात्रा मे कुष्टक चूर्ण चटेबाक चाही। एहि सँ ग्रहवाधा दूर होइत छैक। वच्चा कँ शारीरिक एवं बौद्धिक शक्तिक सेहो विकास होइत छैक। जम्बू पत्र तथा अर्जुन पत्रक रस क संग कुष्ठ क सूक्ष्मचूर्ण क उवटन कएला सँ

शरीरक सौन्दर्य एवं त्वग् रोगक नाश होइत छैक। कफ, श्वास, विषूचिका एवं अजीर्ण मे सेहो ई लाभप्रद होइत अछि।

## 13. कोल (बदर)

राजबदर, कोल, सौवीर, कर्कन्धु, झड़वेर, आदि कोलक पर्यायवाची शब्द अछि। कोल एक प्रकारक वैर थिक। सुश्रुत मे कहल गेल अछि –

> कर्कन्धु–कोल–बदरमामं पित्तकफापहम्।
> पक्वं पित्तानिलहरं स्निग्धं सुमधुरं सरम्।।
> पुरातनं तृट्शमनं श्रमघ्नं दीपनं [illegible]।।

राजनिघण्टु मे कहल गेल अछि –

> राजबदरः सुमधुरः शिशिरो दाहार्ति पित्तहरः।
> वृष्यश्च वीर्यवृद्धिं कुरूते [illegible]षश्रमं हरते।।
> वदरस्य पत्रलेपो ज्वरदाहविनाशनः।
> त्वचा विस्फोट जननी बीजं नेत्रामयापहम्।।

ई बदरीफल हिक्का, श्रमप्रशमन, बाजीकरण, वात, पित्त, दाह, रक्तविकार, [illegible]थ तथा तृष्णा कें दूर करैत अछि। एकर छालक क्वाथ सॅं यदि घाव अथवा क्षतविक्षतस्थान कें धोएल जाय तॅं लाभप्रद होइत अछि। एकर पत्र कें पीसि के शरीर क दाह के दूर करबाक हेतु लगा सकैत छी।

बदरीक जड़िक छालक क्वाथ मे अर्श क शूलक रोगी के बैसा देला सॅं रोग शान्त भए जाइत छैक से चरक लिखने छथि। अतिसार मे बदरीक जड़िक छालक क्वाथ, दधि, एवं दाडिमक रस [illegible] तेल मिलाय पीबाक चाही। शर्दी तथा गला बाझि गेला पर बदरीफलक कल्क घृत मे भूजि सैन्धव नमक क संग सेवन करी। पिलही मे बदरीपत्र पीसि तेल मे कल्क बनाय पिलही क उपर बाँधि कए मूसल सॅं दबेबाक चाही। शिरोवेदना मे बदरीमूल एवं पीपरि पीसि के सिर पर लेप करक चाही।

## 14. खदिर

गायत्री, खदिर, खैर, दन्तधावन, सोमवल्क, आदि एकर नाम अछि। धन्वन्तरि निघण्टु मे कहल गेल अछि –

**खदिरः स्याद् रसे तिक्तो हिमपित्तकफास्रनुत्।**
**कुष्ठामकासकण्डूतिकृमिदोषहरः स्मृतः।।**
**खदिरः कृमिकुष्ठघ्नः कफरेतोविशोषणः।**
**श्वेतस्तु खदिरस्तिक्तः शीतपित्तकफावहः।।**

खदिर वातजकास, कृमिकुष्ठ, रक्तपित्त, व्रणशोधन, श्लीपद, क्षौद्रमेह, मुखरोग, दन्तरोग, तथा अन्यान्य रोग मे लाभप्रद होइत अछि। सुश्रुत क अनुसार क्षौद्रमेह मे खदिर तथा सुपारीक क्वाथ लाभप्रद होइत छैक। कुष्ठरोगी क खेबा–पीबाक नहेबाक सब कार्य मे खदिर क जलक उपयोग लाभप्रद होइत अछि। मुखरोग मे दन्तरोग मे खदिर क क्वाथ क कुल्ला लाभप्रद होइत अछि। बातजन्यकास मे मदिरा दहीक संग खदिर सार पीबाक चाही। व्रणप्रक्षालन मे खदिर क्वाथ लाभप्रद होइत अछि। खदिर मूल एवं निम्बबीजक मज्जा क चूर्ण कए गरम जल सँ पीला सँ स्थावर विष मे लाभप्रद होइत अछि। स्वर भेद मे खदिरसार पर तेल लगाय मुख मे राखक चाही। श्लीपद मे प्रतिदिन प्रातः काल गोमूत्र क संग खदिरसारक चूर्ण एवं मधुक सेवन करक चाही। धन्वन्तरि, वाग्भट्ट, चक्रदत्त, हारीत एवं भावमिश्र सब खदिरक प्रशंसा आयुर्वेद मे कएने छथि।

## 15. गुञ्जा (रत्ती)

गुञ्जा, रक्तिका, भिल्लभूषण, अंगारवल्ली, घुंघजी, रत्ती आदि गुञ्जाक नाम थिक।

धन्वन्तरि निघण्टु एवं राजनिघण्टु मे कहल गेल अछि –

**गुंजाद्वयं च शीतोष्णं, बीजं वान्तिकरं शिफा।**
**शूलघ्नी, विषहृत्, पत्रं वश्ये श्वेता प्रशस्यते।।**

बाजीकरण मे गुंजाक बड़ महत्व अछि –

**भुक्तवोच्चटां क्षीरयुतां विलासी भुंक्ते शतं सुन्दरि! सुन्दरीणाम्।**
**त्वं तावदेकासि मया तु साद्य भुक्ता, रतौ पश्य कुतूहलं मे।।**

अर्थात् गुंजा फल कैं दूध मे पका कए निस्तुष कए लेबाक चाही। पुनः ओकर चूर्ण बनाय नियमित प्रातः एवं सायं दूधक संग सेवन करक चाही। 100 स्त्रीक संग संभोग कए सकैत छी (वैद्यजीवन) इन्द्रिय क कमजोरी पर गुंजाक कल्क सँ लेप करक चाही। गण्डमाला रोग मे दू सेर गुंजा एवं दू सेर गुंजामूलक क्वाथ सँ कएल गेल मार्जन एवं नस्य सँ गण्डमाला नाश भए जाइत छैक। गृध्रसी मे गुंजाकल्क क लेप करक चाही। आन्ध्यरोग मे बकरीक मूत्र मे गुंजामूल घसि के आँखि मे अंजन करक चाही। एहि सँ तिमिर रोग नष्ट भए जाइत छैक। दाँत मे कीड़ा भए गेला सँ गुंजाक दतमनि करक चाही। शिरोरोग मे सेहो ई लाभप्रद होइत अछि। गुंजादि तैल एवं गुंजादिभद्र रस बनाओल भेटैत अछि।

## 16. गोक्षुर

गोक्षुर, लघुगोक्षुर, स्वादुकण्टक, त्रिकण्टक, वनश्रृङ्गाट, श्वदंष्ट्रा आदि एकर नाम अछि।

धन्वन्तरि निघण्टु मे कहल गेल अछि –

**गोक्षुरो मूत्रकृच्छ्रघ्नो वृष्यः स्वादु समीरजिते।**
**शूलहृद्रोगशमनो बृंहणो मेहनाशनः।।**

भाव प्रकाश मे कहल गेल अछि –

**गोक्षुरः शीतलः स्वादु बलकृद्बस्तिशोधनः।**
**मधुरो दीपनो वृष्यः पुष्टिदश्चाश्मरीहरः।।**
**प्रमेहश्वास – कासार्शः कृच्छ्रहृद्रोगवातनुत्।**
**त्रिकण्टशाकं वृष्यं स्यात्तिक्तं स्रोतो विशोधनम्।।**

चरक लिखैत छथि जे अश्मरी मे गोक्षुर पंचांग क स्वरस सँ घी कैं पका ली एव आठगुना दूधक संग सेवन करी। गोक्षुरक क्वाथ मे यवाक्षर मिलाय पीला सँ मलमूत्र प्रवृत्ति बन्द भए जाइत छैक। चक्रदत्त लिखैत छथि जे आमवात मे गोक्षुर एवं शुंठीक क्वाथ प्रतिदिन प्रातः पीला सँ कटिशूल नष्ट भए जाइत छैक। केवल दूध मे गोक्षुर दए उबालि के पीला सँ बाजीकरण कए सकैत छी। बूढो व्यक्ति युवक जकाँ स्त्रीक संग संभोग व्यवहार कए सकैत छथि –

**जरया पीतसारोऽपि युवेव चरति स्त्रियः।।**

गोक्षुर एवं अश्‌... ... क सूक्ष्म चूर्ण मधुक साथ चाटक चाही एहि सँ शोथ, कास, एवं दौर्बल्य ... नाश भए जाइत अछि। गोक्षुर दूध मे उबा... कें पीला सँ रक्तपित्त दूर भए जाइत छैक। गोखुर एव तिलपुष्प बराबरि मिलाय मधुक संग सिर पर लेप कएला सँ केश जनमि जाइत छैक। गोक्षुरादि गुग्गुल, रसायनचूर्ण आदि बनल औषधि भेटैत अछि।

## 17. चक्रमर्द

चक्रमर्द, एडगज, सैठगज, प्रपुन्नाट, दद्रुघ्न आदि चक्रमर्द क नाम अछि। ई प्रायः भारत मे सर्वत्र होइत अछि। भाव प्रकाश मे कहल गेल अछि –

**चक्रमर्दो लघुः स्वादू रूक्षः पित्तानिलापहः।**
**हृद्यो हिमः कफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीन् हरेत्।।**

अर्थात् चक्रमद पित्तरोग, वायुरोग, शर्दी, कफ, कुष्ठ, दद्रु तथा अन्यान्य रोग कें नष्ट करैत अछि। चरक लिखैत छथि – सिध्म कुष्ठ मे चक्रमर्द क मूल कांजीक संग पीसि लेप करक चाही। शिरोवेदना मे चक्रमर्दक बीआ के अम्मतवस्तुक संग पीसि माथ पर लेप करक चाही।

वैद्य मनोरमा क अनुसार सुख प्रसूति क हेतु चक्रमर्द क मूल क सूक्ष्म चूर्ण कए एक पोटली मे बाँधि तेल मे वोरि योनि मे धारण करक चाही। गण्डमाला रोग मे चक्रमर्द क मूल क कल्क बनाय भृङ्गराजस्वरस एवं सर्षप तैल मे कम आँच पर गरम कए ओहि मे सिन्दुर मिला दिऔक। गण्डमाला पर एहितेलक मालिश बड़ लाभप्रद होइत अछि। दद्रु (दिनाय) मे चक्रमर्दक बीआ कॅ मूलीक रस मे पीसि कए दद्रु पर लेप करक चाही। चक्रमर्द क शाक मे सेहो बड़ गुण अछि। **''व्यूची–पामा''** नामक रोग मे एकर बीज कॅ तक्रक संग पीसि लेप करक चाही।

## 18. जाति (चमेली)

सुमना, जाति, मालती, वर्षाभवा, चमेली आदि एकर नाम अछि। भावप्रकाश मे कहल गेल अछि –

**जातियुगं तिक्तमुष्णं तुवरं लघुदोषजित्।**
**शिरोऽक्षिमुखदन्तार्ति विषकुष्ठानिलास्रजित्।।**

अर्थात् शिर, नेत्र, मुख, दन्त, विष, कुष्ठ, वायुरोग तथा अन्यान्य रोग मे जाति लाभप्रद होइत अछि। हारीतक अनुसार दाहयुक्त मूत्रक उष्णता मे बकरीक दूध क संग चमेलक जड़ि के पीसि के पीबाक चाही। शोढलक अनुसार कानक पीड़ा तथा पीज बहला पर जाति पत्र सहित गोमूत्र कॅ गरम कए, छानि बून्द–बून्द कान मे ढार क चाही। योनि मे यदि दुर्गन्ध अबैत हो तॅ चमेलीक फूल कॅ घृत मे मिलाय सूर्यक ताप मे गर्म कए योनि मे लगेबाक चाही। जाति पत्र अहूना चबौला सॅ मुख गन्ध दूर होइत छैक।

## 19. जाति (जूही)

सुमना, जाति, यूथिका, बालपुष्पी, पुण्यगन्धा, ई सब जूहीक नाम थिक। राजनिघण्टु मे कहल गेल अछि –

**यूथिका युगलं स्वादु शिशिरं शर्करार्तिनुत्।**
**पित्तदाहतृषाहारि नानात्वग्दोषनाशनम्।।**
**सर्वासां यूथिकानां तु रसवीर्यादिसाम्यता।**

शोढलक अनुसार जूहीक मूल के उबालि बकरीक दूधक सग पीला सॅ मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी आदि रोग दूर भए जाइत छैक।

## 20. जम्बीर

निम्बुक, लिम्पाक, दन्तशठ, जम्बीर, काग ; नीबू, नीम्बू आदि जम्बीर क नाम अछि।

धन्वन्तरि निघण्टु एवं राजनिघण्टु मे जम्बीरक महत्त्व एहि प्रकार सँ कएल गेल अछि –

**तृष्णाशूलकफोत्क्लेशच्छर्दिश्वासनिवारणम्।**
**वातश्लेष्मविबन्धघ्नं 'जम्बीरं' गुरु पित्तलम्।।**
**मधुरो मधुजम्बीरो शिशिरः कफपित्तजित्।**
**अर्शोऽघ्नः तर्पणः श्रमघ्नः पुष्टिकारकः।।**

नीबूक रस पीला सँ अम्लपित्त दूर भए जाइत अछि। घृत क अजीर्ण भेला सँ नीबूक रस पीला सँ सबटा पचि जाइत छैक।

कर्णशूल मे नीबूक रस एवं तेल पकाय कान मे देबाक चाही। नीम्बू क बहुत भेद अछि एवं विभिन्न प्रकार क नीबू सँ विभिन्न प्रकारक लाभ होइत अछि।

चरक मे नीबू क गुण एहि प्रकार सँ कहल गेल अछि –

**रोचनः दीपनः तीक्ष्णः सुगन्धि मुखबोधनः।**
**जम्बीरः कफ वातघ्नः कृमिघ्नो भुक्तपाचनः।।**

## 21. तिक्तोत्तम (पटोल)

पटोल, कटुपटोल, तिक्तोत्तम, कुलक, कर्कशच्छद आदि परोर क नाम अछि। ई पाचन शक्ति के बड़ बढ़बैत अछि। धन्वन्तरि निघण्टु मे कहल गेल अछि –

**पटोलं कटुकं तीक्ष्णमुष्णं पित्ताविरोधि च।**
**कफासृक्कण्डूकुष्ठानि ज्वरदाहौ च नाशयेत्।।**

रक्तपित्त मे पटोलपत्रचूर्ण अथवा क्वाथ या स्वरस मधुक संग सेवन करक चाही। शोथ मे पटोल क तरकारी हितकर होइछ।

ऊरुस्तम्भ मे पटोल नून सँ रहित प्रतिदिन खेबाक चाही। चक्रदत्तक अनुसार पित्तश्लेष्मज्वर मे निम्ब क अन्तस्त्वचा एवं परोर क पंचाङ्गक क्वाथ देनाई उत्तम अछि। ज्वराक्रान्त मे शाक क रूप मे

पटोलक पत्रक साग हितकर होइत अछि। परोरक फलक यूष वात मे लाभप्रद होइत अछि। पित्तजन्य मसूरिका मे पटोलमूलक क्वाथ देव उचित अछि। केश उड़ला पर पटोलक स्वरस निकालि कए सिर पर लगेबाक चाही। कुष्ठ मे सेहो परोर लाभप्रद होइत अछि। गर्भवती कॅ आठम मास सॅ परोरक झोर हितकारी होइत अछि। पटोलादिचूर्ण सेहो बनल भेटैत अछि।

## 22. त्रिफला

त्रिफला मे हरीतकी (हर्रे) विभीतकी (वहेड़ा) तथा आमला (धात्री) ई तीन फल मिलल रहैत अछि। त्रिफला क महत्त्व आयुर्वेद मे बड़ वेशी कहल गेल अछि। हरीतकी 3 भाग, आमला 12 भाग, एवं विभीतकी 6 भाग मिला कए त्रिफलाचूर्ण बनैत अछि। त्रिफला क त्रिफला, फलत्रिक् एवं वरा तीन नाम सॅ विशेष प्रयोग होइत अछि। भावप्रकाश मे कहल गेल अछि –

**त्रिफला कफपित्तघ्नी मेहकुष्ठहरा सरा।**
**चक्षुष्या दीपनी रूच्या विषम ज्वर नाशिनी।।**

त्रिफला सॅ कफ, पित्त, प्रमेह, कुष्ठ, विषमज्वर, तथा अन्यान्य रोग ठीक भए जाइत अछि।

भुक्तान्न पचि गेलाक बाद एक हरीर क सेवन, भोजन सॅ पूर्व दू बहेड़ा क सेवन एवं भोजन क बाद चारि धात्रीक सेवन यदि मधु एवं घृत क संग एक वर्ष तक केओ करत तॅ ओ शतायु होएत। मधुयष्टीक क संग, वंशलोचनक संग, पिप्परिक संग, अथवा चीनी अथवा मिसरीक संग त्रिफला क चूर्ण खएला सॅ शरीर आरोग्य रहैत छैक। कमलारोग मे, कृमिरोग मे, पित्तजशूल मे, त्रिफलादि क्वाथ खएबाक चाही। प्रमेह मे वरादि क्वाथ, वृषणशोथ मे त्रिफलादि, नेत्र रोग मे त्रिफलाचूर्ण, कामला रोग मे त्रिफलारस क सेवन करक चाही। ई शाङ्र्गधर क वचन अछि। ई सब औषधि बनलो विकाइत अछि।

## 23. दार्वी (दारूहल्दी)

दारूनिशा, दारूहरिद्रा, दार्वी, कटंकटेरी, रजनी, पर्जनी आदि दार्वीक नाम अछि। हरैद बड़ लाभप्रद वस्तु थिक। धन्वन्तरि निघण्टु मे कहल गेल अछि –

**रसाञ्जनं हिमं तिक्तं रक्तपित्तकफापहम्।**
**हिध्माश्वासहरं वर्ण्यं मुखरोगविषापहम्।।**

रक्त, पित्त, कफ, हिचकी, श्वास, मुखरोग, तथा अन्यान्य रोग मे हरैद लाभप्रद होइत अछि। चरक क अनुसार हरैदक चूर्ण क कल्क लगौला सँ व्रण ठीक भए जाइत छैक। हरैद एवं दारूहल्दी क क्वाथ पिष्टमेह मे रोगी कँ सेवन करक चाही। सर्पविष कँ दूर करबा मे हरैदक लेप एवं हरैद क क्वाथ पीला सँ लाभ होइत अछि।

शार्ङ्गधर क अनुसार रसौत एवं त्रिकटु कँ मर्दन कए बड़ बनाय लेप कएला सँ आँखि कुरिएनाइ एवं रोग दूर भए जाइत छैक।

रतौन्धी मे रसौत, दारूहल्दीक त्वचा, हरैद, चमेली एवं नीमक पातक चूर्ण गोमयरस मे मर्दन कए वर्ती बनाउ। ओहि बाती कँ घीसि कए अजन कएला सँ नक्तान्ध्य दूर भए जाइत छैक। चोट आदि पर सेहो हरैद गर्म कए लगौला सँ दर्द कम भए जाइत छैक। पेटक पाचन मे सेहो हरैद लाभप्रद होइत अछि।

## 24. द्राक्षा

दाख, मुनक्का, अंगूर, द्राक्षा, मृद्वीका, कपिशा चारूफला, गोस्तनी एवं मधुरसा आदि द्राक्षाक नाम अछि। चरक लिखैत छथि –

**तृष्णादाहज्वरश्वासरक्तपित्तक्षतक्षयान ।**
**वातपित्तमुदावर्तं स्वरभेदं मदात्ययम्।।**
**वित्तास्यतामास्यशोषं कासञ्चाशु व्यपोहति।**
**मृद्वीका बृंहणी वृष्या मधुरस्निग्धशीतला।।**

सुश्रुत मे सेहो कहल गेल अछि –

**तेषां द्राक्षा सरा स्वर्या मधुरा स्निग्धशीतला।**
**रक्त – पित्तज्वरश्वासतृष्णादाहक्षयापहा।।**

पाण्डुरोग, क्षयरोग, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, सन्निपात, कामला, गर्भशूल एवं पित्तकास मे द्राक्षा लाभप्रद होइत अछि।

पाण्डुरोग मे पुरान घी, एवं मुनक्का कें सिद्ध कए ली। एहि घी सँ पाण्डुरोग, ज्वर, प्रमेह, कामला, गुल्म एवं उदररोग दूर होइत अछि।

क्षयरोग मे घृत, खजूर, मुनक्का, मिसरी, मधु एवं पिप्पली क अवलेह बनाय सेवन करी। एवं क्षयरोग नष्ट होइत अछि। मदात्यय क पिपासा मे द्राक्षारस गुणकारी होइत अछि। मूत्रकृच्छ्र मे द्राक्षाक रस लाभप्रद होइत अछि। चक्रदत्त लिखैत छथि – घी एवं द्राक्षा कें पका कए रक्तपित्त, कामलारोग एवं पाण्डुरोग मे देबाक चाही। सन्निपातज्वर मे जीभ मे घाव भेलासँ मधु एवं द्राक्षा मिला कए देबाक चाही। चरक क अनुसार पित्तकास मे मुनक्का एवं पिपरिक सेवन करक चाही। मनोरमा लिखैत छथि जे गर्भशूल मे द्राक्षा एवं मधु कें पीसि चटबाक चाही। किसमिसो द्राक्षा थिक से बुझक चाही। द्राक्षासव बनल सेहो भेटैत अछि।

## 25. निर्विषी

निर्विषीक नाम अविषा, निर्विषा, विषवैरिणी, विषहा, जद्वार, आदि अछि। नेपाल, भूटान तिव्वत आदि प्रदेश मे ई वेशी होइत अछि।

निघण्टु रत्नाकर मे कहल गेल अछि –

**निर्विषी कटुका शीता व्रणरोपणकारिणी।**
**कफं वातं रक्तदोषं विषदोषं च नाशयेत्।।**
**निद्राहितकारी पुष्टिबलारोग्यप्रदानता।**
**अग्निदीप्तिकरी चैव श्रमस्य च विनाशिनी।।**

ई बलकारक, व्रणरोपक, कफवात, रक्तदोष, विषदोष आदि कें नष्ट करैत अछि। व्रण रोग के दूर करबा मे समर्थ, पुष्टिवर्द्धक,

आरोग्यकारक सर्वदोषहर एवं बलदायक होइत अछि। टान्सिल मे एकर लेप लाभदायक होइत अछि।

## 26. निम्ब (नीम)

नीमक नाम अरिष्ट, पिचुमन्द, पिचुमर्द, प्रभद्र, निम्ब तथा मालक अछि। ई खूब तीत होइत अछि। धन्वन्तरि निघण्टु मे कहल गेल अछि –

**कुष्ठकण्डुव्रणान् हन्ति लेपाहारादि शीतलः।**
**अपक्वं पाचयेष्छोफं व्रणं पक्वं विशोधयेत्।।**

निघण्टु आदर्श मे 31 प्रकारक लाभ एहि सँ कहल गेल अछि। चरकक अनुसार नीमक पंचाङ्ग क क्वाथ क स्नान, पान एवं लेप सँ कुष्ठ रोग दूर भए जाइत छैक। सुरामेह मे नीमक जड़िक छालक क्वाथ पीबाक चाही। माथक रूस्सी कें दूर करबाक लेल नीमक पानि सँ स्नान करी। वातरक्त मे पटोलपत्र एवं नम्बपत्र क क्वाथ बना कए पिआय देबाक चाही। घाव पर नीमक पात पीसि मधु मिला कए कल्क बनाय घाव पर बाँधि दिऔक। नीमक जड़िक क्वाथ सँ कुल्ला कएला सँ दन्तरोग दूर भए जाइत अछि। कामला रोग मे प्रातः निम्बपत्रक स्वरस मधुकसंग देबाक चाही। ऑखिक रोग मे सोंठि, नीम्बपत्र एवं सैंन्धव नमक पीसि कल्क बनाय ऑखि नर राखक चाही। ऑखिक फूलव, कण्डू एवं व्यथा दूर भए जाएत।

बच्चा सबकें ज्वर मे नीमपत्र, मधु एवं घृत क धुआँ देला सँ रोग कम होइत छैक। राजमार्तण्ड मे कहल गेल अछि जे सुखप्रसवार्थ नीमक कोमल जड़ि स्त्रीक कटि मे बाँधि देवाक चाही। गण्डमाला रोग मे निम्बतैलक नस्य देवाक चाही।

## 27. (पद्म)

कमल, पद्म, अरविन्द, पुण्डरीक, तामरस, राजीव, नलिन, पुश्कर, पंकज, कु ा ाय, पंकेरूह अदि कमलक नाम अछि। चरक लिखैत छथि–

**उत्पलानि कशायाणि रक्तपित्तहराणि च।**
**कुमुदोत्पलनालास्तु सपुश्पाः सफलाः स्मृता,**
**भीताः स्वादुकशायास्तु कफमारूत कोपनाः।**
**कशायमीशद्विश्टम्भि रक्तपितहरं स्मृतम्।।**

रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, दाँत हिलला सँ, गुदभ्रंश, ज्वरातिसार, मुख सँ रक्त निकलला सँ, केश खसला सँ, नेत्ररोग मे, गर्भस्राव मे, पित्तजन्य कास मे, कृमिदन्त मे ई विशेष लाभप्रद होइत अछि। कमलक मृणाल कें दूध मे पका कए खेला सँ रक्तपित्त नष्ट भए जाइत अछि। मूत्र कृच्छ्र मे कमलक क्वाथ देवाक चाही। दाँत हिलला सँ कमलक नाल सँ सिद्धदुग्धपान करक चाही। कमल क कोमल पत्ता मिसरीक संग खेला सँ गुदा क बाहर एनाई बन्द भए जाइत छैक। मुख सँ रक्त निकलला पर कमलकेसरक चूर्ण मिसरीक संग खेबाक चाही। मूत्र क प्रवृत्ति रूकि गेला सँ कमलकंद तेल मे पकाय गोमूत्रक संग सेवन करक चाही। कमलपुष्प कें दुग्ध मे मिलाय जमीन मे एक मास तक गाड़ि दिऔक। वाद मे एकरा माथ पर लगौला सँ उज्जर केश कारी भए जाएत। गर्भपात रोकबाक हेतु नीलकमलक कन्दक चूर्ण मधु एवं मिसरीक संग सेवन करी। आरो लाभ सब कमल सँ अछि।

## 28. पाठा

पाठा, अम्बष्ठा, अम्बष्ठकी, अविद्धकर्णी, एकैषिका, वरतिक्ता, वृक्की, कुचैला, प्राचीना, पापचेलिका, पीलुफला, पाढ तथा स्थापनी आदि एकर नाम अछि। धन्वन्तरि निघण्टु मे कहल गेल अछि –

**पाठा तिक्तरसा वृष्या विषघ्नी कुष्ठकण्डुनुत्।**
**छर्दिहृद्रोगज्वरजित् त्रिदोषशमनी परा।।**
**पाषातिसार शूलघ्नी कफपित्तज्वरापहा।।**

पाठा सँ स्तन्यशोधन, वातश्लेष्म क नाश, पित्त दाह शूल क विनाश, त्रिदोषशमन, ज्वर एवं अर्शक नाश, पित्तातिसार आदि मे लाभ होइत अछि। चरक क अनुसार धमासा, बिल्वमूल, जीर एवं सोंठि क संग पाढ़ क सेवन अर्श कें अवश्य दूर करैत अछि। पाढ़क सुखल पातक चूर्ण दही तथा दाड़िम क रसक साथ सेवन सँ पित्तातिसार दूर भए जाइत अछि।

पाढ़ एवं अगर क क्वाथ लवणमेह में लाभप्रद होइत अछि। चक्रदत्त क अनुसार पाठाक जड़िक सूक्ष्म चूर्ण क पोटली योनि मे रखला सँ सुख प्रसव होइत अछि। भाव प्रकाश क अनुसार गायक दहीक संग पाठाक मूल क चूर्ण अतिसार, मे लाभ होइत अछि। प्लीहोदर मे पाठा क जड़ि चाउर क जल मे मर्दन कए पीबाक हेतु

देबाक चाही। गदनिग्रह मे कहल गेल अछि – सुख प्रसव क हेतु पाठा क मूल कें घसि कए नाभि, बस्ति एवं योनि पर लेप करबाक चाही। पाठा क विभिन्न उपयोग आयुर्वेद शास्त्र मे कएल गेल अछि।

## 29. पर्पट (पित्तपापरा)

पर्पट, पित्तपापड़ा, शहातरा आदि एकर नाम अछि। हिमालय, बलूचिस्तान, तुर्क तथा भारत मे ई प्राप्त होइत अछि। एहि सॅ मूत्र ठीक सॅ होइत अछि। ई पौष्टिक होइत अछि। ई दस्तकारक सेहो होइत अछि। पेट कें सेहो ई ठीक रखैत अछि। एहि मे क्षार क अंश रहैत अछि।

## 30. पुष्करमूल

पुष्करमूल, पोहकर एवं पोशकरमूल आदि एकर नाम अछि। कश्मीर क उच्च पहाड़ी पर एकर गाछ होइत अछि। चरक लिखैत छथि –

**पुष्करमूलं हिक्काश्वासकासपार्श्वशूलहराणाम्।।**

अर्थात् हिक्का, श्वास, कास, कफ, वात, पाण्डु आदि मे मुष्कर मूल लाभदायक होइत अछि। अरूचि एवं शोथ मे सेहो लाभप्रद होइत अछि।

## 31. बाकुची

बाकुची, सोमराजी, अवल्गुजा, चन्द्रलेखा, बावची, बकुची आदि एकर नाम अछि। राजनिघण्टु मे कहल गेल अछि –

**बाकुची कटुतिक्तोष्णा कृमिकुष्ठकफापहा।**
**त्वग्दोषविषकण्डूतिखर्जूरप्रशमनी च सा।।**

वर्षाक समय बावची क छोट–छोट गाछ होइत अछि। चरक क अनुसार आमातिसार अथवा प्रवाहिका मे बावचीक पातक साग दही एवं जम्बीर रस क संग बनाय खूब पाकल तेलक संग खेबाक चाही। वाग्भट्ट क अनुसार कुष्ठ मे बावची एवं कृष्णतिल समभाग मे मिलाय चूर्ण लए प्रतिदिन प्रातः सायं एक वर्ष तक सेवन करक चाही। श्वित्र अर्थात् सफेद कोढ़ मे खदिर एवं आमलक क क्वाथ एवं बाकुची क बीज क चूर्ण क सतत सेवन सॅ शरीर क कान्ति बढ़ि जाइत छैक। मुसली एवं बावचीक चूर्ण प्रतिदिन खएला सॅ बधिरता दूर भए जाइत छैक। वैद्य मनोरमा क अनुसार शोणित

यदि घाव सँ निकलैत हो तँ बाकुची क पत्र क कल्क बॉधक चाही। दद्रु मे एक तोला बावची एवं आधा तोला कालातिल प्रतिदिन खेबाक चाही। श्लीपद पर बावची क रस क प्रलेप करबाक चाही। अन्यान्य विष कें दूर करबा मे सेहो ई लाभप्रद होइत अछि।

## 32. बिल्व

श्रीफल, मालूर, शाण्डिल्य, शैलूष, बिल्व, बेल तथा अन्यान्य नाम बिल्व फलक भेटैत अछि। एकर फल लक्ष्मी कें बड़प्रिय होइत अछि। अतएव एकर नाम श्रीफल अछि। धन्वन्तरि निघण्टु मे कहल गेल अछि

बिल्वमूलं त्रिदोषघ्नं छर्दिघ्नं मधुरं लघु।
बिल्वस्य च फलं चाम्लं स्निग्धं संग्राहि दीपनम्।।
कटुतिक्तकषायोष्णं तीक्ष्णं वातकफापहम्।
विद्यात्तदेव पक्वं तु मधुरानुरसं गुरू।।
विदाहि विष्टम्भकरं दोषहृत् पूतिमारूतम्।।

चरक क अनुसार अर्श मे बिल्वमूल कें सुखा कए क्वाथ बनाय ओहि मे अर्शक रोगी के बैसेबाक चाही। पित्तातिसार एवं रक्तातिसार मे अपक्वविल्वमज्जाक चूर्ण, यष्टि मधु, मधु तथा मिसरी कें तण्डुलोदक मिलाय पीबाक चाही। बेलपातक रस क लेप सँ सम्पूर्ण शरीरक दौर्गन्ध्य नष्ट भए जाइत अछि। छर्दि मे बिल्वमूलक क्वाथ मधुक संग सेवन करक चाही। शोथ, कमला, एवं अर्श मे आमशूल मे, बाधिर्य, ग्रहणी मे प्रवाहिका मे पेट खराब मे बेल महौषधि थिक।

## 33. भृङ्गराज

भृङ्गराज, मार्कव, केशराज, भंगरा, तथा माका आदि एकर नाम अछि। ई वर्षा ऋतु मे, पोखरिकात मे अथवा खाधि मे उत्पन्न होइत अछि। धन्वन्तरि निघण्टु मे कहल गेल अछि –

भृङ्गराजः समाख्यातः तिक्तोष्णो रूक्ष एव च।
कफशोफामपाण्डुत्वग् हृद्रोग विषनाशनः।।

चरक क अनुसार कफजकास मे भांगरा क रस मधु मिला कए देबाक चाही। श्वासकास मे भांगरा क शुद्ध स्वरस मे तिलतैल सिद्ध कए सेवन करक चाही। जे व्यक्ति एक मास तक नियमित प्रातः काल भृङ्गराज स्वरस एक तोला पीबैत अछि ओ शतायु होइत अछि। मुदा दूधक सेवन आवश्यक होइत अछि। चक्रदत्त क अनुसार **अम्लपित्त** मे हरीतकी क चूर्ण एवं भृङ्गराज चूर्ण समभाग मिला कए **पुरान गुडक** संग खेबाक चाही। केश कारी करबाक हेतु **भृङ्गराज पुष्प**, **जपापुष्प** एवं मेषीदुग्ध कें खूब ठीक सँ पीसि एक लोहक पात्र मे **बन्द कए सात दिन** तक माटिक नीचा गाड़ि देबाक चाही। पुनः मर्दन करक चाही। रतौन्धी मे भृङ्गराज स्वरस मछलीक अण्डा क संग पकाय खेबाक चाही। भंगारा क रस एवं दूध पीला सँ गर्भिणी कें गर्भस्राव नहि होइत अछि। प्रशवान्तर योनिशूल मे बिल्वमूल एवं भृङ्गराज क चूर्ण मधुक संग खेबाक चाही। भृङ्गराज तैल, भृङ्गराजासव आदि बनल औषधि भेटैत अछि।

## 34. मधुक

यष्टि मधुक, मधुक, मधुयष्टिका, क्लीतक, मुलहटी आदि एकर नाम अछि। ई ईरान, कश्मीर तथा अफगानिस्तान मे होइत अछि।

धन्वन्तरि निघण्टु मे कहल गेल अछि –

**मधुयष्टिः स्वादुरसा शीतपित्त विनाशिनी।**
**वृष्या शोष्य क्षय हरा विषच्छर्दिविनाशिनी।।**
**यष्टिकायुगलं स्वादु तृष्णापित्तास्रजित्समम्।**

मूलहट्ठीक चूर्ण दूधक संग एक नीक टानिक थिक। चोट आदि कें दूर करबाक हेतु सूँठि एवं यष्टिमधुक प्रयोग लाभप्रद होइत अछि। हृदय रोग मे मधुयष्टी एवं कटुरोहिणीक चूर्ण मिसरी क संग खेबाक चाही। गर्भ सुखाइत हो अथवा बच्चा सुखाइत हो तँ गम्हारीक मूल, मधुयष्टि एवं मिसरी दूधक संग खेबाक चाही। वातरक्त मे मधुयष्टि तथा गम्हारी मूल सँ सिद्ध तैल लाभप्रद होइत अछि। पाण्डुरोग मे मधुयष्टि क क्वाथ मे मिसरी मिलाय खेबाक चाही।

चक्रदत्त क अनुसार रक्तवमन मे मधुयष्टि एवं चन्दन कें दूध मे पीसि वरावर मिलाय पीबाक चाही। पेटफुलला सँ मधुयष्टि क चूर्ण मिलाय एवं जलक संग सेवन करी। लध्धी बन्द भए गेला पर द्राक्षा एवं यष्टिमधु

चूर्ण क सेवन करक चाही। अपस्मार मे मधुयष्टिक चूर्ण श्वेतकुष्माण्डक रस क संग तीन दिन सेवन करक चाही। बाजीकरण, हिक्का, शोथ तथा अन्य रोग मे ई लाभदायक होइत अछि।

## 35. मोचरस

मोचरस, शाल्मलिवेष्टक, नियसि एवं पिच्छा एकर नाम अछि। रक्तातिसार, उरःक्षत, रक्तवमन, क्षयरोग, छर्दि, कफ आदि मे ई लाभप्रद होइत अछि। वाजीकरण योग मे सेहो मोचरस लाभप्रद होइत छैक। मोचरस, धात की पुष्प, लज्जालुमूल कें समभाग मिलाय चूर्ण कए बच्चा कें देबाक चाही एहि सॅ रक्तातिसार, प्रवाहिका आदि दूर होइत अछि। जननेन्द्रिय यदि कमजोड़ भए जाय तॅ एकर अपक्वफल दूधक संग लेबाक चाही। खसखस, मिसरी एवं बकरी क दूध सॅ मर्दन कएला सॅ रक्तार्थ दूर होइत अछि। एकर कल्क फोड़ा फुंशी आदि पर लागओल जाइत अछि।

## 36. मंजिष्ठा (मजीठ)

एकर नाम लोहितलता, विकसा, भण्डिरी, रक्ताङ्गा, वस्त्रभूषणा, आदि अछि।

राजबल्लभ मे कहल गेल अछि –

**मंजिष्ठा कुष्ठ वैश्वर्य शोथध्नी मूत्रकृच्छ्रजित्।।**

धन्वन्तरि निघण्टु मे सेहो कहल गेल अछि –

**मञ्जिष्ठा मधुरा स्वादे कषायोष्णा गुरुस्तथा।**
**कफोग्रव्रणमेहास्र विषनेत्रमयान् जयेत्।।**

प्रमेह मे यदि लाल लघ्घी हो तॅ मजीठ एवं चन्दन क क्वाथ पीबाक चाही। मंजिष्ठ विषहर एवं ज्वरघ्न होइत अछि। प्रसव क बाद स्राव कें ठीक करबाक हेतु मंजिष्ठा क मूलक क्वाथ देबाक चाही।

## 37. यवानी (अजवायन)

एकर नाम भूतिक, दीप्यक, यवानक, यवानी, एवं अजवायन आदि अछि। धन्वन्तरि निघण्टु मे कहल गेल अछि –

**यवानी कटु तिक्तोष्णा वातश्लेष्म द्विजामयान्।**
**हन्ति गुल्मोदरं शूलं दीपयत्याशु चानलम्।।**
**यवी यावनी सूक्ष्मा ग्रहिणी मादिनी कटुः।**
**अजमोदा च शूलघ्नी तिक्तोष्णा कफवातजित्।**
**हिक्काध्मानारूचिं हन्ति कृमिजिद् वह्निदीपनी।।**

अजमायन शरीरक हेतु महौषधि थिक। अर्श के कुसियारक रस मे जीर एवं अजमाइन लाभप्रद होइत अछि। शीतपित्त मे गुड़क संग एक सप्ताह तक यवानीक चूर्णक सेवन करक चाही। गलशुण्डिकारोग मे सतत जमाइन मुख मे राखक चाही। दन्तशूल मे वचा एवं जमाइन दाँत क जड़ि मे राखक चाही। जमाइन कैक प्रकारक होइत अछि। पेट मे ई पाचन इत्यादि मे सेहो लाभप्रद होइत अछि।

## 38. राठ

मदनफल, पिण्डीतक, करहार, राठ, फल, मैनफल आदि एकर नाम अछि। राजनिघण्टु मे कहल गेल अछि –

**मदनः कटुतिक्तोष्णः कफवातव्रणापहः।**
**शोफदोषापहश्चैव वमने च प्रशस्यते।।**

राठ कफ, वात, शोफ, वमन, व्रण, कुष्ठ, तथा अन्यान्य रोग मे लाभदायक होइत अछि। चरक क अनुसार मदनफल सँ बढ़ि कँ वमन क लेल कोनो वस्तु नहि अछि। शूल मे मदनफल क बीजक चूर्ण काँजि मे पीसि नाभि पर लेप करक चाही।

## 39. लज्जा (छुईमुई)

लज्जा, लज्जालुः, लज्जावती, नमस्करी, अंजलिकारिका, छुईमुई (लजविज्जी) आदि अनेक एकर नाम अछि। भावप्रकाश मे कहल गेल अछि –

**लज्जालुः शीतला तिक्ता कषाया कफपित्तजित्।**
**रक्तपित्तमतीसारं योनिरोगान् विनाशयेत्।।**

लजविज्जी (छुईमुई) जाड़क समय मे अधिक होइत अछि। छुईमुईक मूल कें हाथ मे घसि के अथवा ओकर जड़ि कें हाथ मे बाँधि कें भयंकर विषयुक्त सर्प कें पकड़ि सकैत छी। एकर मूलक स्वरस कें पीला सँ अथवा लेप सँ सर्पविषक असर नहि होइत अछि। शस्त्र सँ क्षतविक्षत भेला पर एकर जड़िक रस लगेबाक चाही।

## 40. लोध्र

रोध्र, लोध्र, अक्षिभेषज, शावरक, तिरीटक, गालव, लोध, लोधर, तिल्व, मार्जन आदि एकर नाम अछि। राजवल्लभक अनुसार –

**लोध्रोऽसृक् कफपित्तध्नः चक्षुष्यः शोथजित्सरः।**
**तद्वच्छावरलोध्रोऽपि चक्षुष्यो मृदुरेचनः।।**

गर्भाशय क शिथिलता मे लोध्र लाभदायक होइत अछि। श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, विष, कफ, पित्त, ज्वर तथा अन्य रोग मे ई लाभदायक होइत अछि। सुश्रुतक अनुसार लोध्रक क्वाथ सँ मुख, नेत्र आदि धोला सँ बहुत प्रकारक रोग नहि होइत अछि।

वाग्भट्ट क अनुसार, आँखि उठला पर लोध्रक सूक्ष्म चूर्ण कें स्वच्छवस्त्र मे पोटली बनाय गर्म जल मे डुबाय आँखि के सेक क चाही। हारीतक अनुसार गर्भवती कें सातम आठम मास मे लोध्रचूर्ण, मधु एवं पिप्पली चूर्ण मिला कए खेबाक चाही। एहि सँ गर्भपात नहि होइत छैक। अतिसार मे दहीक संग लोध्रक चूर्ण क सेवन करबाक चाही। प्रसूताक योनि जँ क्षत भए गेल होइक तँ तुम्बीक पत्रक चूर्ण एवं लोध्र क त्वचाक चूर्ण के मिलाय योनि मे लेपक चाही। चरकक अनुसार कुष्ठ रोग एवं वात व्याधि मे लोध्र क सेवन लाभकारी होइत अछि।

## 41. वरूण (वरूणा)

वरूण, तिक्तशाक, कुमारक, सेतुवृक्ष, अश्मरीघ्न, आदि एकर नाम अछि। भावप्रकाश क अनुसार –

**वरुणः पित्तलो भेदी श्लेष्मकृच्छ्राश्ममारुतान्।**
**निहन्ति गुल्मवातास्र कृमीज्चोष्णोऽग्निदीपनः।।**
**कषायो मधुरस्तिक्तः कटुको रूक्षको लघुः।।**

ई वात, कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, कैं नाश करैत अछि। वृन्दक अनुसार गण्डमाला मे वरूण क जड़िक छाल क क्वाथ मधुक संग खेबाक चाही। किक्किस (सातम मास मे गर्भवती कैं पेट क भीतर खुजलाहट) मे वरूणपत्रक रस क लेप लाभप्रद होइत अछि। अर्श मे वरूण क पातक क्वाथ पीबाक चाही। ओनो रोग मे एकर उपयोग होइत अछि।

## 42. बिभीतक

बिभीतक, कर्षफल, अक्ष, कलिद्रुम, बहेड़ा, तुष् भूतावास, आदि एकर नाम अछि। बहेड़ा क प्रयोग आयुर्वेद मे बहुत होइत अछि। सुश्रुतक अनुसार –

**बिभीतको मदकरः कफमारूतकासनः।।**

शोथ, ग्रन्थि विसर्प, अश्मरी, श्वास, आँखि फुलब, अतिसार, पित्तज्वर, तथा अन्यान्य रोग मे ई लाभप्रद होइत अछि। त्रिफला मे ईहो एक फल रहैत अछि। शोढल क अनुसार पित्तज्वर मे बिभीतक क मज्जा के पीसि शरीर पर लेप करबाक चाही। चरक क अनुसार शोथ पर बहेड़ा क बीज कैं पीसि लेप करक चाही। अश्मरी मे अक्षबीज कैं मधुक संग बिभीतक क चूर्ण पीबाक चही। अतिसार मे बिभीतक क चूर्ण सैन्धवनून क संग जल सँ पीबाक चाही। हृदयगत वायु कैं दूर करबाक हेतु बिभीतक एवं अश्वगन्धा क समभागचूर्ण गुड़ मे मिलाय गरम पानिक संग सेवन करक चाही।

## 43. व्याघ्रपादी

विकंकत, व्याघ्रपादी, बैकल, स्वादुकंटक, स्रुवावृक्ष, ग्रन्थिल तथा अन्यान्य नाम एकर अछि। ई कफ, पित्त, शोथ, रक्तविकार एवं कामला रोग क नीक औषधि थीक। निघण्टुरत्नाकरक अनुसार –

**विकङ्कतो मधुश्चाम्लः कषायः शीतलो जयेत्।**
**बलासपित्तशोफास्रविकारान् कामलां तथा।।**

ई विशेषतः पहाड़ी जगह पर भेटैत अछि।

## 44. शतपुष्पा (सोया)

शतपुष्पा, शताह्वा, सोया, शेप, शलूफा, आदि एकर नाम अछि। राजनिघण्टुक अनुसार –

**शताह्वा तु कटुस्तिक्ता स्निग्धा श्लेष्मातिसारनुत्।**
**ज्वरनेत्रव्रणघ्नो च बस्तिकर्माणि शस्यते।।**

शुष्क अर्श, वातरक्त, ज्वर, आँखिक पीड़ा तथा अन्य रोग मे लाभप्रद होइत अछि। ई वातहर, पाचक, उत्तेजक, एवं स्तन्यवर्धक होइत अछि। प्रसूतिक स्त्री एकर साग खाइत अछि। शोंफ कें सेहो शतपुष्पा कहैत छैक।

## 45. हिंगु

हिंगु, रामठ, बाह्लीक, हींग, सहस्रवेधि, जतुक तथा अन्य नाम एकर अछि। भावप्रकाशक अनुसार –

**हिंगूष्णं पाचनं रूष्यं तीक्ष्णं वातबलासहृत्।**
**शूलगुल्मोदरानाहकृमिघ्नं पित्तवर्द्धनम्।**
**स्त्रीपुष्पजननं बल्यं मूर्च्छापस्मारहृत् परम्।।**

तरकारी मे तथा दालि मे हिंगु अवश्य खेबाक चाही। कृमिदन्त कामला, अपच एवं अन्यत्रो हिंगु लाभप्रद होइत अछि। जल मे हिंगु के पीसि आँखि मे अंजन कएला सँ कामला रोग नष्ट भए जाइत अछि। हींग कें पकाय दाँत क जड़ि मे रखला सँ कीड़ा मरि जाइत छैक।

## 46. शिरीष

शिरीष, मृदुपुष्प, शुकतरू, कालशिष, कपीतन, मण्डिल, आदि एकर नाम अछि। राजनिघण्टुक अनुसार –

**शिरीषः कटुकः शीतो विषवातहरः परः।**
**पामास्रकुष्ठकण्डूतित्वग्दोषस्य विनाशनः।।**

कुष्ठा, श्वास, सर्पविष, कृमिनाश, तथा अन्य रोग मे ई लाभप्रद होइत अछि।

शिरीष एवं अपामार्ग क रस मधुक संग पीला सँ पेटक क्रीड़ा मरि जाइत छैक शिरीष क पातक रस मधुक संग मिलाय आँखि मे अंजना कएला सँ आँखिक दर्द दूर भए जाइत छैक। सॉपक विष मे शिरीषक पंचाङ्ग क क्वाथ मधु, सैन्ध्वनून तथा त्रिकटु क संग पीबाक चाही।

## 47. सर्पगन्धा

सर्पगन्धा, धवलमरूवा, धनमखा, इसरगज ईशरगत आदि एकर नाम अछि। ई बिहार, बंगाल तथा कोंकण मे वेशी जनमैत अछि। ई निद्रादायक औषधि थिक। रक्तचाप, उत्तेजना, उन्माद आदि मे ई हितकर होइत अछि। दुर्बल, निस्तेज पर एकर प्रयोग नहि करक चाही। हाय ब्लडपेसर पर सर्पगन्धा रामबाण होइत अछि। गर्भिणी स्त्रीक हेतु ई ठीक नहि अछि। निद्राक वास्ते एकर कम मात्रा मे सेवन करी। पागल कें ई औषधि खुआओल जाइत छैक। अपना सभक ओतय ईशरगत बान्हबाक जे परिपाटी अछि से प्रायः एकरे जड़ि थिक। एकर गन्ध सँ साँप दूर भगैत अछि। तेँ एकर नाम सर्पगन्धा थिक। मिथिला मे लोक ईशरगत बन्हैत अछि –

**शुचि सित दिनकरवारे करमूले बद्धपुलकितस्तस्य।**
**नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य।।**

अर्थात् आषाढ़ क शुक्लपक्षक रवि दिन यदि हाथ मे पुलमूल (ईशरगत) बान्हि लेब त नागराज (सर्प) दूरे सँ भागि जाइत अछि।

**नाकुली, सुरसारास्ता सर्पगन्धापलङ्कषा शालिग्राम।**
निघ. पृ. 188

1. **नाकुली, सुरसा, रास्ता, सर्पगन्धा, नकुलेष्ठा, रस्या, एलापर्जी, अतिरसा.**

2. **नरकुली, भुजंगाक्षी सर्पांगी, विषनाशिनी।**
**ईश्वरी, नागगन्ध, अहिभुक व्यालगन्धा।।**
**नाकुली सुरसारास्ता नागसुगन्धा गन्धनाकुली।**
**नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी सर्पांगी विषनाशिनी।।**

शा. नि. 188

**कृमिरोग, विष, सर्पादिक, विषनाशक त्रिदोषनाशक। व्रणकृमि आदि मे लाभ।**

# तृतीय–अध्याय

तृतीय अध्याय मे आयुर्वेद शास्त्रक किछु प्रक्रिया तथा पारिभाषिक शब्द क परिचय देल गेल अछि। यावत् काल पर्यन्त एहि प्रक्रिया सभक ज्ञान नहि होएत तावत् आयुर्वेद क ग्रन्थक अर्थ लागव कठिन अछि। अतएव शीतकषाय, फाण्ट, स्वरस, भावना, कल्क, फुटपाक, लेप, शीधु, मण्ड तथा अन्यान्य प्रक्रिया क परिचय एतय आवश्यक अछि।

पुनः किछु विशेष पारिभाषिक शब्द यथा शमन, लंघन, बृंहण, आर्तवजनन, पाचन, आदि पर विचार कएल अछि।

एकर अतिरिक्त द्रव्यगुण, रस, अम्ल, लवण, कषाय, दोष, धातु, मल, पञ्चमूल, अष्टवर्ग, पञ्चवल्कल तथा चतुर्बीज पर विचार कएल अछि।

## आयुर्वेदशास्त्रक किछु पारिभाषिक शब्द

**1. क्वाथ –** **पानीयं षोडशगुणं क्षुण्णे द्रव्यफलेक्षिपेत्।**
**मृत्पात्रे क्वाथयेत् ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम्।।**
**तज्जलं पाययेद्धीमान् कोष्णं मृद्वग्नि साधितम्।।**

अर्थात् शार्ङ्गधरक अनुसार 1 तोला द्रव्य मे 16 तोला जल मिलाय, माटिक वासन मे धीरे–धीरे गरम कए जखन मात्र 2 तोला जल वचय तँ ओकरा उतारि के कपड़ा सँ छानि ली। एहि प्रकार क किञ्चित् उष्ण जल क्वाथ थिक। कतहु चतुर्थांश जल पीबाक विधान सेहो अछि। सृत, क्वाथ, कषाय, एवंनिर्यूह ई चारू क्वाथक नामान्तर थिक। क्वाथ मे मिसरीक संग खेबाक सेहो कैकठाम विचार अछि।

**2. शीतकषाय–** **द्रव्यादाप्तोत्थितात् तोये प्रतप्ते निशि संस्थितात्।**
**कषायो योऽभिनिर्याति स शीतः समुदाहृतः।।**

अर्थात् कटल द्रव्य कें गरम पानि मे डालि राति भरि फूलय दिऔक दोसर दिन वस्त्र सँ छानल ओ जल **शीतकषाय** अथवा **हिम** कहबैछ एवं ओ द्रव्य **हिमद्रव्य** कहबैछ।

3. फाण्ट – **क्षिप्त्वोष्णतोये मृदितः फाण्ट इत्यभिधीयते।**

अर्थात् औषधिचूर्ण कें गर्म जल मे डालि, शीघ्र उतारि, पात्र कें ढकि, ढंढा भेला पर कपड़ा सँ जल कें छानि लेब **''फॉट''** थिक।
4. **स्वरस** – ताजा वनस्पति के कूटपीसि के ओकर रस निचोरि लेब **''स्वरस''** थिक।

5. **कल्प** – कोनो द्रव्य के खूब पीसि के चटनीक समान बना लेब **''कल्क''** कहबैत अछि।

6. **पानीय** – 1 तोला द्रव्य मे 64 तोला पानि मिलाय औंट के 32 तौला पानि कें छानि लिअ ओ **''पानीय''** कहबैत अछि।

7. **क्षीर पाक** – कोनो द्रव्य मे आठगुना दूध एवं चारि गुणा पानि मिलाय गर्म कए जखन मात्र दूध बची जाय तँ ओ पाक **''क्षीर पाक''** कहबैत अछि।

8. **भावना** – कोनो वनस्पति क द्रव्य अथवा क्वाथ मे कोनो चूर्ण कें फुलाय खूब पीसू एवं सूर्यक गर्मी मे सुखाय दिऔक। एहि प्रकार सँ प्रत्येक बेर ताजा रस मे डालि पुनः सूर्य मे सुखाउ। सात बेर क वाद ओ **''भावना''** विधि कहबैत छैक।

9. **पुटपाक** – कोनो द्रव्य कें कूटपीसि के कल्क बना लिअ। ओकरा कोनो पात सँ लपेट कए माटिक सँ पोति दिऔक पुनः ओहि गोल कें सूर्यताप सँ सुखाय आगि पर राखि दिऔक। गोला भेला पर माटि एवं पत्ता हटाय लुगदीक रस निचोड़ि लिअ। ई **''पुटपाक''** विधि कहबैत अछि।
10. **तुषाम्बु अथवा तुषोदक** – भूजल छिलका सहित उरीद एवं सिद्ध चूर्णीकृत यव कें जल मे राखि दिऔक। जखन अम्मताई ओहि मे आबि जाइक तँ ओकरा छानि लिअ। ई **तुषोदक** प्रक्रिया कहबैत अछि।
11. **सौवीर** – पाकल अथवा विनु पकौल यव एवं खोईंचा रहित गहुम आदि कें जल मे मिलाय अम्लता अयबा तक राखि पुनः छानि लेला पर **''सौवीर''** कहैत छैक। यवसौवीर अथवा **गौधूम–सौवीर** एकरे नाम थिक।
12. **शुक्तचुक्र** – गुड, मधु, कांजी एवं दहीक उपर का घूटल पानि (मस्तु), एवं जल कें क्रमशः द्विगुण मात्रा मे मिलाय कोनो पात्र मे राखि ओकरा

गारि देवाक चाही। ई कोनो अनाजक ढेरी मे गारक चाही वर्तन बन्द रहक चाही। अम्लता अएला पर निकालि लेबाक चाही एकर नाम **शुक्त** अथवा **चुक्रथिक**।

**13. आसव** – कोनो औषधि कें विना उबालने जल मे मिला कए पात्र मे ढकि [illegible] दिनक बाद ओकरा छानि लेबक चाही। ई **आसव** कहबैत अछि।

**14. अरिष्ट** – जॅं द्रव्य कें जल सॅं पका कए अथवा उवालि कें ई प्रक्रिया कएल जाय तॅं ओ आसव नहि **अरिष्ट** कहबैत अछि।

**15. शीधु** – कुसियार क रस कें किछु गर्म कए छोड़ि देला जाय तॅं ओ पक्वरस सिधु कहबैत अछि। यदि विना गर्म केने छोड़ि देल जाय तॅं शीतरस शीधु कहबैत अछि।

**16. आसुत** – कन्द मूल फल आदि कें पीसि कए लवण युक्त जल मे सन्धान हेबा तक छोड़ि देनाई एवं अम्लता उत्पन्न भेलाक वाद छानि के राखि लेबाक चाही। ई **''आसुत''** थिक।

**17. प्रमथ्या** – बहुत ठीक सॅं पीसल औषधि द्रव्य क संग अन्य औषधि मिलाय पुनः आठ गुना जल मे पकाय, पुनः 4 अंश जल रहला पर शीतल कए छानि के राखि लेव **''प्रमथ्या''** कहबैत छैक।

**18. रसक्रिया** – कोनो द्रव्य कें विधि पूर्वक क्वाथ बनाय, छानि, पुनः क्वाथ के घन हेबा तक गर्म कए जे अंश प्राप्त होइत छैक ओकरा **''रसक्रिया''** कहैत छैक। घन, अवलेह, प्राश ई सब एक्के वस्तु थिक।

**19. लेप** – महीषक चमराक समान शीतल एवं पातर एवं शीघ्र सुखबा योग्य लेप **'आलेप'** कहबैत अछि एवं बहुत देर तक रहै बला **''प्रदेह''** लेप कहबैत अछि।

**20. परिषेचन** – व्रण क वेदना कें शान्त करवाक हेतु गर्म क्वाथ कें व्रण पर सेचन करब परिषेचन कहबैत अछि।

21. **अवचूर्णन** – यव आदि औषधिक चूर्ण व्रण पर भरब अथवा छिड़कब **अवचूर्णन** कहबैत अछि।

22. **उद्वर्तनम्** – **''कल्कचूर्णाभ्यां गात्रमर्दनम''** कोनो वस्तुक चूर्ण (उवटन आदि) क शरीर पर मर्दन **उद्वर्तन** थिक।

23. **पिचु धारण** – कोनो औषधीय द्रव्यक क्वाथ मे अथवा सिद्ध स्नेह मे रूई क फाहा अथवा कपड़ा क टुकड़ा कें भिजाय योनि मे राखब **''पिचुधारण''** थिक।

24. **कवल–गण्डूष** – मुख मे लेल औषधि कें यदि हिला सकी तॅं ओ कवल कहबैत अछि। यदि मुख मे ओकरा हिला नहि सकी तॅं ओ **''गण्डूष''** कहबैत अछि।

25. **अञ्जन** – कोनो औषधि कें मद्य मे घिसि कए आँख मे आंगुर वा कोनो वस्तु सॅं लगौनाइ **अञ्जन** थिक।

26. **आश्चोतन** – औषधीय क्वाथ, मधु, तैल, घृत आदिक बून्द आँखि मे डालव **''आश्चोतन''** कहबैत अछि।

27. **विडालक** – आँखिक आसपास चारू तरफ कएल गेल लेप **विडालक** कहबैत अछि।

28. **पिण्ड** – खूब पातर कपड़ा मे अत्यन्त सूक्ष्म औषधि राखि, पोटली बनाय आँखिक उपर बेर–बेर राखब पिण्ड कहबैत अछि।

29. **शिरो बस्ति** – शिरोवस्ति चमड़ाक होइत अछि। ई टोपी जकॉ होइत अछि। एकरा पहनाय नीचा सॅं बन्द कए उपर सॅं तेल भरि देल जाइत छैक। नाक, कान, एवं मुख सॅं यावत् स्राव नहि अबैत छैक तावत् टोपी के धारण करक चाही। ई क्रिया **शिरोवस्ति** कहबैत अछि।

30. **स्वेद** – तापस्वेद, उपनाहस्वेद, द्रवस्वेद एवं वाष्पस्वेद ई चारि भेद अछि। एहि सॅं शरीर सॅं पसीना निकालल जाइत छैक।

**31. नाहवाष** – वातध्न पत्र कें जल मे उबालि, जखन जल सँ खूब भाफ निकलय लगैत अछि तँ ओ भाफ रोगी कें खाटक तर सँ अथवा कम्बल ओढ़ाय ओहि मे बर्तनो कें झापि रोगी के **"नाह–बाष्प"** देल जाइत छैक। ई प्रक्रिया गुजरात मे वेशी होइत अछि।

**32. नस्य** – नाक मे औषधि डालबाक नाम नस्य थिक। प्रतिमर्श, अवपीडन, नस्य प्रधमन, शिरो विरेचन– ई पाँच प्रकारक नस्य क भेद अछि।

**33. पेया** – सामान्यतः एकरा **"राब"** कहैत छैक। ई जठराग्नि के प्रदीप्त करैत अछि, तृष्णा श्रम एवं ग्लानि के दूर करैत अछि।

**34. विलेपी** – विलेपी बहुसिक्था स्यात् ई तृप्तिदायक, ग्राही, बलवर्द्धक, पाचक, होइत अछि।

**35. मण्ड** – माढ़ कोनो वस्तु के उबालि ओकर पानि के पसा कए लए लेब **मण्ड** थिक।

एहि प्रकारक आरो विधि सब आयुर्वेद मे अछि।

## चिकित्साञ्जनक किछु विशेष पारिभाषिक शब्द

1. **दुर्गन्ध** – सुगन्धि सँ विपरीत गुणवाला दुर्गन्ध कहबैत अछि।

2. **सर** – सर द्रव्य अपानवायु एवं मलक प्रवर्तक होइत अछि।
3. **आशुकारी** – जे औषधि शीघ्रता पूर्वक शरीर मे व्याप्त भए जाय।

4. **सूक्ष्म** – जे वस्तु अपन सूक्ष्म गुणक कारण शरीरक सूक्ष्माति सूक्ष्म स्रोत तक पहुँच जाइत अछि।

5. **शमन** – शमन द्रव्य वात, पित्त तथा कफएहि तीनू दोष कें ऊर्ध्व तथा अधो मार्ग सँ बाहर निकालब **शमन** कहबैत अछि।

6. अनुलोमन – कृत्वा पाकं मलानां यद् भित्वा बन्धमधोनयेत्।
तच्चानुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ता हरीतकी।।

अर्थात् अपक्व मल कें बचाय, अवरूद्ध दोष कें अधो मार्ग सॅ निकालब अनुलोमन कहबैत अछि। ''**हरीर**'' अनुलोमन द्रव्य थिक।

**7. स्रंसन** – कोष्ठ मे चिपकल अपक्व मल कें ओही रूप मे नीचा खसा देब ''**स्रंसन**'' कहबैत अछि। जेना अमलतास क फलक गुदा स्रंसन द्रव्य थिक।

**8. भेदन** – कठिन जमल मल कें खीचि बाहर निकालब '**भेदन**' थिक।

**9. रोचन** – जे द्रव्य पक्व अथवा अपक्व मल के प्रवाही बना कए नीचॉ खसा कए बाहर निकालि दैत अछि ओकर नाम रोचन थिक। '**निशोथ**' रोचन द्रव्य थिक।

**10. वमन** – अपंक्व अन्न कें तथा कफ, पित्त कें मुख मार्ग सॅ बाहर करब वमन थिक।

**11. संशोधन** – जे द्रव्य देह मे संचित मल कें अपन स्थान सॅ हटाय बाहर निकालि दैत अछि एवं शरीर कें शुद्ध कए दैत अछि ओकरा **संशोधन** कहैत अछि। देवदालीक फल संशोधन द्रव्य थिक।

**12. ग्राही** – जे वस्तु अपन दीपन–पाचन तथा उष्ण गुणक कारण द्रव अर्थात् प्रवाही अंश कें शोषण करैत अछि, ओकरा ''**ग्राही**'' कहैत छैक। सोंठि, जीर, गजपीपल, आदि संग्राही द्रव्य थिक। ई वायुक शोषण करैत अछि।

**13. स्तम्भन** – स्तम्भन द्रव्य वातवृद्धि कए मल कें अवरूद्ध करैत अछि। कुटज एवं टुण्टुक स्तम्भन द्रव्य थिक।

**14. छेदन** – जमल अथवा चिपकल कफ कें बाहर खसौनाई ''**छेदन**'' कहबैत अछि। क्षार, मरीच, शिलाजित आदि छेदन द्रव्य थिक।

**15. वाजीकरण** –

**यस्मात् द्रव्याद् भवेत्स्त्रीषु हर्षो वाजीकरं हि तत्।**
**यथाश्वगन्धा मुसली शर्करा च शतावरी।।**

जाहि द्रव्यक सेवन सॅ पुरूष कें स्त्रीक संग रमण करबाक सामर्थ्य (बाजी–घोड़ा) वाजीक सदृश बढ़ि जाइत अछि ओ द्रव्य वाजीकरण द्रव्य थिक जेना– अश्वगन्धा, मुशली, शतावरी, मिश्री आदि।

**16. व्यवायी** – विना पचनहि सम्पूर्ण शरीर मे व्याप्त भए तकर वाद पचब **'व्यवायी'** कहबैत अछि – भांग, हफीम'आदि व्यवायी द्रव्य थिक।

**17. विकासी** – विकासी द्रव्य धातु मे सँ ओज कए अलग कए दैत छैक जाहि सँ धातु निर्बल भए जाइत छैक। जेना कच्चा सुपारी।

**18. शुक्रल** – जाहि द्रव्यक सेवन सँ शुक्र वृद्धि हो। जेना मिश्री, शतावरी आदि।

**19. रसायन** – जाहि द्रव्यक सेवन सँ वृद्धावस्था दूर भए जाय एवं व्याधिक आक्रमण नहि हो ओ रसायन द्रव्य थिक। जेना गुडूची, रूदन्ती गुग्गुल आदि।

**20. मदकारी** – जाहि द्रव्यक सेवन सँ बुद्धिक लोप हो एवं जे तमोगुण प्रधान हो। जेना मद्य।

**21. अभिष्यन्दी** – जे द्रव्य अपन शक्ति सँ सिरा क कार्य रोकि शरीर मे भारीपन आनय। जेना दही।

**22. विदाही** – जाहि द्रव्यक सेवन सँ खट्टा ढेकार हो, प्यास लागय, शरीर मे दाह हो। जेना वल्ल, उरीद, आदि।

**23. योगवाही** – जाहि वस्तुक संग एकरा पकायब ओकर गुण कें खीचि लैत छैक जेना मधु, जल, घृत तैल आदि।

**24. दारण** – जाहि द्रव्यक लेप सँ पाकल गाँठ फूटि जाय।
**25. पीडन** – जकर लेप सँ घाव क पीव बाहर निकलि जाय।

**26. संधान** – काटल अथवा टूटल अंश कें जोरब संधान थिक।

**27. तृप्तिध्न** – जे द्रव्य भोजन क विना तृप्ति कए भूख के मारय। जेना चटनी, चित्रक, विडंग आदि।

**26. लंघन** – भूखले राखब लंघन थिक।

27. **वयस्थापन** – जकर सेवन सँ तारूण्य बहुत दिन तक रहय। जेना ब्राह्मी, पुनर्नवा आदि।

28. **विम्लापन** – जकर सेवन सँ गाठ नष्ट भए जाय।

29. **पाचन** –जे द्रव्य वात, पित्त, कफ, आम, शोथ आदि क पाचन करय।

30. **तर्पण** – तृप्तिजनक एवं धातुवर्द्धक पदार्थ।

31. **बृंहण** – देह कें स्थूल करैबला।

32. **पुंस्त्वोपघाति** – शुक्र क क्षय करैबला पदार्थ जेना अति अम्ल वस्तु।

33. **कफविलयन** – जाहि द्रव्य सँ कफ पातर भए बाहर आबि जाय।

34. **श्लेष्मप्रसेकि** – जाहि द्रव्यक सेवन सँ श्लेष्माक स्राव हो।

35. **स्तन्यजनन** – माता क दूध कें बढौनाइ।

36. **स्तन्यशोधन** – स्तन्यदोष कें दूर करब।

37. **बल्य** – जकर सेवन सँ बल बढय–जेना जौ, गहुम।

38. **आर्तव जनन** – जे द्रव्य गर्भाशय कें उत्तेजित कए आर्तव स्राव करबैत अछि ओकर नाम आर्तवजनन थिक।

39. **आविजनन** – जे द्रव्य प्रसवक समय वेग उत्पन्न कए शीघ्र प्रसव करवैत अछि।

40. **उत्तेजक** – जे द्रव्य शरीर मे उत्तेजना प्रकट करय।

41. **प्रशमन** – शूल शीत आदि कें दूर करैवला द्रव्य।

42. **रक्षोघ्न** – राक्षस एवं भूतपिशाच क शक्ति के नष्ट करैवला, जेना हिंगु, लहसून, अगर, वचा आदि।

**43. छिक्का जनन** – छींक अनैवला द्रव्य ।

**44. जीवनीय** – प्राण धारण क हेतु आवश्यक द्रव्य। जेना गोदुग्ध मे निम्नलिखित गुण अछि –

**स्वादु शीतं मृदु स्निग्धं बहलं श्लक्ष्णपिच्छिलम्।**
**गुरू मन्दं प्रसन्नं च गव्यं दश गुणः पयः।।**
**तदेवं गुणमेवौजः सामान्यादभिवर्धयेत्।**
**प्रवरं जीवनीयानां क्षीरमुक्तं रसायनम्।।**

(च.सू.)

**45. दीपन** – जे द्रव्य अपरिपक्व अन्न कें नहि पचबैत अछि मुदा जठराग्नि के तेज करैत अछि ओ दीपन थिक जेना सौंफ भूख कें बढ़बैत अछि।

**46. पाचन** – जे द्रव्य आमक पाचन करय मुदा जठराग्नि पर विशेष असर नहि करय। जेना नागकेसर।

**47. हृद्य** – हृदयक वास्ते लाभप्रद।

**48. वेदनास्थापन** – शरीरक वेदना कें जे दूर करय।

# किछु द्रव्य गुण मूलक शब्द

**(क) द्रव्य गुण** – आयुर्वेद शास्त्र मे द्रव्य गुणक बड़ महत्त्व अछि। द्रव्य ओ थिक जाहि मे गुण एवं कर्म हो। भाव मिश्रक अनुसार द्रव्य मे रस, गुण, वीर्य, विपाक एवं शक्ति ई पाँच पदार्थ रहैत अछि। चरक क अनुसार द्रव्य मे 41 गुण अछि। मुदा **गुरू, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, मन्द, तीक्ष्ण, स्थिर, सर, मृदु, कठिन, विशद, पिच्छिल, श्लक्ष्ण, स्वर, स्थूल, सूक्ष्म, सान्द्र,** एवं द्रव ई 20 प्रमुख गुण अछि।

**(ख) रस** – रसो निपाते द्रव्याणाम् (चरक) अर्थात् जिह्वा द्वारा जकरा ग्रहण कएल जाय। रस 6 प्रकारक होइत अछि – **मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त एवं कषाय।**
**मधुर** – जाहि सँ भोजन मे तृप्ति हो, सुख हो, कफ क वृद्धि हो एवं मुख मे उपलेप हो ओ मधुर रस थिक (सुश्रुत)। क्षीर, घृत, वसा, मज्जा, मधु, खजूर, आदि मधुर रसक द्रव्य थिक।
**(ग) अम्ल** – अम्मत वस्तु दाँत कें खट्टा करैत अछि। मुँख एवं कण्ठ मे विदाह उत्पन्न करैत अछि। (चरक) दाडिम, कपित्थ, बदरी फल अदि।
**(घ) लवण** – लवण खाइत देरी गलि जाइत अछि। मुख मे क्लेद, लालास्राव एवं विदाह उत्पन्न करैत अछि। (सुश्रुत) जेना – सिन्धव, सौवर्चलं।

**(ङ) कटु** – जे रस जिह्वा अग्रभाग पर बाधा उत्पन्न करय, उद्वेग करय, सिर कें भारी करय ओ कटुरस थिक (सुश्रुत)।

**(च) तिक्त** – ई जिह्वा क अन्य रसक ग्रहण शक्ति नष्ट कए दैत अछि। ई अरूचि के नष्ट करैत अछि। चरक जेना, प्पली, तुलसी, कर्पूर आदि।

**(छ) कषाय** – कषाय रस जिह्वा मे विशदता, स्तब्धता, एवं जड़ता उत्पन्न करैत अछि। जेना बट, बकुल, उदूम्बर, जम्बू अदि।

**(ज) विपाक** – खाद्य रूप मे ग्रहण कएल गेल मधुरादि रसक जठराग्नि द्वारा परिपाक भए जाहि रस क उत्पत्ति होइत अछि ओकर नाम "**विपाक**" थिक। भुक्त द्रव्यक दू प्रकार सँ पाक होइत अछि । (1) अवस्थापाक एवं निष्ठापाक अथवा विपाक। द्रव्य विपाक तीन प्रकारक होइत अछि – मधुर, अम्ल, एवं कटु। विपाक आयुर्वेदक बड़ महत्वपूर्ण अंश थिक।

**(झ) दोष, धातु, मल** – शरीर वृद्धि अथवा क्षीणताक आधार वस्तुत दोष, धातु, एवं मल थिक। वस्तुतः वात, पित्त एवं कफ ई तीन दोष शरीरक उत्पत्ति क कारण थिक। वात पित्त एवं कफ क आधार पर शरीर क सञ्चालन होइत अछि। एहि तीनूक स्वास्थता पर शरीर स्वस्थ रहैत अछि। कफ, पित्त एवं वायुक अलग–अलग कार्य अछि। एकर तीनूक भेदो बहुत प्रकारक अछि। वात पित्त एवं कफ क प्राकृत अवस्थाक नाम आरोग्य थिक। रोगस्तु दोषवैषम्यम्। अर्थात् एहि तीनूक वैषम्य सँ रोग होइत अछि।

धातु शब्द सँ रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, एवं शुक्र ई सात वस्तुक ग्रहण आयुर्वेद मे कएल गेल अछि। रस ओ कहबैत अछि जे दिनराति शरीर मे घुमैत रहैत अछि। रसेक परिभ्रमण पर शरीर चलैत अछि। शोणित क सेहो बड़ महत्त्व अछि। रक्त सँ मांस धातु बनैत अछि। मांसक बाद मेद बनैत अछि। मेद सँ हड्डी, हड्डी सँ मज्जा एवं मज्जा सँ सातम धातु, शुक्र बनैत अछि। सातो प्रकारक धातुक मल होइत अछि। जेना रक्तक मल पित्त थिक।

चिकित्साञ्जन मे किछु सन्दिग्ध वनस्पतिक चर्चा अछि जेना मञ्जिष्ठा, रास्ना, अजमोदा, निर्गुण्डी, अमृत, सुगन्धा, एलापर्णी आदिक अर्थ कैक प्रकारक वनस्पतिक लेल कएल गेल अछि।

किछु विशेष आयुर्वेदिक संकेत सेहो अछि जेना–

**(ञ) पञ्चमूल – 1. मध्यम पञ्चमूल** – माषपर्णी, मुद्गपर्णी, बला, एतण्ड एवं पुनर्नवा।

**2. तृण पञ्चमूल** – शाली, इक्षु, कुश, कास, शर।

**3. जीवन पञ्चमूल** – शतावरी, जीवन्ती, क्षीरकाकोली, मेदा, जीवक।

**4. वल्ली पञ्चमूल** – निशा, अमृता, मेषसृङ्गी, गोपवल्ली एवं विदारी।

**5. कण्टक पञ्चमूल** – सैरेयक, गोक्षुर, कण्टकारी, सुषेणा एवं शतावरी। इत्यादि पञ्चमूल भेल।

**(ट) अष्टवर्ग** – मे– काकोली, क्षीरकाकोली, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि एवं वृद्धि।
**(ठ) पञ्चवल्कल** – वट, गूलर, पीपल पारस पीपल, एवं प्लक्ष।

**चतुर्बीज** – मेथी, चनसूर, शाहजीरा, एवं अजवायन।

एहि प्रकार सँ आरो संकेत सब बहुत आयुर्वेद मे अछि।

# चिकित्साञ्जन मे प्रयुक्त शब्दावली तथा ओकर मैथिली मे अर्थ

**अगुरु** – अगर । अगर पात क विशेष प्रयोग विद्यापति चिकित्साञ्चन मे कएलन्हि अछि।

**अग्नि** – चित्रक।
**अग्निबीज** – मरीच।

**अग्निमन्थ** – अरणी, गनियारी।

**अग्निमान्द्य** – पेट मे अग्निक मन्दता सँ कम पचनाइ।

**अग्निवेश** – आयुर्वेदक प्रसिद्ध प्राचीन आचार्य जनिक मत कें चरक संग्रह कएने छलाह।

**अचेत** – चेतनाहीन, मूर्च्छावस्था।

**अजमोदा** – खराश्वा, कारवी, उग्रगन्धा, मर्कटी, वस्तमोदा। एकर प्रयोग सँ हृदयरोग, कफ, वमन, हिचकी तथा अन्य रोग मे विशेष लाभ होइत अछि।

(विद्यापति सेहो एकर बहुत प्रयोग कएने छथि।) (द्रष्टव्य चिकि.)

**अतिविषा** – अतीस, अतिविष। छोट जहरिली वृक्ष।

**अर्ति** – रोग विशेष। जेना शिरोरोग आदि।

**अर्धपिचु** – पिचु मापक एक छोट मात्रा थिक। अर्ध पिचुक अर्थ भेल पिचुक आधा मात्रा। आधा पिचु।

**अध्मान** –ढेकार गैस्ट्रिक (पेट मे वायु भेला सँ) कारण सँ तथा अपच सँ ई होइत अछि।

**अभिष्यन्द** – आँखिक रोग। एहि मे आँखि मे पीड़ा होइत अछि।

**अपस्मार** – एक प्रकारक रोग जेना मिर्गी। एहि रोग मे स्मरणशक्ति नष्ट भए जाइत छैक।

**अपची** – गर्दनिक एक रोग।

**अमोध** – मोथा। मेघ।

**अपामार्ग** – चिरचिरी।

**अब्द** – मुस्ता।

**अभया** – हर्रे, हरीर।

**अभ्रक** – अबरख।

**अमृत** – एक प्रकार क विष। वस्तुतः ई विष बहुतो विष कँ दूर करैत अछि अतएव एकर नाम अमृत थिक।

**अमृता** – गुडूची, गुरीच।

**आकारकरभ** – अकरकरा, आकल्कक।

**अश्मभेद** – पाषाणभेद, कोरल, पाथरचूर। ई वस्तिरोग, मूत्रकृच्छ, दाहप्लीहा, प्रमेह, शूल तथा व्रण मे लाभप्रद होइत अछि। द्रष्टव्य चि.

**अर्श** – वावासिर।

**अर्क** – आक।

**अश्मरी** – एक रोग।

**अश्म** – स्वर्णमाक्षिक। अश्मज–शिलाजित।

**अश्वगन्धा** – अश्वगन्धा।

**असृक्** – रक्त, शोणित।

**अब्धिफेम** – समुद्रफेन। ई कफ, नेत्र, कंठरोग, तथा कर्णरोग मे विशेष लाभप्रद।

**अहिफेन** – अफीम, हफीम। ई खसखसक रस, नागफेन, पोस्त रसक नाम सॅ प्रसिद्ध अछि। पोस्तादाना हफीमक बीज थिक। ई बीर्यवर्धक, बलकारी, श्वास, कास, प्लीहा, धातुक्षय मे लाभप्रद होइत अछि। बाजीकरण क हेतु नीक औषधि थिक।

**अहिम** – गर्म।

**आत** – शरीफा, सीताफल।

**आभा** – बबूर।

**आम** – ऑव, पेटक रोग, डिसेन्टरी टाइप क रोग।

**आमलकी** – आमला, धात्री, पंचरसा, शिवा, श्रीफल।

**आमवात** – गठिया वातरस रोग।

**आम्रास्थि तैल** – आमक पखुआक रस।

**आरग्वध** – अमलतास, कृतमाल, राजवृक्ष, कर्णिकार, रेचन, आदि एकर नाम अछि। ई बात, रक्तपित्त, दद्रु, ज्वर, हृदयरोग, तथा शूल मे लाभप्रद।

**आर्द्रक** – आदं, श्रृङ्गवेर, वर, गुल्ममूल। ई घाव, मूत्रकृच्छ, पाण्डुरोग, ज्वर, दाह आदि मे लाभप्रद।

**इन्द्रयव** – इन्द्रयव।

**इन्द्रलुप्त** – केश उड़ब।

**उग्रा** – लहसून, उग्रगन्ध, चम्पक।

**उपदंशी** – रोगविशेष। लिंगक रोग।

**ईक्षुर** – तालमखाना, क्षुर, कोकिलाक्ष।

**उरूवुक** – श्वेत ऐरण्ड, रक्त ऐरण्ड, अण्डी।

**उपल** – कमल, कुमुदिनी, पाथर मिसीर।
**उपकुल्पा** – पिप्पली।

**ऊशीर** – खस, अभय, नलद, उशीरक, हरिप्रिय, गन्धाढय आदि नाम। ई दाह, पित्तज्वर तथा मूत्रकृच्छ मे विशेष लाभप्रद।

**उच्छिन्दन** – नाक मे देनाइ, नस्य।

**उष्ट्रीदुग्ध** – ऊँटक दूध।

**एलक** – इलायची। एला, बहुला, त्रिपुटा, कन्या, कुमारी, ऐन्द्री, कान्ता आदि नाम। ई छोट पैघ कैक प्रकार क होइत अछि। इलायची वमन निवारक तथा रक्तपित्तनाशक होइत अछि।

**एवारू** – कांकड़ी, टरकांकड़ी।

**ऐरण्ड** – रेडी, अण्डी, चित्रक, उरूकुक। उदर, श्वास, कफ तथा कुष्ट मे लाभप्रद।

**ऐरण्डकषायकः** – अंडीक क्वाथ।

**कटु** – कडू। त्रिकुट शब्द शोंठि, पीपरि तथा मरीचक हेतु प्रयुक्त होइत अछि। त्रिकुट तथा व्योष कहला सँ सूँठि, पीपरि तथा मरीच बुझक चाही।

**कटुफल** – कायफल, कटफल, त्वक्फल, श्रीपर्णिका, उग्रगन्ध। ई अरूचि, उग्रदाह, मुखरोग, छींक तथा गुल्म मे लाभप्रद।

**कटुकी** – कटुकी, जंगी हर्रे। ई छोट--छोट कारी–कारी होइत अछि। ई वृक्ष विशेष क फड़ थिक ई हिमालय् पर 7000–15000 फीट उपर काश्मीर सँ सिक्किम तक होइत अछि।

**कट्वी** – कटुकी, तिक्ता, महौषधि, कटु, अज्जनी, अशोका, आदि नाम। ई पित्त, प्रमेह, श्वास, रूधिरदोष, दाह, तथा कृमि मे लाभदायक।

**कणा** – पिप्परि, जीर।

**कणामूल** – पिप्परि क जड़ि।

**कतक** – केतकी। करमर्द–करौंदा, कंटकी, करौना।
**करिकणा** – गजकणा, इभकणा, गजपिप्परि।

**कन्यकाद्रव** – हल्दी, हरैद।

**कफ** – शीतक कारण रोग।

**कर्कोटक** – ककोड़ा, खेखसा। कर्णकार–कचनार।

**कर्कट** – काकरा श्रेणी। कर्कोटकजटा–काकराश्रृङ्गी।

**कर्चूर** – कचूर, द्रविड, कल्पक, शटी, काली हल्दी। ई रूचिकर, सुगन्धित, अग्निदीपक, कोढ़, बाबासीर, घाव, खाँसी, गलगण्ड, कृमि, प्लीहा आदि मे लाभप्रद होइत अछि। कर्चूर बहुत प्रकारक होइत अछि।

**कर्पूर** – औषधीश, कर्पूर, कपूर, सिताभ्रक, शिला, हिमांशु, चन्द्रमाक सबनाम, स्फटिकाभ्र, घनसार, स्फटिक, हिमोपल, चन्द्रभस्म, आदि नाम। कर्पूर बहुत प्रकारक होइत अछि। ई कफ, पित्त, विष, दाह, मोदरोग एवं दुर्गन्धि कँ दूर करैत अछि। कण्ठरोग, नेत्ररोग, मूत्रकृच्छ, प्रमेह, आदि मे लाभप्रद। विशेष द्रष्टव्य शालिग्रामनिघण्टु।
**कल्क** – पीसल गोली।

**कवक** – भरि मुँख।

**कवोष्मक** – सुसुम पानि।

**कषाय** – मधुर, तिक्त, कषाय, कटु, लवण तथा अम्ल ई 6 प्रकारक रस अछि। पाचन द्रव्य कें कषायपूर्वक पान कएल जाइत अछि। ई एक प्रक्रिया सेहो थिक।

**कस्तुरी** – मदाह्वा, अण्डजा, नाभि, मार्जारी, श्यामा, मिश्रा तथा मृगक सब नाम। कस्तुरी कपिलवर्ण, पिङ्गलवर्ण एवं कृष्णवर्णक होइत अछि। ई मृग क नाभि सँ निकलैत अछि। शर्दी, दौर्गन्ध्य, रक्तपित्त तथा कफरोग मे लाभप्रद।

**कहेला** – एक प्रकारक पहाड़ी वृक्षक छाल। दालचीनी क सदृश छाल।
**काकजंघा** – काकजंघा। ई शरीर मे कतहु कटि गेला पर शोणित कें रोकबा मे बड़ लाभप्रद।

**कारवी** – कृष्णजीरक, कालाजीरा, अजमोदा।

**काष्ठ** – दारु हल्दी।

**कामला** – एक रोग, जौण्डिश।

**कारवेल्ल** – करैला।

**कालशेय** – मक्खन जे घैल मे मथि कए तैयार हो।

**कालश** – घैल मे बनल वस्तु।

**कालाजाजी** – कालाजीरा।

**काँचनार** – रक्तपुष्प, कचनार, ताम्रपुष्प। ई कृमि, कफ, कोढ़ तथा व्रण मे लाभप्रद।

**कांजिक** – तक्र क समान बना कए काञ्जिक पीअल जाइत अछि। काँजी एक प्रकारक शरबत सेहो थिक।

**किराततिक्त** – चिरैता, चिरायता।

**किरात** – चिरैता।

**कैरात** – चिरैता।

**कुक्कुट** – मुर्गा।

**कुटॅज** – एकवृक्ष विशेष, शुक्रक सब नाम, वत्सक, गिरिमल्लिका, इन्द्रयव आदि नाम। ई मलरोधक, पाचक, शूल, बावासीर, अतिसार, आम, रक्तार्श तथा अन्य रोग मे लाभप्रद।

**कुटकी** – कटुकी।

**कुणप** – गन्धयुक्त।
**कुण** – महियाला रंग।

**कुमारी** – घृतकुमारी, वीरा, गृहकन्या, रसायनी, आदि नाम। कफ, वमन, यकृत, वात, विस्फोट मे लाभप्रद।

**कुरण्ट** – श्वेत कोहरा, कुरडू, बाणपुष्पी।

**कुरण्टी** – सिंहपिप्पली।

**कुवमित** – मात्रा विशेष।

**कुलत्थक** – कुरथी।

**कुलिञ्जन** – कुलंजन, कुरची, वच, कोष्ठकोलञ्जनी। ई मुख तथा कंठ कें शुद्ध करैत अछि। ई कफ, खाँसी, तथा वात मे लाभप्रद।

**कुष्ट** – कूठ। एक प्रकारक वृक्ष, एक प्रकारक रोग। कुष्ट, व्याप्य, पाकल, पाढ़ल, उत्पल, गद, पद्मक, हरिभद्रक आदि एकर नाम अछि। ई कफ, वात, कोढ़ तथा खुजली मे लाभप्रद।

**कुष्टगन्धक** – कूठ एवं गन्धक।

**कुष्माण्ड** – कुम्हर।

**कुंकुम** – रक्तचन्दन, कुंकुम, काश्मीरज, वाह्लीक, रूचिर, केशर, रूधिर आदि नाम। ई काश्मीर, वाह्लीक तथा ईरान मे उत्पन्न होइत अछि। कास, वात, कंठरोग, तथा माथक पीड़ा मे लाभप्रद। ई दस्तकारक तथा वीर्यकारक होइत अछि।

**कृच्छ्न** – बेर–बेर मूत्रक रोग मूत्रकृच्छ्न कहवैत अछि।

**कृतमालक** – अमलतास। कृष्णा–पिप्पली, मागधी।

**कृष्णाजाजी** – कालजीरक, कृष्णजीरक। जीर कृष्ण, पीत, कैक प्रकारक होइत अछि।
**केसर** – महौषध, राजपुष्प, फलक, काञ्चन, सुवर्ण, हेम, नागपुष्प, नाग, आदि नाम। ई पित्त, वात, कफ, वांति, रूधिर, रोग, कंडू, दुर्गन्ध, कंठरोग आदि मे लाभप्रद होइत अछि।

**कुमारिका** – घीकुमारी।

**कोलमज्जा** – कंकोलक गुद्दी।

**कंकुष्ठ** – द्रव्यविशेष मुरदाशंख।

**कंटकारी** – बड़ी कटैरी।

**कंठकूप** – कंठनली।

**कंडू** –खुजली।

**कौन्ती** – रेणुका, वरा, कान्ता, हिमा आदि नाम। कौन्ती वात, कफ, कण्डू, विष एवं दाह मे लाभप्रद।

**क्षारत्रय** – जवाखार, सज्जीखार तथा टंकणक्षार अथवा सोहागा खार।
क्षार – जवाखार, सारक नाम। ई आम, कफ, पाण्डु, शूल मे लाभप्रद।

**क्षुद्रा** – कंटकारी।

**क्षौद्र** – मधु।

**क्ष्वेड** – जीवक, श्रृङ्गक, मधुरक आदि नाम। ई क्षयरोग, दाह, ज्वर, रक्तपित्त आदि मे लाभप्रद।

**कंकोल** – कोलक, कटुकफल, कटफल, कालीमरीच, कृत, शीतलचीनी। ई हृदय रोग, कफ, वात, नेत्ररोग तथा दुर्गन्ध मे लाभप्रद।

**क्वाथ** – पानि मे उसीन कए क्वाथ बनैत अछि।

**खदिर** –कथ, कत्था, कत्थक, खैर।

**खर्पर** – धातुविशेष।

**खञ्जता** – लंगड़ायब। पैर क मोर जाहि सँ चलबा मे रूकावट।

**खाखस** – खखसा, खसफल, पोस्त, उल्लसत्फल। ई मलरोधक, शीतल, वातकारक, कफनाशक, मोहक तथा वृष्य होइत अछि।

**गदपुष्कर** – गदपुरैना।

**गजपुट** – विधिविशेष। कोनो वस्तु कँ दू सर्वाक बीच राखि, लेबा लगाय बन्द कए गर्म करब गजपुट प्रक्रिया थिक।

**गन्ध** – गुग्गुल, गन्धक।

**गंडमाला** – गर्दनि मे टान्सिलक माला, घेघ।

**गरल** – विष, वत्सनाभ, अमृत।

**गुग्गुल** – महिषाक्ष धूर्त्त, शिव, जटायु, कुन्ती, रूक्षगन्धक आदि नाम। गुग्गुल बहुत प्रकारक होइत अछि। ई कफ, वात, व्रण, अपची, मेदरोग, प्रमेह, पथरी, वातव्याधि, आमवात, सूजन, बावासीर, गण्डमाला एवं कृमिरोग मे लाभप्रद।

**गुल्म** – गोला। पेट मे गैसक गोला भए जाइत छैक। घाव सँ सेहो गोला भए जाइत छैक।

**गुडूची** – गुरीच, अमृता, छिन्नरूहा।

**गुंजा** – रत्ती। मात्रा विशेष। रक्तिका, भिल्लभूषण, आदि एकर नाम अछि।

**गृध्रसी** – डॉरक रोगक नाम।

**गैरिक** – गेडू।

**गोक्षुर** – गोखुर, त्रिकण्डक, स्वदंष्ट्र।

**गंडमाला** – गर्दनिक रोग। बच्चा सब कें बहुतरास गिल्टी गर्दनिक चारूकात भए जाइत छैक। घेघ सेहो गण्डमाला थिक।
**चक्रमर्द** – टाकला, चक्र शब्द ललका कुरथी, मसूर, आदिक हेतु तथा तगर क हेतु प्रयुक्त होइत अछि।

**चित्रक** – पाठी, व्याल, अग्नि, कुट, पालक, आदिनाम। ई अग्नि कारक, पाचक, तथा पथ्य मानल गेल अछि। संग्रहणी, कोढ़, सूजन, बावासिर, कृमि, खाँसी, वात तथा कफ मे लाभप्रद।

**घन** – औंरलाक वाद वचल हिस्सा।

**घनजीरक** – बड़का जीर, औषधि विशेष।

**घुणप्रिया** – अतिविषा, अतीस, भंगुरा, श्रृङ्गी, अमृता आदि नाम।

**चक्रमर्द** – चकोर, चकवड, एडगज। ई कुष्ट, कण्डू, दाद, वात तथा गुल्म मे लाभप्रद।

**चवक** – चव्य।

**चक्रगुच्छ** – अशोकवृक्ष।

**चन्द** – कर्पूर।

**चन्दन** – चानन।

**चपला** – चञ्चला, विजली।

**चवक** – चविका, औषधि विशेष।

**चातुर्जात** – दालचीनी, तमालपत्र, वेलची तथा नाग, केसर।

**चिकित्सक** – वैद्य, भिषक।

**चिदुंगाफल** – फल विशेष।

**चुक्र** – चूक, अम्मत, चुक्क।

**चूर्ण** – पीसल, चूर्ण।

**चोष्य** – चुसबाक योग्य।

**जटामांसी** – जूटी, मांसी, तपस्विनी, हिंस्रा, कृष्णजरा, किरातिनी, मृगभक्षा, मिसी। ई बलदायक, स्वादिष्ट, त्रिदोषहर, दाह एवं कुष्टरोग कँ दूर करैत अछि। कुष्टरोग, रक्तपित्त, भूतवाधा आदि मे लाभदायक। जटा–शतावरी।

**जयपाल** – जाफर।

**जलौक** – जोंक।

**यवानिका** – अजमाइन।

**जसद** – धातुविशेष।

**जातीफल** – जातीफल। जातीक नाम मज्जसार, पुट, जायफल, सुमनःफल, शालूक आदि अछि। ई मलकारक, दुर्गन्ध, कफ, वात, कृमि, खाँसी आदि मे लाभप्रद।

**जाती** – जाफर, जूही, चमेली।

**जातीपत्र** – चमेलीक पात।

**जानग्रह** – रोगविशेष।

**जानुग्रह** – जांग मे वातरस।

**जीरक** – जीर, दीर्घक, कणजीरक, कणा आदि नाम। ई गुल्म, अतिसार, कृमि एवं संग्रहणी मे लाभप्रद।

**जंबीर** – नेवो।

**टंकण** – सुभग, सौभाग्य, सोहागा, क्षार विशेष। ई खाँसी, कफ तथा श्वास मे लाभप्रद। ई कैक प्रकारक होइत अछि।

**टंक** – मात्रा विशेष, स्वहागा।

**तालक** – हरताल।
**तुष्य** – छिलका, धान गहुमक तुष।

**तुषाम्बु** – चाउरक अम्ल जल।

**तिक्ता** – चिरैता, कुटकी। कफ, पित्त, ज्वर, कोढ़, कण्डू आदि मे लाभप्रद।

**तिक्तेन्द्र** – तिक्तोत्तम, परवल, चिचोर, कुलक।

**तिक्तोशीर** – तीत खस।

**तुलसी** – एक छोट गाछ। एकर पात कफ शर्दी आदि मे बड़ गुणकारी।

**तिमिर** – अन्धापनक रोग।

**तुम्बी** – कौडतुम्बा, लौकी।

**तुम्बुरु** – तुमरू, कटैला वृक्ष। ई वात, पित्त, नेत्र, कर्ण, कुष्ट, शिरोरोग मे लाभप्रद।

**तुवरक** – कटुकपित्थ, चालमोगरा, गरूडफल।

**तृषा** – वेशी प्यास लागब। गला सुखायब।

**त्रिकटु** – सोंठि, पीपरि एवं मरीच।

**त्रिक्ग्रह** – रीढ़क निचुला हड्डीक नाम त्रिक् थिक। एहि हड्डी मे यदि वातरोग भए जाइत अछि।

**त्रिफला** – धात्री, हरीर, एवं बहेड़ा।

**त्रिवृता** – निशोथ।

**त्वक्** – दालचीनी। त्वक् क हेतु भृंग, उत्कट, त्वच, चोल, पत्र, बल्य, सुरस, कामवल्लभ, बहुगन्ध, त्वक्पत्र, दारूसिता, दालचीनी, आदि नाम अछि। कफ एवं खाँसी कें दूर करैत अछि। ई शुक्रजवक, शोथ, कफ तथा तृषा मे लाभप्रद। अर्श, वस्ति रोग मे लाभप्रद। एकर तैल सेहो लाभप्रद होइत अछि।

**त्वक्क्षीरी** – वंशलोचन शुभा आदि नाम।

**दारू** – देवदारू।

**दन्ती** – गोदन्ती, द्रव्य विशेष।

**दरद** – धातु विशेष, गन्धक।

**दद्रु** – दिनाय।

**दशमूल** – 1. बेल, 2. सोंठि, 3. गम्हारि, 4. पाढ़ल, 5. गनियारी, 6. शालिपर्णी, 7. पृष्णपर्णी, 8. गड़ी कटेरी, 9. छोटी कटेरी, 10. गोक्षुर। ई दशोटा मिला कए दशमूल बनैत अछि।

**दीपन** – क्रिया विशेष जेना शरीर मे पाचन होइत अछि।

**दुर्नाम** – अर्श।

**दीप्ताग्नि** – प्रज्वलित अग्नि। खूब भूख लागब।

**दुरालभ** – धमासा, उष्ट्रभक्ष्या। एहि पर कॉट वेशी होइत अछि। गोट गाछ।

**दूर्वा** – दूवि, घास विशेष।

**देवदारू** – एक नीक तथा मजबूत काठक वृक्ष। दारू, दारूक, सुरदारू, मस्तदारू, आदि नाम।

**देवदाली** – देवदार। शोथ, तन्द्रा, हिचकी, प्रमेह तथा कण्डू मे लाभप्रद।

**द्विनिशा** – दूनू प्रकारक हरैद।

**देवकुसुम** – लवंग, देवपुष्प।

**देवदालीफल** – घघरवेल, जीमूतक।

**द्राक्षा** – दाख, मुनक्का।

**द्रोणपुष्पा** – गुम्मा, औषधि विशेष।
**धनिक** – धनियाँ।

**धन्वन्तरि** – आयुर्वेदक प्रमुख वैद्य।

**धातकी** – धाय, ताम्रपुष्पी, मद्यपुष्पा, अतिसार, रक्तपित्त, विष एवं कृमि रोग मे लाभप्रद।

**धातु** – सप्त धातु, (लोहा, रांगा आदि) मज्जाशुक्र आदि सेहो धातु थिक।

**धूर्त्तम्** – धत्तूर, धथूर, धुस्तुर, शिवप्रिय, मातुल, कनक आदि नाम। ई कफ, व्रण, कण्डू, कृमि, पित्तज्वर, छर्दी आदि मे लाभप्रद।

**धान्यक** – धनियाँ चाउर।

**नस्यम्** – नोंशि, कोनो वस्तु कें नाक मे देव।

**नागर** – मोथा, सोंठि।

**नावन** – एक प्रकारक नस्य।

**नागवल्ली** – पान ताम्बूल, आदि। पान मे तेरहटा गुण अछि – 1. ताम्बूलं, 2. कटुतिक्त, 3. मुष्णमधुरं, 4. क्षारं, 5. कषायान्वितम्, 6. वातध्नं, 7. कृमिनाशनं, 8. कफहरं, 9. दु:खस्य, 10. विच्छेदनम्।

**स्त्री संभाषणभूषणं धृतिकरं कामाग्निसंदीपनम्**
**ताम्बूले निहितास्त्रयोदशगुणाः स्वर्गेऽपि ते दुर्लभाः।।**

**नाड़ी** – धमनी विशेष।

**निर्विशी** – अतिविषा।

**निम्बबीच** – नीमक बीज, पिंचुमंद, रविप्रिय, व्रण, शोफ, कृमि, वात, कुष्ट, दाह,श्रम एवं खासी आदि मे लाभप्रद।

**निर्गुण्डी** – सिनुआइर।

**निशा** – हरैद।

**पञ्चकर्म** – वमनं रेचनं नस्यं निरूहश्चानुवासनं। ज्ञेयं पंचविधं कर्म।

**पटोल** – परबल।

**पथ्या** – पथ्य वस्तु। औषधि। हरतकी, हर्रे।

**पद्म** – पद्मा, कमल, राजीव, पुष्कर, पंकज।

**पद्मा** – मंजिष्ठ, मजीठ, कमलनाल।

**पय** – दूध।

**पयोधरवृकी** – पलास।

**पल** – मात्रा विशेष।

**पललाभ** – मांसक समान।

**पत्र** – तेजपात, गोमेद, वास, तमालक, सुरस, गन्धजात, आदि नाम। ई बावासिर, ,वात, हृदयरोग, खुजली, त्रिदोष आदिक नाशक। पत्र मे धात्रीक पत्र सेहो बड़ गुणकारी मानल जाइत अछि।

**पर्पट** – पित्तपापरा, वरतिक्त, नक्र। ई पित्तज्वर, तृषा, कफ, भ्रम, दाह मे लाभप्रद।

**पद्मबीज** – कमलक बीज, कमलगट्टा।

**पाठा** – पाहल, कुचैला, वरतिक्ता।

**पाचनम्** – पाचनद्रव्य।

**पामा** – एक प्रकारक खुजली रोग।

**पारावत** – परबा, कवूतर।

**पारद** – पारद, पाड़ा।

**पिचु** – तूल, कपास, बांग, तथा एक माप।
**पित्तला** – पित्तयुक्त।

**पिच्छा** – मोचरस, पीसल।

**पिप्पलीमूल** – पीपरिक जड़ि।

**पिष्टा** – पीसल।

**पुट** – क्रियाविशेष।

**पुष्परोग** – मासिक धर्म मे गड़बड़ी।

**पिप्पली** – मागधी, कृष्णा, कणा, उप्कुल्पा, कुल्पा, तिक्त तण्डुल, मगधा, उषणा, कृकला, श्यामा, दन्तकफा आदि। ई रोचक, जठराग्निक दीपक, कृमिनाशक, खाँसी, श्वास एवं शूलविनाशक। ई बहुत प्रकारक होइत अछि। गजपिप्पल, चविका, गजकृष्णा आदि नाम अछि।

**प्रियङ्गु** – फलिनी, श्यामा, कृष्णापुष्पी, करु, शुभा, पीता, नारिवल्लभा, आदि नाम। ई वात, पित्त, रक्तातिसार, दुर्गंध, पसीना, दाह, ज्वर, गुल्म, एवं प्रमेह मे लाभप्रद।

**पुनर्नवा** – गदपुरैन।

**पुष्करमूल** – पुष्करमूल, द्रव्यविशेष, पद्मपत्रमूल, पौष्कर, सागर, वृक्षरूह, शूलधन। ई कफ, वात, ज्वार, श्वास, खाँसी, सुजन, एवं पाण्डुरोग मे लाभप्रद।

**पुष्पकम्** – फूल।

**प्रमेह** – रोग विशेष। एहि रोग मे वेशी लघ्घी होइत अछि। एकरा अंग्रेजी मे डाइभेटिज कहैत छैक।

**फलत्रिक** – वट, पीपल तथा आम।

**बलाक** – वरियारि, बला। बालपत्र–धमासा।

**बालक** – वारिद, कचामोद, ह्रीवेर, पीन तथा केशक सब नाम एकर हेतु प्रयुक्त होइत अछि।

**बालक** – मुलगा, बालतनय। मुस्ता। अरूचि कण्डू मे लाभप्रद।

**बला** – मद्य, नागबेल, वाविडंग।

**बाकुची** – बाकुची, सोमराजी, चन्द्रलेखा।

**बालार्क** – छोट आक।

**ब्राह्मी** – ब्राह्मी, बूटी विशेष।

**बिल्व** – वेल।

**भक्त** – भात।

**भगन्दर** – रोग विशेष। बोंग निकलनाई।

**भंगारस** – भांगक रस। भांग नाम विजया, जया, शिवा, माया, शिव प्रिया, मत्ता आदि।

**भार्गी** – भारङ्गी, पद्मा, यष्टि, वातारि, भार्गवी।

**भूनिम्ब** – भूमि आमलकी।

**भृङ्गराज** – भंगेरिया।

**मक्षिका** – सोना माखी।

**मंजिष्ठा** – मजीठ, लोहितलता, विकसा, भण्डिरी आदि नाम। ई स्वर कें ठीक रखैत अछि। कफ, सूजन, योनिरोग, नेत्ररोग, कर्णरोग, अतिसार, कुष्ठ, तथा व्रण मे लाभप्रद।

**मद कुसुम** – मदकुसुम।

**मण्डूक** – बेङ्ग, मेढ़क।

**मधुकम** – मधुआ।

**मस्तदारू** – देवदारू।
**मधुता** – मधुमेह रोग।

**मरूवक** – मरूवा एक प्रकारक छोट गाछ। मैनफल, मदन, कंटकी।

**मन्दाग्नि** – पाचनक कमी।

**मस्तकी** – डोके।

**मुस्ता** – नागर मोथा।

**मनःशिला** – मैनशिला, धातु विशेष।
**मय** – एक प्रकारक सीम।

**महौषध** – शुंठी।

**महाराष्ट्री** – जल पिप्पली।

**महातिसार** – रोग विशेष।

**मरीच** – पवित, श्याम, वेल्लज, शुद्ध, कोल, वार, मृष्ट, कृष्ण, मरीच, आदि नाम। ई अग्निदीपक, कफ तथा वातनाशक, पित्तजनक, शूलकृमिनाशक होइत अछि।

**मागध** – पिप्परि, पिप्पली।
**महौषधी** – दूर्वा, लहसून, वत्सनाभ, अदरख।

**सिता** – मिसरी, चीनी।

**माजूफल** – मैनफल।

**मात्रा टंक** – टंक परिमाण।

**मार्कव** – भंगेरिया।

**मांसी** – जटामांसी।

**मुकुल** – मौलसरी।

**मुष्ठक** – काला सरसो।

**मुस्ता** – मोथा।

**मुंडी** – क्षुप विशेष, छोट गाछ।

**मूत्र** – लघ्घी।

**मूलत्वक्** – जड़िक छाल।

**मूर्वा** – मधुरसा, देवी, गोकर्णी, पीलुपर्णी।

**मूसली** – मुशली। ई सफेद तथा कारी दू प्रकारक होइत अछि।

**मृतताम्र** – संस्कारित ताम्बा।

**मेद** – चर्वी।

**मेदा** – श्रेष्ठा, वसा, जीवनी। ई शुक्रजनक, तथा वात पित्त मे लाभप्रद।

**मौक्तिक** – मोती, मुक्ता।

**मुस्तक** – मेघाख्य, मेघक सब नाम, अम्बुभृत्, श्रीभद्रा, कसेरूक, आदि नाम। ई ान्तिदायक, रूधिरविकार, कफ, पित्त, ज्वर वात, कृमि, अतिसार, रक्तरोग, व्रण, दाह, कण्डू, आम, शूल आदि मे लाभप्रद।

**मोचरस** – पिच्छा, निर्यास, मोचरस।

**मोदपर्पटा** – एक प्रकारक औषधि।

**मोह** – मूर्च्छा, वेशी।

**मंजिष्ठा** – मजीठ।

**यव** – जौ।

**यवनिका** – अजमाइन, यवानी, यवानक, जमाइन। उग्रगन्धा, अग्निर्वीधका, अजमोदिका।

**यवान्नप्राशन** – जौ, (वार्ली) खुआय रोग ठीक करब।

**यवक्षार** – जौ कें कूटपीसि कें पानि मे फूला कए यवक्षार बनैत अछि।

**दूष** – झोर।

**यष्टीमधु** – मूलेठी।

**रजनीरस** – हरैदक रस।

**रास्ना** – द्रव्य विशेष, औषधि विशेष। सुरसा।

**राठ** – मदनफल, पिण्डीतक, मैनफल।

**राजवृक्ष** – अमलतास, आरग्वध।

**रसौन** – लहसून।

**रूज्** – रोग।

**रूक्** – कुष्ठ, कूठ।

**रूचि** – गोरोचन। रूचिर – लवंग।

**रूचक** – महालुंग, ऐरण्ड, मोहरी, चन्दन घर्षण।

**रूचिक** – शोंफ।

**रेचनम्** – नेचन द्रव्य।

**रोचना** – गोरोचन। गोपित्त, वन्ध्या, शोभा, रूचिरा, शोभना, मङ्गला, शिवा, आदि

एकर नाम अछि। ई कान्तिदायक, मंगलजनक, वशीकरण, ग्रहउन्माद, गर्भस्राव, क्षत एवं रक्तदोषनाशक होइत अछि।

**रोहिष** – तृण विशेष।
**रंभाकंद** – केलाक जड़ि।

**लज्जा** – लजविज्जी, लाजवन्ती, लज्जालु।

**लवणपञ्चक** – सैन्धव, वीट, सौचल आदि पाँच प्रकार क नून।

**लाक्षा** – लाह। क्षतध्नी, पित्तारि, कृमिजा आदि लाहक नाम। ई कफ, प्रमेह, सूजन, तथा पाण्डुरोग मे लाभप्रद।

**लवंग** – देवकुसुम, श्रीसंज्ञ, श्रीपुष्प, रूचिर, आदि नाम। ई रूचिकारक, कफ, पित्त, रक्तरोग, तृषा, छर्दि, अध्मान, शूल, श्वास, हिचकी एवं क्षयरोग मे लाभप्रद। लवंगक तैल सेहो होइत अछि।

**लावक** – वटेर।

**लिङ्ग** — लक्षण। पुरूष क अंग विशेष जाहिसँ स्त्री—पुरूषक भेद होइत छैक।

**लोध्र** — वृक्ष विशेष, गालव, शावरक, रोध्र, आदि। ई मलरोधक, नेत्रहितकारी, कफपित्तनाशक तथा अतिसार एवं शोथ मे लाभप्रद।

**लंघनम्** — उपवास।

**वचा** — हैमवती, मेध्या, दीर्घपत्रा आदि नाम।

**वटपल्लव** — वरगदक पात।

**वटमूलत्वक्** — वरगदक जड़िक छाल।

**वदिरम्** — वैर, वदरीफल।

**वमन** — वमन, उल्टी।

**वरतिक्ता** — पाठा।

**वराट** — कौड़ी ।

**वरूण** — औषधि विशेष।

**वर्षाभू** — विषखपरा। रक्तपुनर्नवा। वर्षाऋतु मे ई सर्वत्र जनमैत अछि।

**वरा** — त्रिफला।

**वरूण** — औषधि विशेष।

**बला** — द्रव्य विशेष।

**वलाश** — कफ।

**वव्बूल** — ववूर।

**वह्नि** – भल्लातक, भिलावा।

**वाकुची** – वाकुचीचूर्ण, शशिलेखा, सोमा, कुष्टघ्नी, कृष्णफला। ई कोढ़, कृमि तथा ज्वर मे लाभप्रद।

**वातकोप** – वायुरोग क प्रकोप।

**वातवर्जन** – हवा सॅ वचनाई।

**वात** – वायुरोग।

**वातवहा** – वायु कॅ चलबैवला नाड़ी।

**वांति** – उल्टी, वमन।

**वानरी** – क्रौञ्च, मर्कटी, कपिलच्छु।

**वासा** – वाकस, वासक, आमलक, कंठी रवी। ई खाँसी, वमन, मोह, कोढ़ तथा क्षयरोग मे लाभप्रद।

**विचर्चिका** – चर्मरोग जेना दिनाय आदि।

**विबन्ध** – कब्जियत।

**विद्रुम** – रत्नविशेष।

**विषाण** – हस्तीदन्त।

**विषा** – अतिविषा।

**विषादनी** – पलाशी।

**विभीतक** – बहेरा।

**विरेक** – दस्त भेनाई।

**व्योष** – त्रिकटु।

**विल्व** – बेल। मालूर, गन्धपत्र, पीतफल।

**वृद्धदारू** – वृद्धदारू।

**विश्व** – विश्वा, नागर, शुंठी, महौषध।

**विष** – विष।

**वृकी** – पाठा, वरतिक्ता।

**विडंग** – कृमिनाशक औषधि, वेल्ल, अमोघा, कृमिध्नं, विषनाशक, वातारि, कृमिशत्रु, आदि नाम।

**विशूची** – हैजा, वेशी दस्त भेनाई।

**वृहती** – बड़ी कटैरी।

**व्याघ्रपादी** – विकंकत, बैकल।

**व्याप्य** – कुष्ठ।

**शटी** – कर्चूर। कपूरकचरी।

**शतधौत** – सौ संस्कार क वाद पारद क रूप।

**शताह्वा** – सोया, शतपुष्पा।
**शतपुष्पा** – शोंफ, सोया, शताक्षी, कारवी, शोफका, छत्रा। ई अग्नि प्रदीपक, वात, कफ, व्रण, शूल आदि मे लाभप्रद।

**शतावरी** – शतमूली, वीरा, शतावरी।

**शशिलेखा** – कर्पूर।

**शरपुंखा** – शहरपोंका, सरफोंका, प्लीहारि।

**शंखपुष्पी** – शंखावली, मंगल्यकुसुमा, दण्डोत्पल।

**शिलाजतु** – शिलाजीत।

**शिलोपलम्** – शिलाजीत।

**शिवा** – हर्रे, धात्री, बहेरा, तीनू फलक नाम।

**शिरीष** – मृदुपुष्प, शिरीष, शुकतरू।

**शीत** – नीम, मोथा, तथा ढंढा।

**शुद्धम्** – सैन्धा नमक, विशुद्ध, मरीच।

**शुक्तिकाचूर्ण** – सीपीक चूर्ण।

**शूली** – शूलरोगी।

**सूरण** – ओल।

**जीर्ण** – पचनाई।

**श्रृंङ्गी** – विष, अतिविषा, काकराश्रृङ्गी, वक्रा, कर्कटश्रृङ्गिक। ई हिचकी, श्वास, कफ, क्षय, वमन, ऊर्ध्ववात, अरूचि आदि मे लाभप्रद।

**शोथोदर** – पेट फुलनाई, पेट मे शोथ रोग।

**श्यामा** – कृष्णा, पिप्पली।

**श्वयुथु** – शोथ, शोफ, श्वयुथु ई तीनू फूलल के नाम थिक।

**श्लीपद** – रोग विशेष।

**श्लेष्मनुत्** – श्लेष्मा रोग कें दूर करैत अछि।

**षड्ग्रन्था** – वच।

**सर्प** – सॉप।

**सर्पगन्धा** – ईशरगत, रास्ना, नाकुली, सुरसा, सुवहा, रसा, एलापर्णी, अतिरसा आदि नाम। ई कफ, वात, सूजन, खाँसी, ज्वर तथा विष मे लाभप्रद।

**सरासना चूर्ण** – रासनाक चूर्ण सहित।

**सर्पिस्** – घृत।

**सर्वतोऽर्धम्** – सभक आधा भाग।

**सगुडा** – गुडसहित।

**सगृध्रसी** – डॉरक दर्दक नाम गृध्रसी थिक।

**सन्निपात** – टाइफाइड। आन्तरिक ज्वर।

**सारक** – मक्खन, जयपाल।

**सारग्वध** – अमलतास सहित।

**सारिवा** – अनन्तमूल, गोपी, श्यामा, भद्रवल्ली, आदि नाम। ई अरूचि, त्रिदोष, प्रदर, कफ, अतिसार, दाह तथा बात मे लाभप्रद।

**श्योनाक** – लोध्र, यूहर, सिनुआरि।

**सिता** – मिसरी, चीनी।

**सितोपल** – मिसरी।

**सिन्धूत्थ** – सिन्धुक, सिनुआइर। सैन्धा नमक।

**सुरा** – मद्य।

**सुरदारू** – देवदारू।

**सूर्य** – सोना, सूर्यावर्त, सूर्यफूल।

**सुंठी** – सोंठि।

**सूत** – पारद।

**सेहुंड** – थूहर, एक करैला वृक्ष, स्नुक्, गुड। ई पित्त, कुष्ठ, वात, तथा प्रमेह मे लाभप्रद।

**सोष्णा** – गर्म।

**सौभाग्य** – सोहागा।

**सौभाञ्जन** – सोहिजन, मुनगा।

**सौवीर** – नीम्बू, वैर, वदरीफल।

**सौवर्चल** – नून, काला नमक।

**सौराष्ट्री** – गोपीचन्दन, तुररी।

**स्नायुरोग** – स्नायु सम्बन्धी रोग।

**स्नुक्** – सेहुण्ड।

**स्पन्दन** – गति।

**स्वर्जिका** – सज्जी खार। ई शूल, गुल्म, वात, कफ, कृमि, अध्मान, वायुरोग, उदररोग मे लाभप्रद होइत अछि।

**संयोगाञ्जन** – सम्मिलित अञ्जन।

**संसर्ग** – रोगीक सम्पर्क मे गेला सँ जे रोग पकड़ि लैत छैक जेना कफ, हैजा आदि।

**संश्रित** – मिलल।

**स्फटिका** – स्फटिक।

**हिक्का** – हिचकी।

**हिंगुल** – सिन्दुर, हिंगुल।

**हरीतकी** – हर्रे। अभया, पथ्या, अमृता आदि एकर नाम अछि। ई सात प्रकारक होइत अछि।

**हरिद्रा** – हरैद।

**हवुषा** – हवुष, हपुषा, हाडवेर, अश्वत्थफल, आदि एकर नाम अछि। ई प्लीहा तथा कफ मे बड़ लाभप्रद होइत अछि।

**हेमा** – स्वर्ण, सोना, केसर, सेव।

**ह्रीवेर** – हाडवेर।

**हिम** – चन्दन, कपूर, मोती, कमल।

**(चिकित्साञ्जनक प्रत्येक कठिन शब्द क विवरण एहि शब्द कोष मे दए देल गेल अछि।)**

# सहायक पुस्तक


1. अञ्जन निदान – श्रीवेङ्कटेश्वर यन्त्रालय, बम्बई।

2. कामकौतूहल – हेमाद्रिविरचित खेमराज प्रकाशन, 1939 शकाब्द

3. कैटलोग – स्टीनकृतः जम्मू पुस्तकालय।

4. चरक संहिता – दो भाग, चौखम्बा प्रकाशन, 1962

5. चिकित्साञ्जन. मातृका संख्या. 3333 – श्री रणवीर अनुसन्धान पुस्तकालय, जम्मू। तथा निजी संरक्षण मे सुरक्षित मातृका।

6. निदानचिकित्सा : प्रथमखण्ड. वैद्य शिवचरण ध्यानी भगवतवत्सल प्रकाशन मन्दिर, जयपुर।

7. भावप्रकाश (दो भाग) चौखम्बा प्रकाशन, सं 1952

8. मिथिलाञ्चल – विद्यापति स्मृति समारोह स्मारिका दिल्ली. 1978

9. रसराजसुन्दर – ज्ञानसागर, बम्बई, सं0 1971

10. वाचस्पत्यम् – चौखम्बा प्रकाशन,

11. वैद्य जीवनम् – भिषग्वर्य लोलिम्बराज कविकृत, बनीराम बुक सेलर माइथन, आगरा – 1937 ई0।

12. शब्दकल्पद्रुम –

# चिकित्साञ्जन क अकारादिक्रम सँ श्लोकांश

श्लोक संख्या

# परिचय



| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | डॉ0 उमा रमण झा |
| पिता | : | स्व0 रेवती रमण झा |
| जन्म तिथि | : | 18 जुलाई, 1943 |
| पद | : | पूर्व–प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, "मानित विष्वविद्यालय", लखनऊ। |
| | : | निदेषक, सरस्वती शोध संस्थान, लखनऊ |
| भाषा ज्ञान | : | हिन्दी संस्कृत, बंगाली, मैथिली, तेलुगु, डोगरी **इत्यादि** |
| निबन्ध कविताएं | : | 251 प्रकाषित। |
| ग्रन्थ | : | 16 |
| | | (1) न्यायसारविचारः (2) तर्कप्रवेषः (3) दषपदार्थषास्त्रम् (4) आञ्जनेयचिन्तनम्, (5) लक्ष्मीसरस्वत्योर्विवादः,(6) Philosphical Essays, (7) चारू आश्रम, (8) श्री नेहरूचारूचर्चा, (9) शाक्तदर्षन तथा दषमहाविद्या,(10) विवेक साहस्री, (11) भारतीय संस्कृति की वैज्ञानिकता, (12) श्रीगणेषषतकम्, (13) नृसिंहपाठावली, (14) श्रीमुकुन्दचरितम्, (15) श्रीगुरूचरणषतकम् (16) रामायण सार (17) चिकित्साञ्जनम् |
| अप्रकाषित | : | 21 |
| शोध कार्य | : | 41 शोधच्छात्र इनके मार्गदर्षन में पी0एच0डी0 उपाधि प्राप्त कर चुके है। इनका अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाषित हो चुका है। |
| सम्मान | : | अखिल भारतीय प्राच्य सम्मेलन, वाराणसी के "संस्कृत एवं कम्प्यूटर" विभाग के अध्यक्ष। |
| | : | अखिल भारतीय प्राच्य सम्मेलनं में धर्म तथा दर्षन विभाग के अध्यक्ष। |
| | : | उ0प्र0 संस्कृत संस्थान, लखनऊ से रू0 51,000 का पुरस्कार। |
| | : | उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ से रू0 10,100 का सौहार्द सम्मान। |
| | : | भारत सरकार से राष्ट्रपति सम्मान–2008 ई0 |
| सम्पर्क सूत्र | : | 3, प्रीति विहार, सुरेन्द्र नगर, पोस्ट–चिनहट, लखनऊ–227105 (उ0प्र0) |
| दूरभाष | : | 09335247769, 0522–6566303 |

प्रकाशक–सरस्वती शोध संस्थान
3, प्रीतिविहार,
सुरेन्द्र नगर,
चिनहट, लखनऊ–227105

प्रथम संस्करणम्–2010 ई.


मूल्य : 250.00 मात्र

मुद्रक :
प्राची प्रिण्टर्स एण्ड पैकेजर्स
सी–793, इन्दिरानगर,
लखनऊ–226016